इस विशेष आवरण को संत शिरोमणि दिगम्बराचार्य श्री विद्यासागर जी मुनि महाराज के 50वां संयम स्वर्ण महोत्सव के उपलक्ष्य में श्री दिगम्बर जैन संरक्षिणी सभा जवाहरगंज जबलपुर के माध्यम से दिनांक 17 जुलाई 2018 को मध्यप्रदेश डाक परिमण्डल भारतीय डाक विभाग के परिमण्डल शाखा द्वारा 5/- रूपये में जारी किया गया।

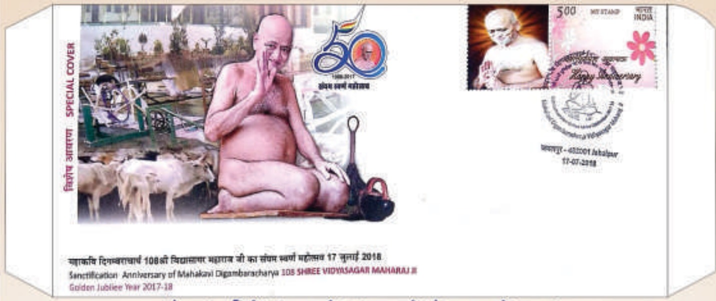

संकलन - मुनिश्री अभयसागरजी, प्रभातसागरजी एवं पूज्यसागरजी महाराज

इस तरह की और भी जानकारी इस लिंक पर देख व पढ़ सकते हैं - knowledge.sanskarsagar.org

दि.	वार	तिथि	नक्षत्र
		अक्टूबर 2021	
16	शनिवार	एकादशी	धनिष्ठा
17	रविवार	द्वादशी	शतभिषा
18	सोमवार	त्रयोदशी	पूर्वाभाद्रपद
19	मंगलवार	चतुर्दशी	उत्तराभाद्रपद
20	बुधवार	पूर्णिमा	रेवती
21	गुरुवार	प्रतिपदा	अश्विनी
22	शुक्रवार	द्वितीया	भरणी
23	शनिवार	तृतीया	कृतिका
24	रविवार	तृतीया	रोहिणी
25	सोमवार	चतुर्थी	मृगशिरा
26	मंगलवार	पंचमी	आर्द्रा दिन/रात
27	बुधवार	षष्ठी	आर्द्रा
28	गुरुवार	सप्तमी	पुनर्वसु
29	शुक्रवार	अष्टमी	पुष्य
30	शनिवार	नवमी	आश्लेषा
31	रविवार	दशमी	पुष्य
		नवम्बर 2021	
1	सोमवार	एकादशी	पूर्वाफाल्गुनी
2	मंगलवार	द्वादशी	उत्तराफाल्गुनी
3	बुधवार	त्रयोदशी/चतुर्दशी	हस्त
4	गुरुवार	अमावस	चित्रा स्वाती
5	शुक्रवार	प्रतिपदा	विशाखा
6	शनिवार	द्वितीया	अनुराधा
7	रविवार	तृतीया	ज्येष्ठा
8	सोमवार	चतुर्थी	मूल
9	मंगलवार	पंचमी/षष्ठी	पूर्वाषाढ
10	बुधवार	सप्तमी	उत्तराषाढ
11	गुरुवार	अष्टमी	श्रवण
12	शुक्रवार	नवमी	धनिष्ठा
13	शनिवार	दशमी	शतभिषा
14	रविवार	एकादशी	पूर्वाभाद्रपद
15	सोमवार	द्वादशी	उत्तराभाद्रपद

तीर्थंकर कल्याणक

21 अक्टूबर : भगवान अनन्तनाथ गर्भ कल्याणक
24 अक्टूबर : भगवान संभवनाथ ज्ञान कल्याणक
03 सितम्बर : भगवान पद्मप्रभ जन्म तप कल्याणक
04 सितम्बर : भगवान महावीर मोक्ष कल्याणक
06 सितम्बर : भगवान पुष्पदन्त ज्ञान कल्याणक
09 सितम्बर : भगवान नेमिनाथ गर्भ कल्याणक

माह के प्रमुख व्रत

16 अक्टूबरः मुक्तावली
20 अक्टूबरः शरद पूर्णिमा
24 अक्टूबरः रोहिणी
02 नवम्बरः मुक्तावली
03 नवम्बरः धनतेरस, मंगल त्रयोदशी
04 नवम्बरः दीपावली भ. महावीर स्वामी निर्वाण प्रातः, गौतम स्वामी केवलज्ञान सांयकाल, चातुर्मास निष्ठापन
07 नवम्बरः मुक्तावली
11 नवम्बरः अष्टान्हिका व्रत प्रारंभ
14 नवम्बरः मुक्तावली

सर्वार्थ सिद्धि

19 अक्टूबर : 06/29 बजे से 12/13 बजे तक ।
21 अक्टूबर : 06/29 बजे से 16/17 बजे तक ।
23 अक्टूबर : 06/53 बजे से 30/31 बजे तक ।
25 अक्टूबर : 06/31 बजे से 28/11 बजे तक ।
28 अक्टूबर : 06/33 बजे से 30/33 बजे तक ।
03 नवम्बर : 06/36 बजे से 09/58 बजे तक ।
05 नवम्बर : 26/23 बजे से 30/58 बजे तक ।
07 नवम्बर : 21/05 बजे से 30/39 बजे तक ।
14 नवम्बर : 16/31 बजे से 30/43 बजे तक ।

शुभ मुहूर्त

दुकान प्रारंभः अक्टू-20,21,25,29 नव.-3,6,10,15
मशीनरी प्रारंभ :अक्टूबर-20,21,28,29 नवम्बर-3
वाहन खरीदनेः अक्टूबर-16,20,21,25 नवम्बर-3,13

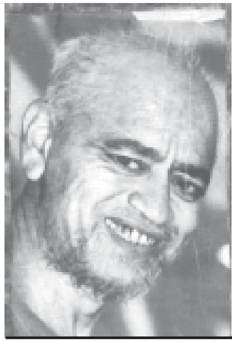

संस्कार सागर

• वर्ष : 23 • अंक : 271 • अक्टूबर 2021
• वीर नि.संवत 2547 • विक्रम सं. 2077 • शक सं. 1942

लेख

• जैन तीर्थ नैनागिरि और आचार्य विद्यासागर 08
• स्वास्थ्य ही पूंजी है 11
• नहिं नहिं, अब मैं जानवर नहीं मारुंगा 15
• आप कैसे बचें ज्यादा सोचने से 19
• मुनि चिन्मय सागर की समाधि स्मृति 32
• प्रवचनः भरके (गड्ढे) मन के कभी न भरें 36
• स्थानांतरण उद्योग-श्वसन संस्थान जैसा होता हैं 37
• अंधेरी दुनिया को बिंदुओं से कम्प्यूटर तक सफर 39
• वरिष्ठ नागरिकः दाम्पत्य जीवन तथा ढलती उम्र 42
• समझे बोरियत को 47
• रावण के नाम और एक चिंतन 48
• आचार्य विद्यासागर जी एवं युवा पीढ़ी 51
• हृदय रोग भागे, जब महिलायें जागे 56
• जैन विद्या संस्कृति प्रश्न मंच 63

बाल कहानी

• इंसानियत का क्या मोल 59

कविता

• लॉकडाउन चल रहा है 20
• माटी के तन से नेह गलाना जरूर है 24
• मुट्ठी की रेत 33
• कोरोना का कैसा रोना 38
• व्यर्थ का सौदा 43
• हिन्दी सबकी प्यारी भाषा 49
• एकान्तवाद मिथ्या है 50

कहानी

• आगम दर्शन 44

नियमित स्तंभ

पाती पाठकों की : 5 • भक्ति तरंग : 6 • संस्कार प्रवाह : 7 • संयम स्वास्थ्य योग : 14
चलो देखें यात्रा : 18 • आगम दर्शन :21 • पुराण प्रेरणा : 23 • माथा पच्ची : 23 • कैरियर गाइड : 24
दुनिया भर की बातें : 25 • इसे भी जानियेः 30 •दिशा बोध : 31 • आओ सीखें : जैन न्याय : 34
वरिष्ठ नागरिक : 42 • हमारे गौरव : 50 • हास्य तरंग-शरीर विकास के कुछ खेल : 58
• बाल संस्कार डेस्क : 59 • संस्कार गीत व बाल कविता : 60 • समाचार : 61

प्रतियोगिताएं : जैन विद्या संस्कृति प्रश्न मंच :63 : वर्ग पहेली : 66

प्रेरणा – परम पूज्य संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज के प्रियाग्र शिष्य

ऐलक श्री सिद्धांतसागरजी महाराज

प्रधान संपादक
ब्र. जिनेश मलैया, इन्दौर–89895 05108

प्रबंध संपादक
ब्र. जयकुमार निशांत टीकमगढ़–94251 41697

कार्यकारी संपादक
ब्र. सुदेश जैन कोठिया इन्दौर–9826548159

सलाहकार संपादक
श्री हुकुमचंद सांवला, इन्दौर–9542505311 1
पं. विनोदकुमार जैन, रजवांस–9575634411
डॉ. मुकेश जैन 'विमल', दिल्ली–9818855130

महिला संपादक
डॉ. ज्योति जैन, खतौली–94128 89449
ब्र. समता जैन मारौरा, इन्दौर–8989845294

अतिथि सम्पादक
डॉ. सुनील जैन 'संचय', ललितपुर–97938 21108
अभिनंदन सांधेलीय, पाटन–9425863244
डॉ. पंकज जैन, भोपाल–9584201103
विनीत जैन प्राचार्य, साढूमल–9721419696
अक्षय अलया, ललितपुर - 9453031432

संयोजना
इंजी. अभिषेक जैन 'रिंकू', इन्दौर–9827282170

प्रकाशक
श्री दिगंबर जैन युवक संघ, इन्दौर (म.प्र.)

❊ आंतरिक सज्जा ❊
आशीष कुशवाह, इन्दौर 9179169060

कृपया, संस्कार सागर मासिक पत्रिका का

बाकी सदस्यता शुल्क

जो पत्रिका के लिफाफे पर चिपकी पते की स्लिप पर छपा है, अविलंब भेजकर सहयोग करें । बकाया राशि में त्रुटि हो तो सुधार हेतु हमें सूचित करें।

सदस्यता शुल्क

-आजीवन	: **2100/-**	(15 वर्ष)
-संरक्षक	: **5001/-**	(सदैव)
-परम सम्मानीय	: **11000/-**	(सदैव)
-परम संरक्षक	: **15001/-**	(सदैव)

अपने शहर के

- स्टेट बैंक ऑफ इंडिया –**संस्कार सागर**
  खाता क्र. 63000704338 (IFSC : SBIN0030463)
- भारतीय स्टेट बैंक –**ब्र. जिनेश मलैया**
  खाता क्र. 30682289751 (IFSC : SBIN0011763)
- आईसीआईसीआय बैंक
  श्री दिगम्बर जैन युवक संघ
  खाता क्र. 00410501357 5 (IFSC : ICIC0000041)

में भी अपने पूर्ण पते सहित राशि जमा कर हमारे कार्यालय को सूचित कर सकतेहैं ।

कार्यालय –संस्कार सागर
श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मंदिर,
सत्यम् गैस के सामने, ए.बी. रोड़, इन्दौर – 10
फोन नं. : 0731–2571851, 4003506
मो. : 89895–05108, 6232967108
website :www.sanskarsagar.org
e-mail : sanskarsagar@yahoo.co.in

- लेखक के विचारों से संपादक मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है ।
- संस्कार सागर में प्रकाशित रचनाएँ बिना आज्ञा, किसी भी प्रकार से उद्धृत नहीं की जाना चाहिए।
- कथा–साहित्य में नाम संस्था काल्पनिक होतेहैं । किसी से समानता मिलना संयोग मात्र है ।
- पत्रिका संबंधी प्रकरण में न्याय क्षेत्र इन्दौर रहेगा ।

•श्री दिगम्बर जैन युवक संघ द्वारा श्री दिगंबर जैन पंच बालयति मंदिर, ए.बी. रोड़, इन्दौर–10 से प्रकाशित एवं मोदी प्रिंटर्स (76, बी–1, पोलोग्राउंड, इन्दौर) द्वारा मुद्रित ।

पाती पाठकों की....

• सम्पादक महोदय, ओलंपिक 2021 में भारत के खिलाड़ीयों ने अपनी प्रतिभा के बल पर एक इतिहास रचा एक स्वर्ण पदक तीन रजत पदक चार कॉसय पदक जीत कर भारत माता का गौरव बड़ाया है हॉकी में भी हमारी टीम ने इतिहास रचा है इससे ऐसा लगता है कि अगर हमारी सरकार खिलाड़ियों को ठीक से प्रोत्साहन दे तो निश्चित तौर पर भारत अपना खेलों में दमखम दिखाने में सफल होगा जितना क्रिकेट के लिये पैसा खर्च किया जाता है उतना अन्य खेलों पर नहीं इसलिये क्रिकेट अपने उत्कर्ष पर पहुँच गया। जाति और योग्यता को लेकर बेईमानी भरी वहस करने का कोई नतीजा नहीं निकलता है अतः बेईमानी भरी वहस खतम करने के सभी खेलों पर समान ध्यान देने से ही आने वाले ओलंपिक में भारत नया इतिहास रचने में सफल होगा।

श्रीमती एकता जैन, गुना

• सम्पादक महोदय, विगत माह मध्यप्रदेश विधानसभा के सचिवालय में 11 सौ 61 शब्दों को गलत बताते हुये उनका एक संग्रह प्रकाशित किया गया था यह केवल उन्हीं वाक्यांशों का संग्रह जिन्हें असंसदीय वाक्यांश माना जाता है परन्तु मानसून सत्र प्रारंभ होते ही भाजपा के रामेश्वर शर्मा ने विधानसभा अध्यक्ष को पत्र लिखा जिसमें कहा की वन्टाधार और नक्सलवाद जैसे शब्दों को विलोकित नहीं किया जाना चाहिये तथा कॉंग्रेस के सज्जन सिंह वर्मा ने भी मामू चूड़ी वाला शब्द को असन्दी बताने को आपत्ति बताई जताई इससे ऐसे लगा की हमारे विधानसभा में बैठने वाले जनप्रतिनिधि अशिष्ट भाषा बोलने के लिये श्रेष्ठ माने जाते है इससे ऐसा लगा की हमारे जन प्रतिनिधि सुधरने का नाम नहीं लेना चाहते हैं इन्हें तो बस जनता की सुधार सकती है जब ये हार कर मुँह की खाते हैं तो अपने आप सुधर जाते हैं।

दीक्षा जैन, इन्दौर

• सम्पादक महोदय, संस्कार सागर के सितम्बर माह के अंत में डॉ. सुनील संचय का लेख पड़ा इस लेख में जिन तत्यों के साथ उन्होंने लेख प्रस्तुत किया हैं सचमुच यह उनकी विद्युता का बहुत बड़ा प्रमाण हैं आपने प्रेरणा दी कि अब संकल्प हिन्दी दिवस मनाने का नहीं अपितु हिन्दी की विशुद्धता वापस लाने का संकल्प लेना होगा। अंग्रेजी भाषा के प्रभाव में आकर हम लोगों ने हिन्दी बोलना और लिखना दोनों ही छोड़ दिया है **हिन्दी हैं हम वतन है हिन्दुस्तान** ऐसे शब्द देश की राज भाषा की शान बढ़ाने में अहम भूमिका निभाते हैं भारत की हिन्दी भाषा को 206 देश धड़ल्ले से बोल रहे है तथा हिन्दी भाषा बोलने वाले 30 करोड़ लोग गर्व के साथ हिन्दी बोलते है लेकिन फिर भी कुछ लोग विदेशी भाषा के गुलाम बने हुये हैं और अशुद्ध भाषा का प्रयोग करते हैं अतः शुद्ध हिन्दी बोलकर के हम भारत माता का मस्तक उन्नत करने में सहयोगी बन सकते हैं।

श्रीमती ज्योति जैन, इन्दौर

• सम्पादक महोदय, विगत माह संस्कार सागर के अन्त में सफेद बाल शीर्षक से कहानी पड़ी कहानी पड़कर ऐसा लगा कि सचमुच में महिलाओं को अपने सफेद बाल देख कर कितनी गहरी वेदना होती है कि सफेद बाल देखकर के कोई अगर अपना होश खो दे तो सत्य यह है कि काले बाल एक दिन तो सफेद होना ही हैं फिर इन बालों पर इतना सोचना कहाँ तक उचित है ? कहानी में पात्रों का चरित्र चित्रण बखूबी स्वाभाविक किया गया है कहानी से यह प्रेरणा ली जा सकती है कि सौन्दर्य ठिकाऊ नहीं होता है बदलते परिवेष में सौन्दर्य पर इतना महत्व देना किसी भी प्रकार से उचित नहीं है लेकिन महिलाओं के कारण सारे सौन्दर्य प्रसाण के मार्केट चल रहे हैं सौन्दर्य प्रशाधन के कारोबारी नारी शक्ति की पूजन करें तो भी कम है । कहानी मर्म स्पर्शी, सरल, सुबोध, भाव पूर्ण लगी ऐसी कहानियों संस्कार सागर की अपनी कहानियाँ है।

रजत जैन, इन्दौर

भक्ति तरंग
राग-धमाल

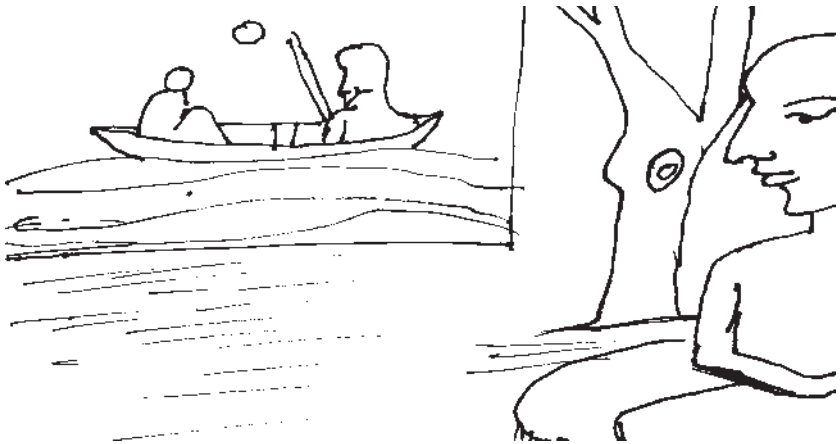

देखे देखे जगत के देव, राग-रिस सौं भरे ।
काहू के संग कामिनि कोऊ, आयुधवान खरे ।। देखे ।।
अपने औगुन आपही हो, प्रकट करें उधरे ।
तऊ अबूझ न बूझहिं देखे, जन मृग भोर परे ।।1।। देखे ।।
आप भिखारी हैं कि नहीं हो, काके दलिद हरे ।
चढ़ि पाथर की नाव पै कोई, सुनिये नाहिं तरे ।।2।। देखे ।।
गुण अनन्त जा देव में और, ठारह दोष टरे ।
भूधर, ता प्रति भावसौं दोऊ, कर निज सीस धरे ।।3।। देखे ।।

मैंने जगत के अनेक देव देखे हैं जो राग-द्वेष सहित हैं, किसी के साथ स्त्री हैं तो कोई शास्त्र धारण किये हुये हैं। उनके दुर्गुण अपने आप ही प्रकट व प्रकाशित हैं, स्पष्ट दिखाई पड़ते हैं, वे अबूझ हैं अर्थात् पूछने योग्य नहीं, ये बातें तो सर्वविदित हैं। मृग-समान भोले प्राणी, भोलेपन के कारण चक्कर में पड़ जाते हैं। पर भोर होते ही, ज्ञान (उजाला) होते ही सब प्रकट हो जाता हैं दिखाई दे जाता है।

जो स्वयं याचक हैं दूसरों से मांगते हैं वे दूसरों के किसी दरिद्र के दुःख को कैसे दूर सकते हैं ? पत्थर की नाव पर बैठकर कोई तैर सका है- यह आज तक नहीं सुना। जिस देव में अनन्त गुण हैं और जो 18 दोष रहित है। भूधरदास उन्हें भावसहित हाथ जोड़कर शिरोनति करते हैं। उन्हें मस्तक पर धारण करते हैं।

संस्कार प्रवाह

साकार करें शरद पूर्णिमा

हिन्दी माह के अन्त में पूर्णिमा अवश्य आती है किन्तु अश्विनी (कुवार) मास की पूर्णिमा शरद ऋतु के माध्य में आती है यह पूर्णिमा महत्वपूर्ण तो तब बनी जब सदलगा के मध्य विद्याधर रूपी चांद का अभ्युदय हुआ एवं टिकैतनगर में कुमारी मैना ने जन्म लिया आचार्य विद्यासागर जी की साधना प्रतिभा और चर्या का कोई तोड़ नहीं है। उन्होंने अपने जीवन में पूर्णिमा अपने तप ओर त्याग के माध्यम से लाई हैं कठोर श्रम करके एक कन्नड़ भाषी ने उत्तर भारतीय भाषाओं को आत्मसात कर लिया और यहां तक कि प्राचीन भारतीय भाषाओं में प्राकृत, पाली, अपभ्रंश और संस्कृत भाषा के अधिकृत विद्वान बन गये अध्यात्म और सिद्धान्त की समालोचना करने में आचार्य विद्यासागर जी बहुत सफल हुये हैं यदि उन्हें महाकवि कहा जायें तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। करूणा की मूर्ति राष्ट्र चिंतन की सजगता और संस्कृति संरक्षण के प्रति सतत् प्रयास करना आपकी सबसे बड़ी विशेषता है। वात्सल्य पूर्ण अनुशासन के महान साधक आचार्य विद्यासागर जी का साहित्यिक-सांस्कृतिक और श्रमण चेतना का अलख जगाने वाले गुरुदेव को भावी शताब्दियाँ याद करेंगी।

शरद पूर्णिमा पूज्य आचार्य श्री के भारत भूति पर प्रगट होने से सचमुच में पूर्णिमा बन गई क्योंकि पूर्णिमा का अर्थ यह होता है कि पूर्ण+मा अर्थात ज्ञान की पूर्णिता होना ही सही मायने में पूर्णिमा है। महाकवि आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज ने अपनी साहित्य सृजन धर्मिता से यह सिद्ध कर दिया कि कोई भी व्यक्ति साधना के पथ पर चलकर दूसरे की अपेक्षा किये बिना सफल हो सकता और निरन्तर मोक्ष मार्ग पर बढ़ सकता है।

आज फिर समाज को शरद पूर्णिमा साकार करने का आह्वान पूज्य आचार्य श्री दे रहे हैं कि आओ हम सब मिलकर अपने जैनों की संख्या को एक करोड़ सिद्ध करने में एकता का परिचय दे नकरात्मक सोच को बाहर निकाल दें चांद तारे ग्रह नक्षत्र सभी से जुदाई की भाषा छोड़कर पंथ जाति से ऊपर उठकर एक मात्र अपना परिचय हम जैन के रूप में प्रस्तुत करें हमारी जाति कुछ भी हो और हमारा पंथ भी कुछ हो लेकिन जनगणना के अवसर पर आने वाले जनगणना अधिकारी हो हम सचेत होकर कहें कि भाई साहब हमारा धर्म जैन है और हम जैनी हैं जब हम एक करोड़ सिद्ध हो जायेंगे तब हम खुशी के साथ शरद पूर्णिमा मनायेंगे और कहेंगे गर्भ के साथ कि हमने शरद पूर्णिमा साकार कर ली है।

आर्यिका ज्ञानमति माता जी और आचार्य विद्यासागर जी का अवतरण ही हमें यह प्रेरणा दे रहा है कि धर्म और संस्कृति के लिये हम एक हो जायें और हम अपने अघरों से गुनगुनायें लगें कि अनेकता में एकता का मंत्र ही जैनी जन अपनाता है जाति पंथ से ऊपर उठकर जिनशासन महिमा गाता है।

जैन तीर्थ नैनागिरि और आचार्य विद्यासागर

❋ सुरेश जैन (आई.ए.एस), भोपाल ❋

पुरातत्वविदों द्वारा घोषित चालीस हजार वर्षों से अधिक प्राचीन नैनागिरि जैन तीर्थ हम सब की आस्थाओं का प्रमुख केन्द्र है। यह तीर्थ भगवान नेमिनाथ के समवशरण में विराजमान रहे आचार्य वरदत्त और उनके साथी चार मुनियों की सिद्धभूमि है। भगवान पार्श्वनाथ की समवसरण भूमि है। प्राचीनतम सिद्धक्षेत्रों में अपना विशिष्ट महत्व रखने वाले नैनागिरि तीर्थ के प्राचीनतम मंदिरों के गर्भगृह से निकलती आध्यात्मिक शुचिता की तरंगे हमारे मानस को पुलकित और प्रफुल्लित कर देती हैं । इन मंदिरों में विराजमान मूर्तियों के प्रक्षालन से उत्पन्न दिव्य ध्वनियाँ श्रद्धालुओं को चमत्कृत कर देती हैं। इन मूर्तियों के दर्शन से उत्पन्न अदभुत धार्मिक उत्साह हमें अभिभूत कर देता है। इस तीर्थ पर विराजमान रहे भगवान पार्श्वनाथ, आचार्यों और मुनिवरों की गतिविधियाँ हमें प्रोत्साहित कर देती हैं। श्रद्धा के मोती बिखेरते हुये भक्ति की किरणों हमें प्रकाशित कर देती हैं। इस तीर्थ पर समय-समय पर आयोजित आचार्यों और मुनिवरों के समागम उत्सव हमारे मन को उल्लसित कर देते हैं।

आचार्य विद्यासागर जी केवल जैन समाज के ही संत नहीं हैं अपितु उनके चिंतन की व्यापकता में पूरे भारत का हित समाहित है। सहस्त्रों वर्ष पूर्व गुजरात से अपने चार मुनियों के साथ पधारे आचार्य वरदत्त की भाँति राजस्थान में आचार्य बनते ही गुरुदेव समयसागर जी और योगसागर जी के साथ वर्ष 1978 में नैनागिरि पधारे। नैनागिरि में बुन्देलखण्ड के स्वर्णिम आध्यात्मिक इतिहास की रचना करते हुये उन्होंने अनेक क्षुल्लकों, ऐलकों, मुनियों, क्षुल्लिकाओं और आर्यिकाओं को दीक्षा दी। आध्यात्मिक जगत में उन्हें पुनर्जन्म दिया। गुरुवर आध्यात्मिक क्रांति के जनक बने। गुरुदेव ने धार्मिक पवित्रीकरण की प्रक्रियाओं के माध्यम से नवदीक्षित साधुओं के तन और मन को पवित्र किया।

भगवान पार्श्वनाथ का यह समवसरण स्थल गुरुदेव के लिये गत शताब्दी के सत्तर/अस्सी के दशक में अनजान और अपरिचित था। अत/: विद्या के सागर भीतर से सतर्क और सजग रहते हुये इस क्षेत्र के कण-कण को ध्यानपूर्वक देखते थे और श्रातोओं को अपने प्रवचनों में नई-नई जानकारियाँ देते थे। सभी यात्री और दर्शन उनकी इस सजगता ओर सतर्कता से सीखते थे। आचार्य वरदत्त और भगवान पार्श्वनाथ की इस तपोभूमि पर आचार्य प्रवर अपने मन, सोच, अनुभव या नजरिये से नहीं अपितु इनसे ऊपर उठकर अपनी चेतना के आधार पर चलते थे। छोटे-छोटे पगों से आगे बढ़ते थे। अपने मन और मस्तिष्क की सीमाओं से परे जाकर श्रोताओं के अहं और भ्रम को तोड़ते थे। असाधारण संतो की भांति वे अपने मन और मस्तिष्क से नहीं अपितु चेतना से मार्गदर्शन प्राप्त करते थे। मन की उथल-पुथल छोड़कर आध्यात्मिकता के दीप प्रज्जवलित करते थे। विन्ध्याचल की शिखर पर बैठकर आत्म चिंतन करते हुये विशुद्ध ऊर्जा प्राप्त करते थे। नैनागिरि पर्वत के कंकर को शंकर बनाकर अपने दर्शको और श्रोताओं को सहजता पूर्वक भेंट

करते थे। जल मंदिर में प्रातः बैठे इस योगशास्त्र के पारदर्शी जीवंत महापुरुष का बाल सूर्य की आभा से स्वर्णपुंज की भाँति प्रकाशित व्यक्तित्व जन-जन को अपनी ओर सहज ही आकर्षित करता था।

गत शताब्दि के सत्तर और अस्सी के दशक में आचार्य श्री के सान्निध्य में नैनागिरि में विशाल समवसरण मंदिर के निर्माण जैसी अनेक बड़ी उपलब्धियों की चर्चा अवश्य कम हुई है किन्तु यह उल्लेखनीय है कि नैनागिरि में उन्होंने युवक और युवतियों को मोक्ष पथ पर आगे बढ़ने के लिये अभिमंत्रित किया। नैनागिरि में बनी/गुंथी विद्यासागर माला के पुष्प आज देश को ही नहीं अपितु पूरे विश्व को अपनी कीर्ति की सुरभि से सुगंधित कर रहे हैं। आध्यात्मिक शिखर पर पहुँचकर पूरे देश में अपने यश की पताका फैला रहे है। सम्पूर्ण देश में प्रभावी ढंग से जैन संस्कृति का प्रचार प्रसार कर रहे हैं।

आचार्य श्री की सफल प्रेरणा और तत्कालीन होशंगाबाद कलेक्टर श्री सुरेश जैन (आई.ए.एस) के संस्थापक-संचालक के रूप में सतत प्रयासों तथा दानदाताओं के आर्थिक सहयोग से जबलपुर में अखिल भारतवर्षीय प्रशासकीय प्रशिक्षण संस्थान की स्थापना की गई। इस संस्थान से प्रशिक्षित 300 से अधिक अधिकारी विभिन्न शासकीय विभागों में अपनी सेवायें प्रदान कर रहे है। यहाँ यह उल्लेख करना उपयुक्त होगा कि इस संस्थान का आकल्पन नैनागिरि में ही हो चुका था जब वर्ष 1978 में आचार्य श्री ने नीम के सबसे ऊँचे वृक्ष के नीचे स्थित चबूतरे पर बैठकर प्रशासनिक और न्यायिक अधिकारियों को अपने सफल आशीर्वाद से अभिषिक्त किया। उनके इसी आशीर्वाद के परिणाम स्वरूप श्री सुरेश जैन (आई.ए.एस) और न्यायमूर्ति विमला जैन जैसे कुछ अधिकारी अपनी अपनी शिखर पर सुशोभित हो सके है।

नैनागिरि की सिद्धशिला पर बैठकर गुरुवर ने जागरुकता पूर्वक पुरानी चेतना को रूपांतरित कर प्रगतिशील नवचेतना का रूपांकन किया और भगवान महावीर की प्राकृत और संस्कृत भाषा में प्रसारित वाणी को हिन्दी में प्रचारित एवं प्रसारित किया। आचार्य पद गृहण करने की तीन वर्ष की अल्प अवधि में ही एक कन्नड़ भाषी बालक हिन्दी, प्राकृत और संस्कृत भाषी आचार्य बन गया।

आचार्य प्रवार ने नैनागिरि पर्वत पर स्थित वनस्पतियों और बहती वायु की उपचारात्मक शक्तियों की पहचान की। बड़े कूप के जल के कीटाणु प्रतिरोधक पवित्र गुणों की पहचान कर इस जल में विद्यमान खनिजों के संतुलित संघटन और घुली हुई प्राण वायु का आसेवन कर अपनी गंभीर बीमारी पर विजय प्राप्त की। पवित्रीकरण की प्रक्रियाओं के माध्यम से जन-जन के शरीर और मन को पवित्र किया।

यह सुखद है कि आचार्य विद्यासागर जी द्वारा प्रदत्त ज्ञानोदय और भाग्योदय के बपन किये गये बीज अब भारत सरकार द्वारा ग्रामोदय और भारत उदय के अभियान के रूप में सिंचित, पल्लवित और पुष्पित किये जा रहे है। आचार्य विद्यासागर के ज्ञानोदय की अनेक झलकियाँ हमें नैनागिरि में निकट से देखने और उनमें सहभागी होने का हमें अदभुत अवसर प्राप्त हुआ। ऋषीन्द्रगिरि (रेशंदीगिरि) में ही उनके अंतर्मन की सजगता ओर जीवंतता का प्रत्यक्ष आनन्द प्राप्त करने का अनुपम सौभाग्य प्राप्त हुआ। उनके समीप्य में रहकर प्रत्येक श्रोता ने अपने व्यक्तित्व के अहंकार की घटती व्यापकता का अनुभव किया।

गुरुदेव अपने मन की धारणा को मन में ही रखकर वास्तविकताओं के साथ-साथ सिद्ध शिला पर बैठकर मूकमाटी की रचना करते थे। हम सबको अपने मधुर कंठ और आल्हादित मुख मण्डल से सुनाते थे। उनकी स्मृतियाँ उनकी चेतना पर हावी नहीं हो पाती थी। वे विचार शून्य चेतना के साथ उठते, बैठते और विचरण करते थे। पूर्ण चेतना और सजगता से अपरिमित शांति का जीवन जीते थे। सिद्ध शिला पर उनके सान्निध्य में बैठकर ऐसे ही आनंद दायक क्षणों का लाभ हम सब प्राप्त करते थे।

आचार्य श्री प्रभाव से बुन्देलखण्ड क्षेत्र में सत्तर और अस्सी के दशक से नियमित रूप से युवा साधुओं की संख्या में हो रही अत्यधिक वृद्धि पूरी समाज को चौकाने वाली है। कुछ युवा साधुओं ने सफलतम उद्यमियों की भांति बड़ी-बड़ी योजनाओं को अल्पत्तम अवधि में ही सफलतापूर्वक कार्यान्वित कर आध्यात्मिक क्षेत्र में वैज्ञानिक परिस्थितियों और आधुनिक पर्यावरण को सुस्थापित किया है। उनकी बहुआयामी सोच ने जैन संस्कृति को विश्वव्यापी सांस्कृतिक स्वरूप प्रदान किया है। उनकी रचनात्मक और सृजनात्मक क्षमता से प्रसूत बड़ी-बड़ी आध्यात्मिक संस्थायें देखकर हमें सुखद आश्चर्य और गौरव होता है। अंतराष्ट्रीय और राष्ट्रीय आध्यात्मिक मंचों पर शालीनता पूर्वक सुशोभित युवा आध्यात्मिक शक्ति के आधार पर हम विश्व की आध्यात्मिक महाशक्ति बनने की दिशा में अग्रसर हो रहे हैं।

गत बीसवी शताब्दी में आचार्य विद्यासागर जी ने मुनि पद पर केवल तीन वर्ष रहकर अपनी 26 वर्ष की युवावस्था में आचार्य पद ग्रहण किया। उनके नेतृत्व में युवा साधुओं ने जैन संस्कृति में नई चेतना और चमक पैदा की है। आध्यात्मिकता के सभी क्षेत्रों में नई पहचान बनाई है। आध्यात्मिक जगत में प्रौढ़ और वृद्ध साधुओं के स्थान पर युवा साधु अपने त्याग और ज्ञान का भरपूर कौशल दिखा रहे है। असंभव को संभव बनाने की सोच ओर सूझ बूझ से ओतप्रोत इन युवा साधुओं की प्रत्युत्पन्नमति और क्षमता ने प्राच्य परंपराओं को आधुनिक किन्तु विवेकपूर्ण स्वरूप प्रदान किया है। आई.टी., बैंकिंग तथा वित्तीय संस्थाओं के कार्यपालिक अध्यक्षों की भांति उनकी नेतृत्व क्षमता युवावस्था में ही तीव्र गति से विकसित हो रही है। गुरुदेव के अप्रत्यक्ष प्रभाव से उनकी ही भांति युवावस्था में ही अनेक आचार्य बन गये हैं। उनकी आध्यात्मिक परिपक्वता में अपरिमित वृद्धि हुई है। युवा आध्यात्मिक शक्ति ने अपना चतुर्मुखी प्रभाव सुप्रतिष्ठित किया है।

अब आध्यात्मिक क्षेत्र में युवा साधुओं में अत्यधिक कार्य करने का जज्बा दिखाई दे रहा है। बिना हारे थके अपनी योजनाओं को कार्यान्वित करने की दृढ़ इच्छा शक्ति और पूरी रूचि सर्वत्र दिखाई दे रही है। इक्कीसवीं सदी में देश के सांस्कृतिक क्षेत्र के उज्वल भविष्य का यह शुभ संकेत है।

आचार्य विद्यासागर जी महावीर के लघु नंदन है। महावीर केवल भगवान ही नहीं अपितु अहिंसा और अनेकांत पर आधारित सांस्कृतिक विचारधारा है। यदि आचार्य श्री और उनके शिष्यों के प्रवचनों से इस विचारधारा के कुछ अंश ही प्रत्येक नागरिक के मन में बैठ जाये तो भारत अवश्य ही विश्व गुरु बन सकेगा और सम्पूर्ण विश्व भारत के समन्वित सांस्कृतिक पथ पर आगे बढ़ने का प्रयास करेगा। महावीर द्वारा प्रदर्शित आध्यात्मिक सजगता, सतर्कता और राष्ट्रीय भावना की त्रिवेणी में स्नान कर सक्षम और पवित्र बनेगा।

स्वास्थ्य ही पूंजी है

❊ प्रस्तुतिः ब्र. समता जैन मारौरा, इंदौर ❊

स्वास्थ्य शब्द बहुत उपयुक्त और सारगर्भित शब्द है इसे अंग्रेजी में Health कहा है। लेकिन स्वास्थ्य का अर्थ वास्तविक रूप से Health नहीं होता, बल्कि ये उसका पर्यायवाची है, क्योंकि जिस प्रकार रोग के लिये अंग्रेजी में Disease प्रयुक्त हुआ है जबकि रोग के लिये Illness शब्द अधिक उपयोगी है, क्योंकि Disease शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है Dis+Ease

जिसका शाब्दिक अर्थ होता है- वे चैन होना, असंतुलित होना, विश्राम रहित और अस्वाभाविक होना है।

इस स्थिति से विपरीत जो स्थिति होती है, यानि जिस स्थिति में चैन हो, बैचेनी न हो, मन और शरीर की स्थिति संतुलित हो, असंतुलित न हो, विश्राम मय हो, विश्राम रहित न हो और स्वाभाविक हो, अस्वाभाविक न हो, उसी स्थिति को स्वास्थ्य कहते हैं।

स्वास्थ्य शब्द स्व+अवस्था से मिलकर बना है जैसे स्वभाव शब्द स्व+भाव से मिलकर बना है। स्वास्थ्य और स्वभाव एक ही अर्थ रखते हैं अर्थात् जैसा हमें होना चाहिये उस भाव यानि दशा में हमारा स्थित होना स्वभाव अथवा स्वास्थ्य कहा जायेगा और वैसा न होना अस्वाभाविक होने से अस्वास्थ्य कहा जायेगा यानि अस्वस्थ्य होना कहा जायेगा।

साम्य अवस्था में होना ही स्वास्थ्य है।

हम जीवन में जो कुछ भी करते हैं, वह शरीर के बल पर करते हैं और आगे भी शरीर स्वस्थ और सबल रख पायेंगे तो ही कर सकेंगे क्योंकि हमारे जीवन की यात्रा हम इस शरीर रूपी वाहन में बैठकर कर सकते हैं। शरीर रूपी वाहन जितना मजबूत और बढ़िया रहेगा उतनी ही हमारी जीवन यात्रा मजेदार और लंबी होगी। जैसे कमजोर और खटारा गाड़ी में यात्रा करना कष्टपूर्ण होता है, वैसे ही कमजोर और रोगी शरीर के कारण हमारी जीवन यात्रा भी नाना प्रकार के दुःखों एवं बाधाओं से भर जाती है ऐसा न हो सके इसी के लिये हमें अपने स्वास्थ्य की रक्षा करना चाहिये। इस शरीर रूपी गाड़ी को खटारा मत बनाइये। जिस प्रकार गाड़ी की सर्विसिंग उसका तेल पानी ठीक रखा जाये तो वह भी सही रहती है। एक कहावत है-

काया राखे धरम, और पूंजी राखे व्यवहार।

अर्थात् यदि शरीर स्वस्थ और सशक्त होगा तो सभी कर्त्तव्यों को पालन किया जा सकेगा और पास में पूँजी होगी तो व्यवहार का पालन किया जा सकेगा। जैसे बिना पूँजी के व्यापार नहीं किया जा सकता है, वैसे ही बिना स्वास्थ्य के हम जीवन का ठीक से निर्वाह नहीं कर सकते हैं।

स्वास्थ्य ऐसी वस्तु नहीं जो हम किसी से उधार माँग लें या बाजार से खरीद लें। बाजार में दवायें तो मिलती है, स्वास्थ्य कहीं नहीं मिलता है।

हमारे मन और शरीर को स्वाभाविक स्थिति में रखना ही स्वास्थ्य होता है, इस लिये हमें

स्वास्य को बनायें रखने के लिये मन, वचन, कर्म से निरंतर रूप से प्रयत्नशील रहना चाहिये। इस प्रकार प्रयत्नशीलता को ही स्वास्थ्य रक्षा करना कहते हैं। स्वास्थ्य रक्षा करके ही हम निरोग रह सकते हैं।

शारीरिक रूप से स्वस्थ्य रहने के लिये मानसिक रूप से स्वास्थ्य रहना बहुत जरूरी होता है। किसी ने कहा है- Sound Mind in a Sound Body.

अर्थात् यदि शरीर स्वस्थ्य हो तो मन भी स्वस्थ रहता है और यदि शरीर अस्वस्थ होगा तो मन भी अस्वस्थ /बैचेन रहेगा/ अथवा यदि मानसिक रूप से अस्वस्थ रहेंगे या आपके मन के बुरे विचार रहेंगे तो आपका आचरण भी बुरा हो जायेगा और जब आचरण बुरा होगा तो आपका स्वास्थ्य भी खराब हो जायेगा।

मन को स्वस्थ रखने के लिये अच्छे एवं प्रकृति के अनुकूल विचारों का होना तथा बुरे विचारों व प्रकृति -विरूद्ध विचारों का न होना अति आवश्यक है।

मन को स्वस्थ रखने के लिये जाने वाले प्रयत्नों को उचित आचार-विचार करना और शरीर को स्वस्थ रखने के लिये उचित आहार - विहार का पालन करना परम आवश्यक है।

नीतिकारों ने लिखा है- संसार में प्रमुख 7 सुख माने गये है। पहला सुख- निरोगी काया, दूसरा सुख- घर में माया अर्थात् पर्याप्त आय होना। तीसरा सुख-मधुर भाषिणी पतिव्रता पत्नी, चौथा सुख-आज्ञाकारी बुद्धिमान पुत्र, पांचवा सुख-अच्छी विद्या का होना, छठा सुख- अच्छा आवास और सातवां सुख- अच्छे लोगों के साथ मिलना। ये सातों सुख शुभ कार्य करने वाले भाग्यशाली को ही उपलब्ध होते हैं, इसलिये परोपकार और शुभकर्म करना चाहिये।

शारीरिक रोगों की तो दवा भी होती है, पर मानसिक रोगों की दवा नहीं होती है अर्थात् मानसिक रोग दूर कर मन शारीरिक रोगों को दूर करने भी अपेक्षा कठिन काम होता है।

शरीर स्वस्थ हो तो मन प्रसन्न रहता है, यदि मन प्रसन्न है तो मन स्वस्थ रहता है। तन, मन प्रसन्न व स्वस्थ हों तो ही जीवन सुखी व समृद्ध होता है, इसके लिये आहार-विहार और श्रेष्ठ आचार-विचार का होना जरूरी है।

आयुर्वेद का कहना है- हितकारी आहार विहार करने वाला विचार पूर्वक काम करने वाला, काम क्रोध आदि मानसिक वेगों में लिप्र न रहने वाला, दान देने वाला उदार-हृदय सबको समान दृष्टि से देखने वाला (पक्षपात रहित), सत्य बोलने वाला, सहनशील और विद्वानों के बतायें निर्देशों का पालन करने वाला व्यक्ति निरोग रहता है।

अंग्रेजी में कहावत है- Prevention is batter than cure अर्थात् इलाज कराने की अपेक्षा बीमार होने से बचना ही अच्छा है।

नीति श्लोक में भी कहा है- **प्रक्षालनाद्धि पंकस्थ दूरास्पर्शनं वरम्।** (हितोपदेश)

अर्थात कीचड़ में पैर डालकर फिर धोने से तो वही अच्छा है कि पैर कीचड़ में डाला ही न जाये।

अतः जो रोग अभी उत्पन्न नहीं हुये हैं वे उत्पन्न ही न हो, क्योंकि बीमार पड़कर फिर इलाज कराकर स्वास्थ लाभ लेने से तो यही अच्छा है कि बीमार ही न पड़े। बीमार पड़ने से बचने का प्रयास करना ही स्वास्थ्य की रक्षा करना है।

चाणक्य नीति में कहा गया है-

यावत्स्वस्थो ध्ययं देहो यावन्मृत्युश्च दूरतः।।

तावदात्म हितं कुर्यान् प्राणान्ते किं करिष्यति।। चाणक्यनीति दर्पण 4-4

अर्थात्- जब तक शरीर स्वस्थ व निरोग है और मृत्यु दूर है, तभी तक अपने कल्याण के उपाध्य करते रहना चाहिये क्यों कि मृत्यु हो जाने पर कुछ नहीं किया जा सकता है।

जब तक शरीर स्वस्थ है, तब तक ही हम स्व-निर्भर और बुढ़ापा से दूर हैं।

यात्सव्स्थमिदं शरीर मरूजं यावज्जरा इलो,

यावच्चेन्द्रिय शक्तिरप्रतिहता यावत्क्षयोनायुषः।

आत्मश्रेयसि तावदेव विदुषा कार्यः प्रयत्नो महान्,

सन्दीप्ते भवने तु कूप खननं प्रत्युद्यमः कीदृशः।। भर्तृहरिवैराग्य शतकै

अर्थात्- जब तक शरीर स्वस्थ और निरोग है, तब तक बुढ़ापा दूर है। जब तक सभी इंद्रियों में भरपूर शक्ति है, जब तक प्राणशक्ति क्षीण नहीं हुई है। तभी तक अपने आत्म कल्याण और उत्थान का प्रयत्न करने रहना बुद्धिमानी है, अन्यथा घर में आग लग जाने पर कुँआ खोदने से क्या लाभ?

जब परिवार के सदस्य स्वस्थ और प्रसन्न रहते हैं, तब परिवार का उचित विकास होता है। जब परिवार स्वस्थ, सुखी और समृद्ध रहते हैं, तब राष्ट्र का उचित विकास होता है। हम स्वस्थ और सुखी होंगे तो हमारा राष्ट्र भी स्वस्थ, सुखी और समृद्धशाली होगा। और परमपिता परमेश्वर से यही प्रार्थना करते हैं कि-

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया।

अर्थात्- इस लोक के सभी जीव सुखी रहें तथा सभी जीव निरोगी रहें। 100 वर्ष की आयु पूर्ण करने पर भी सदा निरोगी बने रहे, यही भावना है।

ओऽम् तच्चक्षुर्देव हितं पुरस्ताच्छुक गुच्चरत्।

पश्येम शरदः शतं जीवेग शरदः शत श्रुणुयाम्,

शरदः शतं भूयश्च शरदः शतात्।। ऋग्वेद

अर्थात- हे जगत् पिता, सर्वव्यापक, सूर्यशक्तिमान, अनादि अनंत प्रभो। आज सब कुछ देखने वाले, विद्वानों और उपासकों का हित करने वाले शुद्ध और पवित्र हैं। आपकी कृपा से हम ऐसे स्वस्थ रहें कि 100 वर्ष तक देख सकें, 100 वर्ष तक जीवित् रह सकें 100 वर्ष तक सुनते रहें, 100 वर्ष तक बोलते रहें, 100 वर्ष तक दीनता रहित रह सकें, और आत्मनिर्भर बने रह सकें, और आपकी कृपा से यदि संभव हो सकें तो 100 वर्ष से अधिक समय तक भी ऐसे ही स्वस्थ बने रहे।

संयम स्वास्थ्य योग

ये आसन लगायें पाचन सुधारें

मत्स्यासनः पद्मासन में कोहनियों को सहारा देते हुये गर्दन को अन्दर की ओर मोड़ लें। सिर का ऊपरी हिस्सा जमीन की ओर स्पर्श करें। कोहनियों जमीन से लगी रहें। दोनों हाथों के पंजों में दोनों पैर के पंजों को पकड़ें। पूर्ण स्थिति में श्वास-प्रश्वास सामान्य रखें।

लाभः इसके अभ्यास से पाचन संबंधी रोग दूर होते हैं। पीठ का रक्त संचार व्यवस्थिति होता है।

पावन मुक्तासनः पीठ के बल लेट जायें दोनों को फैलाकर रखें। दोनों पैर व पंजे पास-पास में रखें। दोनों हाथों को पीछे और रखें। श्वास भरते हुये दाये पैर को धीरे-धीरे ऊपर उठायें। पैर को घुटने से मोड़कर हाथों से इन्टरलॉक 1-2 मिनिट तक करें। घुटने को सीने को पास दबायें रखें। इस प्रकार बायें पैर से अभ्यास करें। इसी प्रकार दोनों पैरों के घुटने को घुटने को हाथों से इन्टरलॉक करते हुये घुटने को सीने के पास लायें। श्वास भरते हुये पैर को ऊपर लायें। पूर्ण स्थिति में श्वास-प्रश्वास को सामान्य रखें। पूर्णर अवस्था में आते समय श्वास छोड़ते हुये आयें।

लाभः इसके नियमित अभ्यास से पाचन संबंधी रोग, लीवर, थायराईड ग्रन्धि, मधुमेह, रीढ़ की कमजोरी, जोड़ों का दर्द, मोटापा व अन्य रोगों में लाभप्रद है।

सेतुबंधासनः पीठ के बल लेट जायें। दोनों पैरों को मोड़कर श्वास भरते हुये कमर से शरीर को ऊपर उठायें, कोहनियाँ जमीन पर टिका दें अपनी क्षमतानुसार रूकें। पूर्ण स्थिति में श्वास-प्रश्वास सामान्य रहें।

लाभः इस आसन को करने से पीठ दर्द, कंधे के दर्द व गर्भपात रोग में लाभ होता है।

विपरीतकरणीः पीठ के बल लेट जाये। दोनों पैरों को धीरे-धीरे ऊपर उठाते हुये सीधा करें। हाथों के सहारे कमर को भी सीधा करें। पूर्ण स्थिति में श्वास-प्रश्वास सामान्य रखें।

लाभः इसके अभ्यास से रक्त संचालन पाचन प्रणाली, जिनेन्द्रिय, स्नायु व ग्रन्धि रोग में लाभ होता है। इसके अतिरिक्त यह आसन दमा, खाँसी, गुर्दा द्वार के रोग हाईड्रोसिल। प्रदर और मधुमेह में लाभप्रद है।

सीमायेंः उच्च रक्तचाप हृदय रोग, यकृत व तिल्ली के बढ़ जाने पर यह अभ्यास वर्जित है।

नहिं नहिं, अब मैं जानवर नही मारुंगा

❊ कपूरचंद्र जैन बसंल, जतारा ❊

रमोला की पत्नि ने जब यह देखा कि दिन काफी चढ़ आया है, और राजू के पापा अभी तक उठे नहीं है। वह उन्हें जगाने, ज्यों ही कमरे में गई तो उसने देखा कि उसका पति आँखें बन्द किये, लेटे-लेटे दोनों हाथ जोड़े कह रहा है **मुझे अब क्षमा कर दो, मुझ पर अब दया करो। अब मैं ऐसा काम नहीं करूँगा।** रंजना इन बातों को सुन कुछ समझ नहीं पायी और अपने पति के शरीर को हिलाती हुई बोली-उठो जी देखों कितना दिन चढ़ आया है। जानवर (माल) लेने नहीं जाओंगे। रंजना के हिलाते हुये जगाने पर रमोला घबड़ाता एवं कांपता हुआ विस्तर पर से उठा और बोला मैं अभी कहा हूँ। अपने घर पर क्यों घबड़ा रहे हो ? क्या बात है ? रंजना ने अपने पति से प्रश्न किया और आगे कहा- देखों कितना दिन चढ़ आया है तैयार हो जाओं। क्या आज माल (जानवर) लेने किसी गाँव में नहीं जाओगे ?

नहीं, नहीं अब मैं माल (जानवर) लेने कभी नहीं जाऊँगा। और न किसी जानवर (भेड़, बकरी) को ही मारूँगा। रमोला ने घबड़ाते एवं हाथ हिलाते हुए कहा। ऐसी क्या बात हो गई ? जिससे अब आप माल (जानवर) लेने नहीं जाओगें, और न ही उन्हें मारोगें। यदि आप अपना पैतृक धन्धा न करोंगें तो बाल बच्चै कैसे पलैंगे। अपना गुजारा कैसे होगा ? रंजना ने अपने प्रति से प्रश्न किया।

रमोला ने समझाते हुए दृढ़ता से कहा-चाहे मुझे भीख मांगना पड़े, कुछ भी करना पड़े, मैं मजदूरी कर सबका पेट पालूंगा, किन्तु अब मैं यह दुष्कृत धन्धा कभी नहीं करूँगा, मेरा यह दृढ़ निश्चय है।

रंजना ने अपने पति की विचार धारा को बदलते देख आश्चर्य से अपने पति से पूछा आखिर ऐसी क्या बात हो गई है जिसके कारण आज आप उल्टी सीधी वहकी-वहकी सी बात कर रहे हो।

रमोला ने बतलाया कि आज मैं ने एक भयानक स्वप्न देखा है-

बीच में बात काटते हुए रंजना ने पूछा **कैसा स्वप्न**? मैं भी तो सुनू रमोला ने कहा- पहले हाथ, मुँह धो लू, फिर मैं अपने स्वप्न की सारी कथा-व्यथा तुम्हें सुनाऊँगा। और विस्तर से उठकर कमरे से बाहर चला गया।

हाथ, मुँह धो तैयार हो, रमोला ने फिर अपनी धर्म पत्नि रंजना को बताया कि स्वप्न मैं आज मैं मर गया हूँ - बीच में बात काटते हुये रंजना उत्तेजित होकर बोली मरे हमारे दुश्मन, आप ऐसी अशुभ बात अपने मुँह से न निकालियें। रमोला ने बताया मैं प्रत्यक्ष नहीं, स्वप्न में मर गया था। तुम घबड़ाओं नहीं। मैं तुम्हारे सामने हूँ, जिन्दा हूँ मरा नहीं हूँ, मैं तो तुम्हें स्वप्न में घटी घटनाओं को सुना रहा हूँ। कहिये ? रंजना ने कहा और वह अपने पति के मुख की ओर उत्सुकता से देखने लगी। रमोला ने स्वप्न की बाते बताते हुये कहा-मेरे मरने पर मेरे जीव को यमदूत ने सामने विराजे धर्मराज से कहा-भगवान मैं रमोला के जीवन को ले आया हूँ। मेरा नाम सुनते ही धर्मराज के

बगल में बैठे एक व्यक्ति ने पास में रखे एक बड़े रजिस्टर के पन्ने उलट कर देखा और धर्मराज से कहा भगवन इस रमोले ने एक दो नहीं, हजारों भेड़, बकरियों को निर्ममला से मारकर उसके मांस को बाजार में बेचा है। ये बहुत बड़ा पापी जीव है ? धर्मराज ने मुझसे पूछा - क्यों रमोले, क्या यह सच है ? मैं क्या जबाब देता केवल हाथ जोड़े अपना सिर हिला दिया। धर्मराज ने फिर कहा- क्या मैंने तुम्हें मृत्यु लोक में इसलिये भेजा था, कि वहाँ जाकर तुम पशुओं पर अत्याचार करों। उन्हें निर्ममला से मारों और उनके मांस को काटकर बाजार में बेचों। मैंने तुम्हें दया, करूणा आदि गुणों से परिपूर्ण कर यहाँ (मृत्युलोक) में भेजा था, और तुमने इन गुणों को त्याग कर वहाँ दुगुणों को अपनाया। ठीक है जाओं और अपने किये गये दुगुर्णों पापों का फल भोगों। रमोला ने आगे बताया - धर्मराज के आदेशानुसार मेरा जीव एक गांव में एक किसान की बकरी के गर्भ में आया। पाँच छः महीने गर्भ के कष्टों को भोगने के बाद मैं एक बकरे के रूप में पैदा हुआ। किसान के परिवार के सभी व्यक्ति मुझे छोटा एवं प्यारा लगने से काफी चाहते थे। उनके बच्चे छोटी-छोटी कोमल पत्तियों मुझे खिलाते। अपनी गोदी में उठाते और अपने साथ सुलाते भी थे। यदि कही मैं गोबर, पेशाब आदि भी कर देता तो वह कुछ नहीं कहते। मैंने सुना कि वह मेरे गोबर को इकट्ठा कर उसे खेतों में खाद के रूप में प्रयोग करते हैं।

धीरे-धीरे मैं लगभग एक -ढेड़ दो वर्ष का युवा हो गया। एक दिन एक डरावना आदमी मेरे मालिका (किसान) के पास आया। कुछ बातचीत की। दोनों ने मेरी तरफ इशारा किया। तत्पश्चात उस व्यक्ति ने कुछ कागज के टुकड़े मेरे मालिन (किसान) के हाथ में दिये, और मालिक ने मेरे गले में एक मजबूत रस्सी बांधकर, रस्सी उस व्यक्ति को पकड़ा दी। वह व्यक्ति रस्सी खींच कर मुझे ले जाने लगा। जब वह व्यक्ति मुझे ले जाने लगा तब मैं काफी चिल्लाया। पीछे मुड़-मुड़कर देखा, किन्तु उन लोगों पर मेरे चिल्लाने का कोई असर नहीं पड़ा। मैने विचार किया जिन लोगों ने बचपन से मुझे अपनी सन्तान की तरह पाला पोशा, आज वहीं इतने कठोर हृदय के हो गये कि मेरे बार-बार चिल्लाने पर भी कुछ नहीं कर रहे हैं। मेरे पैर नहीं चल रहे थे। फिर भी वह व्यक्ति डन्डा मार-मारकर मुझे चला रहा था। मैं उस व्यक्ति के साथ-साथ अनमने मन से चलने लगा। मुझे उस समय याद आ रहा था। मैं उस व्यक्ति के साथ-साथ अनमने मन से चलने लगा। मुझे उस समय याद आ रहा था कि मैं भी इसी प्रकार प्रतिदिन भेड़, बकरियों को डण्डे मार-मारकर एवं रस्सी खींच कर उनहें घर ले आया करता था।

उस व्यक्ति ने मुझे अपने घर लाकर बाहर एक खूटे से बांध दिया और अन्दर चला गया। कुछ समय के बाद मुझे एक बकरे के जोर से चिल्लाने की आवाज सुनाई दी। जिसे सुनते ही मेरे रोंगटे खड़े हो गये। सारा शरीर कांपने लगा और भागने का प्रयास करने लगा। किन्तु मजबूत रस्सी से बंध होने के कारण मैं वहाँ से भाग नहीं पाया। विवश था। किन्तु समय बाद उस बकरे की आवाज मुझे सुनाई नहीं दी। थोड़ी देर बाद वह व्यक्ति मेरे पास आया। मेरे गले की रस्सी खोली और मेरे कान मजबूती से पकड़ कर मुझे जबरजस्ती मकान के अन्दर ले जाने लगा। मैं चिल्लाया, उससे छूटने की भरकस कोशिश करने लगा किन्तु छूट नहीं पाया। मकान के अन्दर मैं ने देखा, वहां एक

शिर कटा बकरा पड़ा था। काफी खून जमीन पर विखरा पड़ा था। यह देख मैं थर-थर कांपने लगा। मैंने फिर से छूटने की कोशिश की किंतु छूट नहीं पाया। मैं विवश था। भय और क्रोध से मेरा खून खोलने लगा। मैं थर-थर कांपने लगा आँखों से आंसू बहने लगे। वहाँ एक व्यक्ति ने मेरे पैर पकड़कर मुझे जमीन पर गिरा दिया और मजबूती से मेरे पैरों को दबा लिया। मैं काफी फड़-फड़ाता रहा। तत्पश्चात एक अन्य व्यक्ति जो वहां था उसने मेरी गर्दन पर छुरी चलाना प्रारंभ किया। मेरी गर्दन से खून के फब्बारे निकलने लगे। मुझे काफी पीड़ा होने लगी। मैंने मन में विचार किया कि जितनी जल्दी हो मेरा काम तमाम कर दिया जाय। ताकि इस कष्ट से मुक्ति हो सकें।

इसी समय मेरे मन में यह विचार आया कि मैं भी इसी प्रकार नित-प्रति अनेकों भेड़, बकरियों को निर्ममला के साथ मारा करता था। जितनी पीड़ा कष्ट जा मुझे हो रही है ऐसी ही पीड़ा दर्द उन भेड़-बकरियों को भी होती होगी, ऐसा आभास आज मुझे हुआ। यदि किसी की पीड़ा या दर्द का अनुभव होने लग जाये तो व्यक्ति निश्चय ही कि को कष्ट देना ही बंद कर देगा, ऐसे विचार उस समय मेरे मन में आये। धीरे-धीरे मेरी आखों के सामने अंधेरा छाने लगा और मेरी चेतना समाप्त होने लगी। अंत में मैं मर गया।

मुझे निर्ममता पूर्व मारने एवं मरते समय मन में पुनः यह विचार आया कि वास्तव मैं जब कोई व्यक्ति दूसरे के प्राणों का हनन करते समय, उसकी पीड़ा का अनुभव करने लगे तो निश्चय ही वह उसे कुकृत्य को करना बंद कर देगा। उसका मन स्वतः बदल जायेगा। किन्तु दूसरों के प्राणों का हनन करने वाला व्यक्ति केवल स्वार्थो को देखा करता है, दूसरे की पीड़ा की और उसका ध्यान नहीं जाता।

मेरे मरने पर जिस प्रकार मैं मरे जानवर की खाल उतारता हूँ, मास के टुकड़े करता हूँ, बाजार में बेचता हूँ। यहि सब काम उस व्यक्ति ने मेरे साथ किया होगा, ऐसा मैं सोचता हूँ।

फिर रंजना से दुःखी मन से अपने पति से पूछते रमोला ने आगे बताया कि स्वप्न में मुझे एक नहीं हजारों बार बकरा बनना पडा और इसी प्रकार मुझे कष्टो को भोगना पड़ा।

साधू, महात्मा एवं पढ़े लिखे लोग कहा करते हैं कि जो जैसा करेगा वह वैसा ही भोगेगा। कर्मों का फल अवश्य मिलता है। इसी बात के अनुसार जितने जानवरों को मैने निर्ममला से मारा, उतरी ही बार मुझे बकरा आदि जानवर बनकर कष्टों को भोगना पड़ा था।

बीच में बात काटते हुये रंजना ने कहा-वह तो स्वप्न की बात है, रमोला ने कहा भले ही मैंने सभी कष्ट स्वप्न में भोगों हो किंतु यह सत्य है कि आज नहीं तो कल मरने के बाद मुझे भी उतने ही कष्टों को भोगना पड़ेगा। जो आज तुम अन्य जानवरों को दे रहे हो और वह भी तुम्हें अकेले। रंजना ने रमोला की घटनाओं को सुनकर एक लम्बी सांस खीचते एवं छोड़ते हुये दुःख के साथ कहा- हाँ आप ठीक कह रहे है सभी को अपने अपने कर्मों का फल आज नहीं तो कल अवश्य ही भोगना पड़ता है। किनतु आप करेगें क्या ? मुझे भी बतलाईये।

रमोला ने कहा अब मैं हाथ ठेला पर फल फूल सब्जी बेचकर अपने परिवार का भरण पोषण करूँगा। यह कहकर वह साइकिल उठा फल फूल सब्जी आदि खरीदने बाजार चला गया।

चलो देखें यात्रा

बीजापुर

यहाँ भगवान पार्श्वनाथ की सातिशय प्रतिमा लगभग 1500 वर्ष पुरानी है। 1008 सर्वफणों से सुशोभित होने के कारण यह प्रतिमा सहस्त्रफणी कहलाती है। हर फण भीतर से जुड़ा होने के कारण अभिषेक का जल या दूध हर फण से उतरते हुये मूर्ति को अभिषिक्त करता है। क्षेत्र पर मन्दिर जीर्णोद्धार के साथ अनेक विकाश योजनायें प्रगति पर हैं। यहाँ कई दर्शनीय स्थल हैं जिनमें गोल गुंबज प्रमुख है। उत्खनन करते समय भगवान महावीर की चतुर्थ काल की एक प्राचीन मनोज्ञ प्रतिमा प्राप्त हुई, जो पद्मासन मुद्रा में है। वार्षिक मेला एवं विशेष आयोजन की तिथी पौष वदी एकादशी श्रावण शुक्ल सप्तमी।

समीपवर्ती क्षेत्र: बाबानगर-28 किमी, बादामी-120 किमी, ऐहोली-130 किमी, पट्टदकल-140 किमी, कुंभोज बाहुबली-150 किमी, गोलगुम्बज हंणी कुंथलगिरि- 200 किमी, श्रवणबेलगोला-600 किमी.।

प्रबन्ध व्यवस्था: संस्था श्री 1008 सहस्त्रफणी पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर ट्रस्ट बीजापुर

अध्यक्ष: परमपूज्य जगतगुरु स्वस्ति श्री चारूकीर्ति भट्टारक महास्वामी जी

मंत्री: श्री डी.वी. नागावी -08352-264045

कार्याध्यक्ष: श्री धन्यकुमार रामचन्द्र, झण्डी- 08359225970, 9448375970

आवागमन के साधन: रेल्वे स्टेशन: बीजापुर 6 किमी.

बस स्टैण्ड: बीजापुर 2 किमी

पहुँचने का मार्ग: रेल अथवा सड़क व्हाया सोलापुर

क्षेत्र पर उपलब्ध सुविधायें- आवार कमरे (अटैच बाथरुम)-20

हॉल-1, **यात्री क्षमता-**100

यात्री ठहरने की कुल क्षमता- 200

भोजनशाला है, विद्यालय- नहीं

औषधालय-नहीं, पुस्तकालय- हैं

टेलिफोन- 08352-272871, 272049

प्रबंधक: निजलिगंधा- 08050461565

आप कैसे बचें ज्यादा सोचने से

✻ ब्र. जिनेश मलैया, इंदौर ✻

हर व्यक्ति की एक आदत हो चुकी है, जरूरत से ज्यादा सोचना छोटी बात को भी बड़ी बात बना कर सोचने के कारण व्यक्ति गुमसुम हो जाता है और अज्ञात भय के घेरे में आकर अपने भोजन और नींद को अस्त व्यस्त कर देता हैं। यहाँ तक कि ज्यादा सोचने के कारण व्यक्ति का स्वास्थ्य बिगड़ जाता है और यहाँ तक कि वह डिपरेशन में चला जाता है। अगर बच्चे कहना ना मानें तो व्यक्ति परेशान होकर कारण ढूंढने लगता है। अगर कोई व्यक्ति उसकी तारीफ कर दे तो वह सोचने लगता है कि यह व्यक्ति मेरे ऊपर व्यंग तो नही कश रहा है या फिर किसी स्वार्थ के कारण मेरी तारीफ तो नहीं कर रहा है। इन सब बातों पर सतत् सोचने वाला व्यक्ति नकारात्मक सोच को सहजता में अपना लेता है। तथा तनाव में घिर जाता है इसी कारण शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य डगमगा जाता है। और अच्छा खासा व्यक्ति बीमार हो जाता है।

कई लोगों को ज्यादा सोचने की आदत बचपन से ही पड़ जाती है और वह छोटी-छोटी बातों को पकड़ कर के बैठ जाते हैं जैसे-किसी बच्चे के हाथ से यदि कांच का गिलास टूट जाता है तो वह सोचने लग जाता है कि आज मुझे मम्मी-पापा डाटेंगे अर्थात् मारेंगे इस आशंका से बालक सहमा-सहमा सा हो जाता है और इस बात से चिंन्तित बना रहता है। ऐसा बालक घर से बाहर निकल कर कही छुप जाता है और इस बात पर उसे डांट पड़ती है या पिटाई हो जाती है तो वह अपने आप को डरा हुआ महसूस करता है। पुरानी घटनाओं के कारण भी व्यक्ति ज्यादा सोचने लगता है जैसे-कोई व्यक्ति रास्ते से गुजर रहा या और उसकी सड़क दुर्घटना हो गई तो व्यक्ति अपने बारे में सोचने लगता है कि मैं जा रहा हूँ कि कोई गाड़ी आकर ऐसा ना हो मुझे टक्कर मार दे फिर मेरे बच्चों का क्या होगा उसके आँखों के सामने पूर्व की घटना उसकी फिल्म की तरह तहरने लगती है और वह निराश हो जाता है। कोरोना में जिनकी मौत हुई वह सिर्फ ऑक्सीजन की कमी के कारण हुई जिन लोगों ने ज्यादा सोचा अपने परिवार के भविष्य के बारे में अपनी बीबी बच्चों के बारे में कारोबार के बारे में ज्यादा सोचने वाले व्यक्ति ही ऑक्सीजन की कमी के सिकार हो गये गये ऐसे व्यक्तियों को डॉक्टर बचा नहीं पाये लेकिन जिनने आज में जीने का मूल मंत्र याद रखा वे कोरोना से जीत गये।

ज्यादा सोचने से बचने के लिये कुछ अमूख उपाय है-

1. दिमाग पर ज्यादा जोर डालने से बचने के लिये अपने शरीर पर अधिक ध्यान देना चाहिये।

2. रचनात्मक बनने वाले व्यक्ति हमेशा ज्यादा सोचने से हमेशा बच जाते हैं एवं वे डीप थिक्किंग से उभर जाते हैं।

3. मिलनसार व्यक्ति सकारात्मक हो जाता है मित्रों और रिश्तेदारों से मिलते रहने के कारण

अत्याधिक चिन्तन और ज्यादा सोचने की आदत से निजात मिल जाती है। आज में जीने वाले कभी परेशा नहीं होते हैं लेकिन जो कल की बातें सोचते रहते हैं वे ओवर थिकिंग में चले जाते हैं। जब आपके मन में अनावश्यक विचार आने लगे तो आप जो बाते खुश करने वाली हों उन पर केन्द्रित हो जावें सिर्फ 30 मिनिट का ध्यान आपको ओवर थिंकिग से बचा लेगा ध्यान का अभ्यास करने से बहुत कुछ अधिक सोचने से विश्रांती मिलेगी। नाक से लम्बी सांस लें और मुँह से छोड़े तथा सीने और पेट से सांस आने जाने के क्रम का अनुभव करें जब आप ज्यादा सोच रहे हों और किसी भी तरह से समस्या का अंत नहीं हो रहा हो तो आप बाहरी लोगों से मदद ले सकते हैं इनमें मित्र की भूमिका बहुत अच्छी होती है।

हर आदमी के लिये ज्यादा सोचना नुकसान दायक ही होता है लेकिन समस्या पर चिंतन करना विकल्पों का चयन करना और समस्या के सही कारण खोजकर अपनी शक्ति का निर्माण करते हुये आप हर जगह सफलता प्राप्त कर सकते हैं और मस्तिष्क पर अनावश्यक बोझ देने से बच सकते हैं।

कविता

लॉकडाउन चल रहा है।

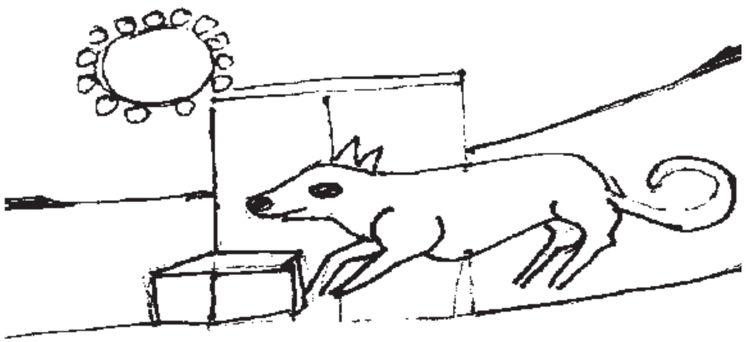

ये गली ये चौबारा ये महलों का दरवाजा
चारों और सुनसान पड़ा है, योगा करता एक कुत्ता खड़ा है
वह पूँछ बैठा मुझसे क्यों आदमी छुपा है
मैंने कहा चुप रह रे, सब जगह कोरोना पसरा है
बोला अब समझा इसलिये शुद्ध हवा और
शुद्ध पानी मिल रहा है, क्योंकि लॉकडाउन चल रहा है
आदमी घर में घुस गया है, जानवरों को घूमने रोड़ खुल गया है
प्रदूषण मुक्त जहान हो गया है।

आगम दर्शन

पंचसंग्रह ग्रन्थ और जैन सिद्धांत

प्रथम प्रकरण जीवनमास है। इसमें गुणस्थान, जीवसमास, पर्याप्ति, प्राण, संज्ञा चौदह मार्गणा और उपयोग इन 20 प्ररूपणाओं द्वारा जीवों की विविध दशाओं का वर्णन किया गया है। मोह और योग के निमित्त से होने वाले जीवों के परिणामों के तारतम्य रूप क्रम विकसित स्थानों भावों को गुणस्थान कहा है। गुणस्थान 14 हैं- मिथ्यात्व, सासादन, सम्यगमिथ्यात्व, अविरत सम्यक्त्व, देशविरत, प्रमत्तविरत, अप्रमत्तविरत, अपूर्वकरण, अनिवृत्तिकरण, सूक्ष्मसाम्पराय, उपशान्तमोह, सयोगकेवली और अयोगकेवली। प्रथम प्रकरण के प्रारम्भ में ही इन गुणस्थानों का स्वरूप विवेचन किया गया है। दूसरे प्ररूपणा जीवसमास है। जिन धर्म विशेषों के द्वारा नाना जीव और नाना प्रकार की उनकी जातियाँ जानी जाती हैं, उन धर्मविशेषों को जीवसमास कहते हैं।

जीवसमास के संक्षेप की अपेक्षा 14 भेद हैं और विस्तार की अपेक्षा 21,30,32,36,38,48,54 और 57 भेद हैं। प्रथम प्रकरण में इन समस्त भेदों का विस्तार पूर्वक विवेचन आया है।

तीसरी पर्याप्ति प्ररूपणा है। प्राणों कारणभूत शक्ति की प्राप्ति को पर्याप्ति कहते हैं। पर्याप्तियाँ छह हैं।

आहारपर्याप्ति, शरीरपर्याप्ति, इन्द्रियपर्याप्ति, श्वासोच्छवास पयाप्ति, भाषा पर्याप्ति और मनः पर्याप्ति एकेन्द्रिय जीव के प्रारम्भ की चार पर्याप्तियाँ, द्वी इन्द्रिय से लेकर पंचेन्द्रिय जीव की छह पर्याप्तियाँ होती हैं।

चौथी प्राणप्ररूपणा है। पर्याप्तियों के कार्यरूप, इन्द्रियादिक के उत्पन्न होने को प्राण कहते हैं। प्राणों के दशभेद हैं - इन्द्रियाँ, मनोबल, वचनबल, कायबल, आयु और श्वासोच्छवास।

एकेन्द्रिय जीव के स्पर्शन इन्द्रिय, कायबल, आयु और श्वासोच्छवास ये चार प्राण होते हैं। द्वीन्द्रिय जीव के रसनेन्द्रिय और वचनबल इन दो प्राणों अधिक होने छह प्राण होते है। त्रिन्द्रिय जीव के घ्राणेन्द्रिय बढ़ने से सात प्राण, चतुरिन्द्रिय जीव के चक्षु इन्द्रिय बढ़ने से आठ प्राण असंज्ञी पंचेन्द्रिय जीव कर्णन्द्रिय बढ़ने से 9 प्राण और संज्ञी पचेन्द्रिय जी के मनोबल बढ़ने से दश प्राण होते हैं। पांचवी संज्ञा प्ररूपणा है। आहारादि की बान्छा को संज्ञा कहते हैं। संज्ञा के चार भेद है- आहार संज्ञा, भयसंज्ञा, मैथुनसंज्ञा, परिग्रह संज्ञा। चारों संज्ञाएँ सभी संसारी जीवों में पायी जाती हैं। जिन अवस्था विशेषों ये जीवों को अन्वेषण किया जाता है। उसे मार्गणा कहते हैं। मार्गणाओं के चौदह भेद है- गति, इन्द्रिय, काय, योग, वेद, कषाय, ज्ञान, संयम, दर्शन, लेश्या, भव्य, सम्यक्त्व, संज्ञी और आहार मार्गणा। प्रथम प्रकरण में इन 14 मार्गणाओं का विस्तार के साथ वर्णन किया गया है।

दूसरा प्रकरण प्रकृति समुत्कीर्तन नाम का है। इसमें कर्मों की मूल प्रकृतियों और उत्तर प्रकृतियों का वर्णन किया गया है। मूल प्रकृतियाँ आठ है- ज्ञानावरण, दर्शनावरण, वेदनीय, मोहनीय, आयु, नाम, गोत्र और अन्तराय।

इनकी उत्तर प्रकृतियाँ क्रमशः पांच, नौ, दो, अट्ठाईस, चार, तिरानवे, दो और पाँच है। सब उत्तर प्रकृतियॉ 148 होती हैं। इनमें से बन्धयोग्य 120 प्रकृतियाँ, उदययोग्य, 122 प्रकृतियाँ उद्वेलन 11 प्रकृतियाँ, ध्रुवबन्धी 47, अध्रुवबन्धी 11, वर्तमान प्रकृतियाँ 62 एवं सत्वयोग्य 148 प्रकृतियाँ हैं। पञ्चसंग्रह के पाँचों प्रकरणों में यह सबसे छोटा प्रकरण है।

समस्या पूर्ति प्रतियोगिता
सितम्बर 2021
मुनिवर आज मेरी कुटिया में आये हैं।

प्रथम-

छोटा सा मेरा आंगन हैं,
लिपी पुती है कुटिया
कलशा लेकर सही रही वो
प्यारी मेरी गुड़िया
देखो मुनिवर आज मेरी,
कुटिया में आये हैं।

श्रीमती अनीता जैन, इन्दौर

द्वितीय-

गुरुवर का आना हमको,
कितना अच्छा लगता है
देकर आहार गुरुवर को मेरा
जियरा चहकता है
सुन्दर प्यारी मनमोहक सी
घड़िया पाये है
पूज्य मुनिवर आज मेरी,
कुटिया में आये हैं

श्रीमती रजनी जैन, राहतगढ़

तृतीय-

सजी धजी भावों की कुटिया
श्रद्धा सुमन बिछाये हैं
गुणधारी मुनिवर आज मेरी
कुटिया में आये हैं

प्रखर जैन, बांसवाड़ा

वर्ग पहेली क्र. 263
सितम्बर 2021 के विजेता

प्रथम : श्रीमती आशा जैन, इंदौर
द्वितीय : कु. कल्पना जैन, सांवरमती
तृतीय : राजवी जैन, दिल्ली

पथरीधन चूर्ण
पथरी की अचूक दवा

सेवन विधि–
1) यह चूर्ण सुबह भोजन के बीच में लिया जायें।
2) पानी दिनभर अधिक मात्रा में लें, पेट खाली न हो।
3) प्रथम खुराक लेनेके बाद, दूसरी खुराक एक दिन छोड़कर ही ली जाये।

नोट– यह औषधि निःशुल्क दी जाती है। ठीक होने पर औषधि निर्माण हेतु सहयोग कर सकते हैं।

प्राप्ति स्थान –**ब्र. जिनेश मलैया,संस्कार सागर**
श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मन्दिर, बॉम्बेहास्पिटल के पास, इन्दौर (म.प्र.)
फोनः 0731-4003506 मो.:8989505108, 6232967108

दवा देने के विभिन्न स्थानों पर केन्द्र है आप भी अपने यहां केन्द्र चाहते हैं तो सम्पर्क करें

पुराण प्रेरणा
यथार्थ जाने क्रोध थामे

निजमगारमगाज्जिनचन्द्रमाः परिवृतः क्षितिपैः क्षपितस्मयः।
हरिरपि स्फुटमात्मनि शङ्कितः क्लिशितधीर्हि जिनेष्वपि शङ्कते ।।

उधर कृष्ण के अहंकार को नष्ट करने वाले जिनेन्द्र रूपी चंद्रमा अनेक राजाओं से परिवृत हो अपने महलों में चले क्योंकि संक्लिष्ट बुद्धि के धारक पुरुष जिनेन्द्र भगवान में शंका करते हैं।

कृष्ण के मन में यह शंका घर कर गयी कि भगवान नेमिनाथ के बल का कोई पार नहीं है अतः इनके रहते हुये हमारा राज्य शासन स्थिर रहेगा या नहीं ?

पदमपीदमपूर्वभिवेक्ष्यते नयनहरिसुरेन्द्रपदोपमम्।
किमिह सत्यमसत्यमिदं तु किं भ्रमति हि स्वपता भुवनं मनः ।।

इन्द्र के स्थान के समान नेत्रों को हरण करने वाला यह स्थान भी तो अपूर्व ही दिखाई पड़ता है। यहाँ दिखाई देने वाला यह सत्य है ? या असत्य है ? ययर्था में सोने वालों को मन संसार में भ्रमण करता रहता है।

रक्ष्यतां रक्ष्यतां साधे चिरं सुपरिरक्षितः।
क्षमामूलस्तपोभारो धक्षते क्रोधवह्निना ।।

उन्होंने कहा कि हे साधो ! आपने चिरकाल से जिसको अत्यधिक रक्षा की है तथा क्षमा ही जिसकी जड़ है ऐसा यह तप का भार क्रोध रूपी अग्नि से जल रहा है। सो इसकी रक्षा की जाये।

माथा पच्ची

निम्न अक्रमबद्ध वर्णों कोक्रमबद्ध बनाकर रिक्त स्थान में एक सार्थक शब्द बनाइए।

1. ई र् श् म् इ उ न् स् र आ अ ग् अ ज् ई अ म् इ न् य् अ
2. ई र् श् म् इ उ न् स् र आ अ ग् अ ज् ई भ अ व् र् ष् अ
3. ई र् श् म् इ उ न् स् र आ अ ग् अ ज् ई अ न् इ अ् म् न् अ न् द् अ
4. ई र् श् म् इ उ न् स् र आ अ ग् अ ज् ई अ प् र् अ व् ओ द्य्
5. ई र् श् म् इ उ न् स् र आ अ ग् अ ज् ई उ स् आ प् श् व् र् अ

परिणाम :

सितम्बर 2021: (1) कुंथु सागर जी महाराज (2) ऐलक सिद्धांत सागर जी महाराज (3) मुनि सुधा सागर जी महाराज (4) मुनि श्री प्रमाणसागर जी महाराज (5) मुनि श्री अजित सागर जी महाराज

केरियर

कैसे बने सैनिक अधिकारी

आर्मी ऑफिसर

- निस्वार्थ भाव से देश की सेवा करना
- नेतृत्व के गुण
- तकनीकी कौशल
- शारीरिक और मानसिक दबाव झेलने की क्षमता
- चुनौतियों को स्वीकार करने की क्षमता
- तुरंत निर्णय लेने की क्षमता

उपर्युक्त क्षमतायें अगर आप में है तो आप आर्मी ऑफिसर बनने के योग्य हैं।

ऑफिसर बनने के फायदे:

अत्याधुनिक सम्मानित और अनुशासिन कैरियर

वेतन के मामले में और सब्सीडी वाले आवास, चिकित्सा लाभ और बच्चों के लिये शिक्षा जैसे अन्य लाभ के लिये उत्कृष्ट हैं ।

वेतन-भत्ते:

एक लेफ्टिनेंट को प्रति माह 25000 रूपये मिलते हैं। जबकि एक माध्यम स्तर के लेफ्टिनेंट कर्नल/ कर्नल को लगभग 70,000/- प्रति माह मिलते हैं।

सेना के अधिकारी भी रियायती आवास, मुफ्त चिकित्सा उपचार, सेना समूह बीमा, कैंटीन स्टोरों में सब्सीडी वाले भोजन

कविता

माटी के तन से नेह गलाना जरूर है

माटी के तन से नेह गलाना जरूर है
मरघट में इसे जलाना जरूर है
मुद्दतों से भटकें हैं मंजिल की जुस्तजू में
मुझको पता नहीं प्रभु कितनी दूर है
शीश महल वालो मेरी भी सुन लीजिये !
वक्त के पत्थर में सब चकन्चूर है
अँधेरों के साये में गुजरी है जिन्दगी
परदेकशी हूँ मगर बेपर्दा नूर है
गम मिलते हैं लगातार जिन्दगी के सफर में
सुख का मगर उन्हें क्यों इतना गरूर हैं

■ 1 अगस्त

- ओलंपिक में बैडमिंटन में पी वी सिंधू ने कास्य पदक जीता।

- जम्मू कश्मीर में सी आई डी विंग ने आदेश जारी किया कि आतंकियों के मददगारों को पासपोर्ट सरकारी नौकरी नहीं मिलेंगी।

- संयुक्त राष्ट्र संघ की सुरक्षा परिषद की अध्यक्षता भारत के पास 1 माह तक रहेगी।

■ 2 अगस्त

- भारतीय महिला हॉकी टीम ने 60 मिनट में प्रदर्शन टोंकियों ओलम्पिक में सेमीफाइनल में स्थान बनाया।

- प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने डिजिटल वाउचर ई रूपी लाँच किया।

- दुर्लभ बीमारी एम एम ए की शिकार वेदिका की जान 16 करोड़ का इंजेक्शन नहीं बचा सका।

■ 3 अगस्त

- काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने एक ऐसी जैली बनाई जो उमस खत्म कर दीवारों से ऑक्सीजन पैदा करेगी।

- पठानकोटः सेना का ध्रुव हेलीकॉप्टर दुर्घटना ग्रस्त हो रणजीत सागर बाँध के पास गिरा दोनों पायलट की तलाश जारी।

- ग्वालियर रतलाम इंदौर इंटरसिटी ट्रेन 15 घंटे पानी में फंसी रही।

■ 4 अगस्त

- भारतीय महिला हॉकी टीम अर्जेन्टीना से सेमीफाइनल में हारी।

- भारत ने पहले स्वदेशी विमान वाहक का परीक्षण शुरु हुआ।

- बाढ़ से म.प्र. में जख्म गहरे हुये 4 पुल ढहे 1225 गाँव में तबाही मची 10000 लोगों को बचाया गया।

- डोंगरी भाषा की पहली कवियत्री पद्मा सचदेवा का निधन हुआ आपको 2001 में पद्मश्री सम्मान मिला।

■ 5 अगस्त

- भारतीय हॉकी टीम ने ओलंपिक में जर्मनी को 5-4 से हाराकर ब्रेंज पदक जीता।

- अफगान सेना ने 24 घंटे में तालीबान के 303 आतंकी ढेर किये। 123 घायल हुये।

- पार्क के पंजाब प्रांत के रहीमयार खान में भण्य गणेश मंदिर को उन्मादी भीड़ ने तोड़ा सभी मूर्तियाँ तोड़ डाली मंदिर को

आग हवाले किया भारत ने हिन्दू मंदिर तोड़ने का विरोध किया।

■ **6 अगस्त**

- राजीव गांधी खेल रत्न पुरस्कार नाम अब मेजर ध्यानचंद के नाम पर रखा गया।

- महिला हॉकी टीम ब्रिटेन से 3-4 से हारी।

- उदयपुरियाः चीमू तहसील (राज.) के छात्र राकेश नागर की कान में लगा एयर फोन फटने से मौत हुई।

■ **7 अगस्त**

- नीरज चौपड़ा ने 87-58 मीटर भाला फेंककर एथलेटिक्स में स्वर्ण पदक जीता।

- म.प्र. के पूर्वमंत्री बाबूलाल जैन का निधन हुआ। वे 88 वर्ष के थे।

- अशोकनगरः जिला के नेशनल हाईवे बाढ़ से बहा गुना के 187 लोगों एयर लिफ्ट किया गया।

■ **8 अगस्त**

- राष्ट्रीय जाँच एजेन्सी ने जम्मू-कश्मीर में 56 जगह छापे मारे।

- टोक्यो में 77 दिन चला खेल कुम्भ ओलंपिक का शानदार समापन हुआ।

-बाढ़ बचाव में लापरवाही बर्तने पर कलेक्टर और एस पी श्योपुर से हटाये गये।

■ **9 अगस्त**

- संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद की अध्यक्षता प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने की आसंदी से आतंकी समुद्र मार्ग का उपयोग कर रहे है।

- 127वां संविधान संशोधन लोकसभा में पेश हुआ जिसके अनुसार राज्य ओ बी सी सूची बना सकेंगे।

- टोकियों से भारत लौटे ओलंपिक खिलाड़ी नीरज चौपड़ा और बजरंग पूनिया का दिल्ली इंदिरा गांधी हवाई अड्डे पर जोरदार स्वागत हुआ।

■ **10 अगस्त**

- सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि आपराधिक छवि वाले नेताओं को कानून बनाने की अनुमति नहीं दी जानी चाहिये।

- गुलबर्गः सेना के जवानों ने 100 फीट ऊँचा तिरंगा फहराया।

- बसपा छोड़ भाजपा में आये दबंग पूर्व विधायक जितेन्द्र सिंह बबलू को 6 दिन में पार्टी से बाहर निकाला।

■ **11 अगस्त**

- मिलावटी शराब बेचने पर फांसी की सजा का विधेयक म.प्र. विधानसभा में पारित हुआ।

- किन्नौर (हिमाचल प्रदेश): जिले के निगुलसरी में पहाड़ टूटने से 10 लोगों की मौत हुई। 13 लोग घायल हुये।

- 1500 किमी. रेंजवाली निर्भय क्रूज मिसाइल सफल परीक्षण बालेश्वर।

■ **12 अगस्त**

- इसरो कक्षा में उपग्रह स्थापित करने में असफल रहा 10 हजार से अधिक आई डी कार्ड फर्जी बनाने वाला विपुल सैना को गिरफ्तार किया।

-इटली में 50 साल का गर्मी का रिकार्ड टूटा 49 डिग्री तक तापमान पहुँचा।

■ **13 अगस्त**

- श्रीनगरः जसवीर सिंह भाजपा मंडल अध्यक्ष के घर आतंकियों ने ग्रेनेड फेंका 3 वर्षीय वीर की मौत हुई। कुलगाम ने सुरक्षा बल ने 9 आतंकी को ढेर किया।

- भारत ने तालीबान से दो टूक कहा अफगानिस्तान ताकत के बल पर बनी सरकार को मान्यता नहीं देंगे।

आगराः 200 लोगों की हत्या का आरोपित छैमार गैंग का सरगना फाती उर्फ कदीम को गिरफ्तार किया गया।

■ **14 अगस्त**

- कैरेबियाई देश हैती में 10 साल बाद भूकम्प आया 29 लोगों की मौत हुई।

- प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस के रूप में 14 अगस्त घोषित किया।

- ग्वालियरः तिरंगाफहराते समय क्रेन का जैक टूटा तीन निगमकर्मी की मौत हुई।

■ **15 अगस्त**

- तालिबान ने काबुल पर कब्जा किया। कॉलेज बंद हुये। बुर्के की दुकानें खुली रहीं।

-अमृतसरः पंजाब पुलिस ने दो आतंकी गिरफ्तार किये उनसे हथियार बरामद हुये।

- बड़ागाँव (बागपत) उ.प्र. में त्रिलोक तीर्थ धाम पर जैन श्रद्धालुओं की बस पर पथराव किया। वार्तालाप करने का प्रयास मुस्लिम युवकों ने किया।

■ **16 अगस्त**

- काबुलः अफगानिस्तान के राष्ट्रपति अशरफ गनी ने देश छोड़ा।

- बहुमत खोने के बाद मलेशिया के प्रधानमंत्री मोउद्दीन यासिन ने इस्तीफा दिया।

- चीन ने तालीबानी सरकार बनने की कामना जाहिर की।

■ **17 अगस्त**

- लाहौरः तीसरी बार किले में लगी रणजीत सिंह की प्रतिमा कट्टर पंथियों ने तोड़कर फेंक दी।

- भारत ने काबुल स्थित दूतावास खाली किया। वायुसेना के विमान से 120 लोग हिंडन एयरपोर्ट पहुँचे।

- श्रीनगरः दक्षिण कश्मीर के कुलग्राम में अज्ञात हमलावारों ने भाजपा नेता जावेद की हत्या गोली मारकर की।

■ **18 अगस्त**

- जलालाबादः अफगान का झंडा फहराने पर तालीवान भीड़ पर फायरिंग की जिससे 3 लोगों की मौत हुई कई घायल हुये।

- सुप्रीम कोर्ट ने राष्ट्रीय रक्षा अकादमी की प्रवेश परीक्षा की अनुमति महिलाओं को दी।

- पत्नी सुनंदा मौत के मामले काँग्रेस नेता शशि थिरूर बरी हुये।

■ **19 अगस्त**

- तालिबान के खिलाफ सशस्त्र विरोध प्रदर्शन हुआ।

- पश्चिमी बंगाल में हुई चुनाव के बाद की हिंसा की जांच करने का आदेश हाईकोर्ट ने सी बी आई को दिया।

-अश्लील हरकत करने वाले आइ एफ एस अफसर मोहनलाल मीणा को संस्पेंड किया गया।

20 अगस्त

- श्रीनगरः हिजबुल के दो आतंकी सुरक्षा बल की मुठभेड़ में ढेर हुये।

- राहुल गांधी की पोस्ट फेसबुक ने हटाई।

- महाराष्ट्र के बुलढाणा में डम्फर के नीचे दबने से महेश्वर के 8 और धार के 3 लोगों की कुल 13 मजदूरों की मौत हुई।

21 अगस्त

- उ.प्र. के पूर्व मुख्यमंत्री कल्याण सिंह का निधन हुआ वे 89 वर्ष के थे।

- सुप्रीम कोर्ट ने अपने अहं फैसले में कहा कि निजी स्कूलों को पाई पाई का हिसाफ देना होगा।

- 72 हिन्दू सिक्खों को अफगानी बताकर तालीबान ने रोका 85 भारतीय सेना के विमान से तजाकिस्तान पहुँचे।

22 अगस्त

- गणेशन मणिपुर के नये राज्यपाल नियुक्त हुये।

- काबुलः एयरपोर्ट पर तालीबानी फायरिंग से भगदड़ मची 7 लोगों की मौत हुई।

- पाकिस्तान सरकार ने सिख श्रद्धालुओं को तीर्थ यात्रा की अनुमति दी।

23 अगस्त

- इंदौरः चूड़ीवाले मॉब लिंचिंग का वीडियो आने के बाद तसलीम अली के दो आधार कार्ड मिले। इंदौर पी एफ आई एंट्री हुई।

- गुरुग्रंथ साहिब लेकर अफगान से यात्री भारत लौटे 146 भारतीय नई दिल्ली पहुँचे।

- श्रीनगरः पुलिस ने लश्कर के 2 आतंकी को मार गिराया।

24 अगस्त

- काबुलः अफगान के पंजशीर में अहमद मसूद लड़ाकों 50 तालीबनी को ढेर किया तथा 20 को बंधक बनाया।

- अफगान संकट पर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और रूस राष्ट्रपति बलादि पुतिन से 45 चर्चा हुई।

-केन्द्रीय मंत्री नारायण राणे को महाराष्ट्र पुलिस ने गिरफ्तार किया और देर उन्हें जमानत मिली।

25 अगस्त

- सुप्रीम कोर्ट ने जांच एजेन्सी सीबीआई और ईडी से पूर्व विधायक सासंद वर्तमान दोगी जनप्रतिनिधियों की ट्रायल में देरी का कारण पूँछा।

- वायुसेना प्रमुख आर के एस भदौरिया ने तैजस पर उड़ान भरी।

- अफगान के पूर्व संचार मंत्री सैयद अहमद शाह सआदत साइकिल पर जर्मन पर पिज्जा डिलेवरी करते नजर आये।

26 अगस्त

- काबुल एयरपोर्ट के बाहर दो बम धमाके हुये 13 लोगों की मौत 60 लोग घायल हुये।

- दिल्ली युनिवर्सिटी में अंग्रेजी पाठ्यक्रम से महाश्वेतादेवी की लघुकथा द्रौपदी हटाया।

-मध्यप्रदेश में सुरक्षा चक्र अभियान के अंतर्गत 42 लाख वैक्सीन टीके लगे।

27 अगस्त

- रायपुरः छत्तीसगढ़ के मुख्य मंत्री भूपेश बघेल ही मुख्यमंत्री बने रहें गे यह फैसला कॉंग्रेस नेतृत्व ने दिया।

- पूर्व आई.पी.एस/ आई जी अमिताभ ठाकुर दुष्कर्म आरोपी सांसद का साथ देने के मामले उ.प्र. पुलिस ने गिरफ्तार किया।

- जाखन नदी पर देहरादून को ऋषिकेश से जोड़ने वाला पुल बाढ़ से अचानक गिर गया। कई वाहन नदी में समाये दिल्ली के दो पर्यटकों की मौत हुई।

28 अगस्त

- अमेरिका ने काबुल एयरपोर्ट धमाके 48 घंटे पर आइ.एस. के ठिकाने पर बम गिराये साजिशकर्ता आतंकी ढेर किये।

- पैरालिंपिक में टेबिल टेनिस स्पर्धा भाविना पटेल फायनल में पहुँचने वाली पहली भारतीय बनी।

- हॉकी टीम के ओलंपिक विजेता विवेक सागर को विक्रम सम्मान दिया गया।

29 अगस्त

- एन.सी.बी ने ड्रग्स मामले में अभिनेता अरमान कोहली को गिरफ्तार किया।

- ई.डी ने महाराष्ट्र के पूर्व संसदीय कार्य मंत्री अनिल परब को भी तलब किया।

- काबुलः विस्फोटक भरे आई.एस के वाहन पर अमेरिका ने ड्रोन हमला किया।

30 अगस्त

- भिलाईः सूनसान में कार जलने से व्यवसायी राजा जैन की जिंदा जलकर मौत हुई।

-अमेरिका ने काबुल एयरपोर्ट पर आई एस के रॉकेट हमले को नाकाम किया।

- पैरालंपिक में सुमित अंतिल ने भाला फेंक में स्वर्ण पदक जीता।

31 अगस्त

- सुप्रीम कोर्ट के 9 जजों ने न्यायाधीश पद की शपथ ली इनमें 3 महिलायें भी है। तथा सुप्रीम कोर्ट ने अवैध निर्माण के खिलाफ फैसला दिया सुपर टेक लि. के 40 मंजिल ट्विनटॉवर गिराने का आदेश दिया।

-उज्जैनः नागौर के पास जीप ट्राला की टक्कर में 12 श्रद्धालुओं की मौत हुई। सभी रामदेवरा दर्शनार्थ गये।

- भारी वारिश भूस्खलन और बादल फटने से उत्तराखंड में 288 सड़कें बंद है। चार धाम यात्रा रूकी।

इसे भी जानिये

भारत के प्रमुख झरने

1. **दूध सागर, गोवाः** दूध सागर भारत का एकमात्र झरना है, जो दो राज्यों की सीमा पर स्थित है, गोवा-कर्नाटक बॉर्डर से मंडोवी नदी गुजराती है, जिस पर दूधसागर झरना स्थित है। पणजी से इसकी दूरी लगभग 60 किमी है। यहां मानसून के दौरान पर्यटकों का हुजूम उमड़ता है। दूधसागर झरने को मिल्क ऑफ सी भी कहा जाता है।

2. **अथिराप्पिल्ली वॉटरफॉल, केरलः** केरल पहले से ही भगवान की धरती कहे जाने वाला केरल अपने मानसून, समुद्री किनारा, प्रकृति और वाटरफॉल्स के लिये भी मशहूर है। यहाँ कई खूबसूरत ओर शानदार वॉटरफॉल हैं, जो किसी का भी मन मोह सकते हैं। उनसे से अथिराप्पिल्ली सबसे खूबसूरत वॉटरफॉल हैं। यहाँ पर 80 फीट ऊँचाई से पानी गिरता है।

3. **चित्रकूट वॉटरफॉल, छत्तीसगढ़ः** छत्तीसगढ़ में स्थित चित्रकूट वाटरफॉल देश का सबसे बड़ा और मनमोह लेने वाले जल प्रताप में से एक है। यह वॉटरफॉल छत्तीसगढ़ में नियाग्रा नदी इंद्रावती में जगदलपुर के पास गिरता है। यह खूबसूरत वॉटरफॉल 29 मीटर की ऊँचाई पर स्थित है, जबकि इसकी चौड़ाई मौसम के अनुरूप बदलती रहती है।

4. **कोर्तल्लम वॉटरफॉल, तमिलनाडुः** कोर्तल्लम को दक्षिण भारत का स्पा भी कहा जाता है। यह तमिलनाडु के तिरुलेनवेली जिले में शहर के पश्चिमोत्तर घाट पर स्थित है। यह जगह भी अपने अनेकों वॉटरफाल्स की वजह से प्रसिद्ध है।

5. **धुआँधार वॉटरफॉल, मध्यप्रदेश** : यह वॉटरफाल मध्यप्रदेश के जबलपुर जिले में स्थित है। संगमरमर की चट्टानों की कण्ठ से होते हुये गिरने वाला यह जल प्रताप पवित्र नदी नर्मदा से बना है। यह विश्व प्रसिद्ध संगमरमर की चट्टानों में सबसे लोकप्रिय भारतीय पर्यटन स्थल में से एक है।

6. **जोग वॉटरफॉल, कर्नाटकः** जोग प्रताप महाराष्ट्र और कर्नाटक की सीमा पर शरावती नदी पर स्थित है। इसका जल 250 मीटर की ऊंचा ई से गिरकर बड़ा सुंदर दृश्य उपस्थित करता है, इसका एक अन्य नाम जेरसप्पा भी है। इस वॉटरफॉल (जल प्रताप) की ऊँचाई 830 फीट है जो भारत का दूसरा सबसे ऊँचा वॉटरफॉल है। इस फाल को यूनेस्को की ओर से दुनिया के सबसे अच्छे पर्यावरणीय स्थलों में से एक घोषित किया गया है।

7. **खंडधार वॉटरफॉल, उड़ीसाः** उड़ीसा राज्य का सबसे बड़ा झरना सुंदरगढ़ जिले में हरे भरे जंगल के बीच स्थित है। घोड़े की पूंछ के आकार का ये वॉटरफॉल 801 फीट की कुल ऊंचाई के साथ भारत के 12वें स्थान पर स्थित हैं।

दिशा बोध

परोपकार

1. महान् पुरुष जो उपकार करते हैं,, उसका बदला नहीं चाहते। भला संसार जल बरसाने वाले बादलों का बदला किस भाँति चुका सकता हैं?
2. योग्य पुरुष अपने हाथों से परिश्रम करके जो धन जमा करते हैं, वह सब जीवमात्र के उपकार के लिए ही होता है।
3. हार्दिक उपकार से बढ़कर न तो कोई चीज इस भूतल से मिल सकती है और न ही स्वर्ग में।
4. जिसे उचित-अनुचित का विचार है, वही वास्तव में जीवित है और जिसे योग्य-अयोग्य का ज्ञान नहीं हुआ, उसकी गणना मृतकों में की जायेगी।
5. लबाबल भरे तालाब को देखो। जो मनुष्य सृष्टि से प्रेम करता है, उसकी सम्पत्ति उसी तालाब के समान है।
6. सहृदय व्यक्ति का वैभव गाँव के बीचों बीच उगे हुए और फलों से लदे हुए वृक्ष के समान है।
7. परोपकारी के हाथ का धन उस वृक्ष के समान है, जो औषधियों का सामान देता है।
8. देखो, जिन लोगों को उचित और योग्य बातों का ज्ञान है, वे बुरे दिन आने पर भी दूसरों का उपकार करने से नहीं चूकते।
9. परोपकारी पुरुष उसी समय अपने को गरीब समझता है, जबकि वह सहायता माँगने वालों की इच्छा पूर्ण करने में असमर्थ होता है।
10. यदि परोपकार करने के फलस्वरूप सर्वनाश उपस्थित हो, तो भी दासत्व में फँसनेके लिए आत्म-विक्रय करके भी उसका (परोपकार का) सम्पादन करना उचित है।

मुनि चिन्मय सागर की समाधि स्मृति

* डॉ. सुनील जैन संचय, ललितपुर *

श्रमण परम्परा अत्यन्त प्राचीन, उन्नत और गरिमामय है। जीवन में संत का एक महत्वपूर्ण स्थान होता है। वे हमारे जीवन का निर्माण करने में अहम भूमिका निभाते हैं। उनके उपदेश से हमें नई दिशा मिलती है, हमारी जिंदगी संवर जाती है। ऐसे ही संत थे परम पूज्य मुनि श्री चिन्मयसागर जी महाराज, जिन्होंने सामाजिक बुराईयों को रोकने, युवा पीढ़ी को व्यसन मुक्त जीवन जीने के लिये सतत् प्रेरणा देकर जागरुक किया।

संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर जी महामुनिराज द्वारा दीक्षित परम पूज्य मुनि श्री चिन्मयसागर जी की संल्लेखना समाधि पिछले वर्ष 18 अक्टूबर 2019 को 06.18 मिनिट पर कर्नाटक में हो गयी थी।

जंगल वाले बाबा के नाम से प्रसिद्ध जंगल में चातुर्मास करके जंगल में भी मंगल कर देने वाले संत थे मुनि श्री।

जीयो और जीने दो को जिन्होंने जीवन में उतार लिया है वे ही जंगल की साधना कर सकते हैं। लगता है जिस तरह भगवान महावीर जियो और जीने दो की साधना के लिये साधक बनकर जंगल में गये थे उसी तरह मुनि श्री भी भगवान महावीर का अनुकरण-अनुसरण करते हुये जंगल की साधना कर रहे थे।

आप अस्वस्थ होकर भी साधना निरंतर करते रहे, सबे संघर्ष, उत्कर्ष और साधना में सहयोग देना ही आपका जीवन बन गया था। आपका एक फेफड़ा समाप्त हो जाने पर भी आपका स्वस्थ्य एवं शरीर इतना क्षीण हो जाना कि सोने उठने पर भी तकलीफ होना। ऐसे समय भी हजारों किमी. का विहार करना, आदेश का पालन करना और अपने मुनि व्रत में कोई दोष न आने देना अपने आप में बहुत बड़ा उदाहरण है। यह सब देखकर विश्वास हो गया कि साधना के लिये शारीरिक शक्ति ही नहीं बल्कि अपने अंदर की शक्ति की भी आवश्यकता होती है।

आप दृढ़ इच्छा शक्ति के धारी संत थे। संसार में आपके लिये कुछ भी असाध्य एवं असंभव नहीं था। आप बहुत कम समय में बड़े-बड़े काम करने के लिये क्षमता रखते थे। दृढ़ संकल्पी मुनि श्री कठिन से कठिन कार्य का यदि संकल्प ले लेते थे तो उनका मनोबल मेरु के सामान ऊँचा हो जाता था और वह कार्य सहज और सरल दिखाई देने लगता था। आपने 24 दिन के अन्दर 3 पंचकल्याणक और गजरथ महोत्सव करवाकर इतिहास बना दिया था।

पूज्य मुनि श्री की प्रेरणा से हजारों लाखों लोगों ने शाकाहार को अपनाया, जुआ, मांस, मंदिरा का त्याग किया। जिससे उनके जीवन को एक नई दिशा मिली। न केवल जैन समुदाय बल्कि हजारों जैनेतर बंधु उनके भक्त थे। उनके पास जो भी आता था उन्हें वह व्यसन मुक्त जीवन जीने की प्रेरणा देते थे। उनके उपदेश से प्रभावित हो हजारों लोगों ने व्यसन त्याग किया और एक नया जीवन प्राप्त किया।

उनका संक्षिप्त परिचय कुछ इस प्रकार से है : आपका जन्म 06.08.1961 को हुआ था। आपका जन्म नाम श्री धमेन्द्र कुमार जी जैन था। जन्म स्थान जुगुल जिला बेलगांव

(कर्नाटक) और माता का नाम श्रीमती हीरादेवी मोले पिता का नाम श्री अन्नपा मोले जी तथा शिक्षा हायर सेकेन्ड्री थी। ब्रह्मचर्य व्रत सन् 1982 में और संघ प्रवेश 9 जुलाई 1987 अतिशय क्षेत्र थुवोन जी में मुनि दीक्षा हुई थी। दीक्षा गुरु संत शिरोमणी आचार्य श्री विद्यासागर जी हैं। आप जंगल में रहकर चतुर्थ कालीन मुनि की तरह चर्या-तपस्या के लिये जाने जाते थे।

संत शिरोमणि परम पूज्य आचार्य श्री 108 विद्यासागर जी महामुनिराज के परम प्रभावक शिष्य पूज्य मुनि श्री 108 चिन्मय सागर जी मुनिराज (जंगल वाले बाबा) का समतापूर्ण समाधिमरण पिछले वर्ष 18 अक्टूबर को सायं 06.26 बजे जुगुल में हुआ। यह खबर आग की तरह पूरे देश में फैल गयी। पारस चैनल पर लाइव प्रसारण किया गया था। उनके अंतिम दर्शन के लिये देशभर श्रद्धा का सैलाब उमड़ पड़ा था।

अब हमारे बीच पूज्य मुनि श्री नहीं हैं लेकिन उनके सद उपदेश सदैव जीवंत रहेंगे। प्रथम पुण्य तिथि पर परम पूज्य मुनि श्री 108 चिन्मय सागर जी मुनिराज के चरणों में शत् - शत् नमन एवं भावपूर्ण श्रद्धांजलि।

कविता

मुठ्ठी की रेत

मुठ्ठी की रेत सी, अब फिसली है जिंदगी।
जीवन पूरा गुजरा, न हो पाई अब तक बंदगी॥
बाहर की सफाई से क्या होता है दोस्त।
मन से न मिट पाये, जब तक अंदर की गंदगी॥
मुठ्ठी की रेत सी फिसली है अब जिंदगी।
अंतरंग व वाह भावों में, अंतर आसमान व जमीं का।
आजा मायाचारी से लिप्त है संसार सभी का॥
वात्सल्य, दया, करूणा फैले अब सुगंध सी,
मुठ्ठी की रेत सी फिसली है अब जिंदगी।
कौन जाने कब किसे बीमारी उठा ले।
डर रहा मानव, मौत कब गले लगा ले॥
समाधि को थाम लो, यही सार अंत ही।
मुठ्ठी की रेत सी फिसली है अब जिंदगी॥

आओ सीखे : जैन न्याय

संस्कृत शब्द- अर्थ वाचकवाद की समीक्षा

एक शब्द को भी सम्यक् रीति से जानकार शास्त्रानुसार उसका शुद्ध प्रयोग करने से इस लोक परलोक में इच्छित फल की प्राप्ति होती है अर्थ का ज्ञान कराने में संस्कृत भाषा के शब्द ही कारण हो सकते हैं, प्राकृत अपभ्रंश के नहीं। संस्कृत से सिद्ध गोशब्द ही साधु है। अपभ्रंश से सिद्ध गावी या गौणी वाचक नहीं हो सकते हैं क्योंकि वे शुद्ध नहीं है इस तरह का अभिमत वैयाकरणी मत के मानने वाले प्रस्तुत करते हैं। वे अपने मत की पुष्टि हेतु कुछ तर्क प्रस्तुत करते हैं वे तर्क इस तरह हैं -

1. अन्वय और व्यतिरेक के आधार पर वाचक भाव की व्यवस्था की जाती है। गावी आदि शब्दों के द्वारा अन्वय-व्यतिरेक दूसरे तरीके से बनता है। गावी शब्द वाचक नहीं हैं अशुद्ध शब्द का प्रयोग किये जाने पर शुद्ध शब्द का स्मरण होता है फिर उससे अर्थ का ज्ञान होता है जैसे- बालक माता को पुकारने के लिए अन्य शब्द कहना चाहता है किन्तु उच्चारण करने में असमर्थ होने के कारण अम्ब बोलता है यह अम्ब शब्द माँ का स्मरण करा देता है।

2. जहाँ-जहाँ अन्वय-व्यतिरेक अन्यथा सिद्ध होते हैं वहीं-वहीं वे वाचकत्व का नियम करते हैं। गावी शब्द में अन्वय-व्यतिरेक निश्चित नहीं हैं। इसलिये गावी शब्द के वाचकत्व का नियम नहीं बन सकता है। किन्तु गो शब्द में गोत्व रूप अर्थ का वाचक है और अन्वय-व्यतिरेक तो वादी-प्रतिवादी दोनों को स्वीकार है। अतः गौ शब्द ही गाय का वाचक मानना ठीक है।

3. गावी शब्द भ्रष्ट प्रयोग है। इसका प्रयोग नियत देश और नियत काल में कुछ पुरुषों के देखा जाता है किन्तु देशान्तर में गावी शब्द के संकेत ग्रहण नहीं किया जा सकता है और अर्थ बोध किया जा सकता है।

4. व्याकरण के बिना वृद्धजनों के व्यवहार से ही सब शब्दों के वाचकत्व का नियम नहीं बनाया जा सकता है। शब्द राशि अनंत है। अतः व्याकरण के द्वारा थोड़े से प्रयत्न से ही शब्दों के वाचकत्व को जाना जा सकता है। अतः व्याकरण की आवश्यकता है।

5. व्याकरण प्रमाण है। व्याकरण को अप्रमाण नहीं माना जा सकता है, क्योंकि व्याकरण के बिना कारकों को व्यवस्था नहीं बन सकेगी । लोक और शास्त्र से विरोध आ जायेगा। सभी शिष्ट पुरुष व्याकरण को प्रमाण मानते हैं। सभी शास्त्रों की भाषा और नियम व्याकरण आधीन है।

निष्कर्ष - व्याकरण से सिद्ध शब्द ही वाचक है।अपभ्रंश आदि शब्द वाचक नहीं हो सकते हैं।

वैयाकरण मत के विद्वानों के तर्क सुनने के बाद जैनाचार्य अपने सटीक तर्कों के द्वारा यह सिद्ध करते हैं कि अपभ्रंश और प्राकृतिक आदि शब्दों के भी वाचकपना होता है। अपने पक्ष को सिद्ध करते हुए जैनाचार्य इस प्रकार तर्क देते हैं -

1. वाच्यवाचक भाव लोक-व्यवहार के अधीन है और लोक में गावी आदि शब्दों से ही व्यवहार चलता है।

2. जो संस्कृतज्ञ विद्वान है वे भी संस्कृत को छोड़कर गावी आदि शब्दों का व्यवहार करते देखे जाते हैं। संस्कृत के ज्ञाता या अज्ञाता गावी आदि शब्दों से ही अपना व्यवहार चलाते हैं। अतः अन्वय-व्यतिरेक के द्वारा गावी आदि शब्दों में ही वाचकत्व का नियम होता है।

3. संस्कृत शब्दों की तरह प्राकृत शब्दों से भी साक्षात् ही अर्थ का ज्ञान होता है। यदि ऐसा न हो तो जहाँ संस्कृत के ज्ञाता नहीं है, वहाँ भाषा शब्दों से अर्थ का ज्ञान नहीं होगा। गावी आदि शब्द भी शब्दार्थ की स्मृति कराते हैं अतः उस स्मृति की सहायता से गावी आदि भी वाचक हो जाते हैं।

4. अनुभव मूलक स्मरण भी प्रमाण होता है क्योंकि अनुभव के अनुसार ही स्मरण होता है। गावी आदि शब्दों के ही वाचक होनेका अनुभव होता है।

5. बालक के अशक्ति होनेपर गौ के स्थान पर गावी का उच्चारण होता है यह कहना ठीक नहीं , क्योंकि यदि बालक गौ शब्द का उच्चारण की इच्छा रखते हुये भी अशक्ति या प्रमाद से गावी शब्द का उच्चारण करता है तो प्रबुद्ध होने पर गावी शब्द छोड़कर गौ शब्द का ही व्यवहार करना चाहिये, किन्तु वह विद्वान होने पर भी गावी शब्द का ही प्रयोग करता है।

6. अपभ्रष्ट मानने का कारण क्या है ?

अ) पुरुषार्थ में सहायक नहीं है अथवा संकेत के द्वारा ही अपने अर्थ को कहते हैं । प्रथम पथ में दोष-प्राकृत शब्दों के व्यवहार से ही धर्म-अर्थ आदि पुरुषार्थ चलते हैं ।

ब) ऐसा कोई पुरुषार्थ नहीं जिसका संबंध प्राकृत भाषा से न हो दूसरा पक्ष भी अनुचित है। क्योंकि प्राकृत शब्दों की तरह संस्कृत शब्द भी संकेत की सहायता से ही अर्थ का प्रतिपादन करते हैं ।

7. शुद्धता का आधार-शुद्धता का स्वरूप क्या है ?

वाचकपना अथवा अनादि काल से प्रयोग आना।

1.	वाचकपना	गौ की तरह गावी शब्द में भी वह स्वरूप है, क्योंकि अन्वय-व्यतिरेक के द्वारा गोशब्द की तरह गावी शब्द भी अर्थ का प्रतिपादक है।
2.	अनादिकाल सेप्रयोग में आना	गो और गावी में कोई भेद नहीं रहता, क्योंकि दोनों का प्रयोग अनादिकाल से चलता आ रहा है।
3.	धर्म का साधन होना	धर्म का साधन शुद्धता का आधार नहीं हो सकता है, क्योंकि धर्म के साधन साक्षात् और परम्परा रूप में होते हैं परम्परा रूप में प्राकृत शब्द भी होता है।
4.	विशिष्ट पुरुषों द्वारा रचित	संस्कृत और प्राकृत दोनों की व्याकरण विशिष्ट रूपों द्वारा रचित है।
5.	विशिष्ट अर्थ का कहना	संस्कृत और प्राकृत दोनों की व्याकरण विशिष्ट रूपों से रचित है।
6.	व्याकरण से सिद्ध होना	यदि प्राकृत व्याकरण भी व्याकरण नहीं तो संस्कृत व्याकरण भी व्याकरण नहीं।

8. संस्कृत वाणी बोलना चाहिये किन्तु कब बोलना चाहिये? कर्मकाल अथवा अध्ययन काल में। यदि अध्ययन काल में संस्कृत भाषा बोलना चाहिये तो प्राकृत काल में प्राकृत भाषा बोलना चाहिये।

9. प्राकृत भाषा असाधु कैसे हो सकती है। अध्ययन काल में यदि प्राकृत भाषा के न बोलने पर असाधु भाषा होगी। यदि एक के अध्ययन काल में दूसरे के प्रयोग न होने से दूसरा असाधु है तो पुराण का अध्ययन करते समय वेद वाक्यों का प्रयोग न होने से वेद वाक्य भी असाधु ठहरेंगे।

10. कर्मकाल में संस्कृत वाणी बोलना चाहिये तो उस समय प्राकृत क्यों बोलना चाहिये? क्या प्राकृत शब्द अर्थ का कथन नहीं करते? क्या वे अपशब्द है ? क्या वे अधर्म के कारणहै ?

अ) प्राकृत शब्दों सेअर्थ की प्रतीति होती है।

ब) प्राकृत शब्द अपशब्द नहीं है क्योंकि वे भी व्याकरण से सिद्ध है।

स) प्राकृत भाषा अधर्म का कारण नहीं है।

अतः प्राकृत भाषा और अपभ्रंश भाषा द्वारा भी शुद्ध प्रयोग होता है और लौकिक पारलौकिक इच्छित फल की प्राप्ति होती है।

प्रवचन–आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज ⟩ भरके (गड्ढे)मन के कभी न भरें

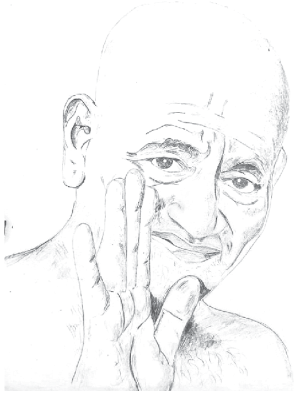

लोग दूर-दूर से वंदना के लिए आ रहे हैं और उनकी प्यास बुझाना है। प्रश्न ये है कि कोई दूसरा बुझायेगा या स्वयं बुझायेगा ? तो वह नम्बर लेता है, प्रयास करके बाद में नम्बर आया वहाँ से हटता ही नहीं। वो सुनता भी नहीं। फिर बाद में कहता है थोड़ा ठहरो तो अभी तो मन भरा ही नहीं पूजन में भी घुमाकर बोल ही देते हैं-मन तृप्त नहीं कर पाया हूँ। फिर भी मन की छुट्टी नहीं करते।

आप सबको दर्शन से संतुष्ट तो होना ही चाहिए। दूसरे की भी चिंता करनी चाहिए, नहीं तो बहुत स्वार्थी माने जाओगे। दूसरे को नम्बर नहीं तो आपकी कटौती अपने आप ही प्रारम्भ हो जायेगी। भगवान कभी कटौती नहीं करते पर मन के कारण यह स्थिति बन जाती है। अच्छा ये बताओ मन कभी भरता है ? फिर क्यों भरने में लगे हो। दुनिया का प्रत्येक व्यक्ति इसको भरने में लगा है, पर ये कभी नहीं भरेगा।

'' ये ऐसे भरके है कि इसे यदि पत्थर आदि से भी भरने लगे तो भी भरने वाला नहीं है। इसे यदि भर सकते हो तो मात्र दृढ़वती आस्था से ही भर सकते हो। मन को तृप्त करना है तभी इसका अन्त हो सकता है। आप इसके लिए प्रभु के स्वरूप को देखे। जिस समय प्रभु का दर्शन करता है, तुरन्त आँखों को बन्द कर देता है। शास्त्रों में/पुराणों में लिखा है कि ऐसा क्यों करता है ?

उत्तर लिखा कि जिन प्रभु को देखा उनको अपनी आँखों में बसा लिया वे कहीं अब अब भग न जाये इसलिये तुरन्त बन्द कर लेता है। कितनी अच्छी कल्पना की है। आँख बन्द करते ही भगवान स्पष्ट दिखेंगे। इसलिये आपने जिन भी भगवान के दर्शन किये उनके आँख बंद करके देखा करो। छोटे है तो छोटे रूप में, मध्यम है तो मध्यम रूप में और बड़े हैं तो बड़े रूप में दर्शन होंगे।

आँखें छोटी सी है परन्तु भरने की कला भी होती है। इस प्रकार यादि किया करो, मन हमेशा प्रशस्त रहेगा। इतना ही अभी पर्याप्त समझता हूँ। आज चतुर्दशी थी सो उधर तो नहीं जा पाये(पाण्डाल) आप लोग इधर आ ही गये। किन्तु पैदल नहीं आये, गाड़ियों से आये हैं। अब देखो गाड़ियाँ बहुत सारी हो गयी। अपनी तो दो पहिया की गाड़ी ही अच्छी है, इसमें एक्सीडेन्ट नहीं होता।

गुरुवाणी - बिना प्रयोग के थ्योरी का भी नाश हो जाता है इसलिए प्रयोग पर विश्वास करके ध्यान देना चाहिए।

- आहार की तरह निहार हेतु स्थान भी प्रासुक एवं आगम अनुसार हो। दूरे-गुढे-दूर हो-लोगों के आवागमन से रहित हो एवं पहुँच मार्ग भी प्रासुक हो।

स्थानांतरण उद्योग- श्वसन संस्थान जैसा होता हैं

✻ डॉ. अरविन्द जैन, भोपाल ✻

जैसे श्वास लेने और छोड़ने में एक हवा आती हैं और जाती हैं। यानि हवा आती जाती हैं ऊर्जा का क्रम चलता रहा है, जैसे कहा जाता है कि स्थानांतरण करने में भी ऊर्जा लगती हैं और रुकवाने में भी ऊर्जा लगती हैं इससे यह फायदा होता हैं की करने वाले और करने या रूकवाने वालों को ऊर्जा खर्च करना पड़ती हैं यदि मनमाफिक होता हैं तो भी ठीक और न हुआ तो ऊर्जा खर्च करो तो मनमुताबिक जगह आ जाओ।

बार बार स्थांतरण से सरकार नियंत्रण करता अधिकारी, नियुक्ति करता अधिकारी और प्रशासनिकाधिकारी भी निश्चिन्त रहता हैं कारण उसको स्थिति जानने में परेशानी नहीं होती। कारण तब तक वह कहीं से कहीं पहुंच जाता हैं। एक बात और हैं जो आई.एस.और आई. पी एस और अधिकारी अधिकतर ज्योतिषी होते हैं या त्रिकालज्ञ होते हैं कारण वे जहाँ भी जाते हैं बिना समय गवायें सब जान जाते हैं और उनको दूसरे जगह भेज दिया जाता है।

यह उद्योग बहुत लाभकारी होता हैं इसमें प्रभावित व्यक्ति हमेशा दीन बना रहता है कारण उस पर असमय ट्रांसफर की गाज गिरने का भय रहता हैं और वह उस दौरान किसी भी जाँच या शिकायत से मुक्त रहता हैं कारण जब वह कोई काम ही नहीं करेगा तो शिकायत नहीं होगी और विकास कार्य सरकारी का निर्बाध चलता हैं। वह नये स्थान पर अनमने मन से जाता हैं और अज्ञात भय से ग्रसित रहता हैं और उस दौरान वह अपने परिवार के कष्टों से मुक्त रहता हैं कारण उसको नहीं मालूम होता हैं कि मेरा भविष्य कितने दिन कहाँ पर रहना हैं।

वैसे स्थानांतरण एक बहुत सफल नीति होती हैं-

नित्यपरीक्षणम, कर्मविपर्ययः प्रतिपत्तिदानं च नियोगीश्वार्थग्रहणोंपायाः।

अर्थात राजा अधिकारियों से रिश्वत द्वारा संचित धन निम्न प्रकार तीन उपायों से प्राप्त कर सकता हैं 1. नित्य परीक्षण कर अर्थात- सदा अधिकारियों की जांच पड़ताल करना अर्थात गुप्तचरों द्वारा उनके दोष जानकार कड़ी सजा देना। 2. कर्म विपर्यय-उन्हें उच्च पदों से पृथक कर साधारण पदों पर नियुक्त करना, जिससे वे भयभीत होकर रिश्वत से संचित धन बताने में बाध्य हो सके। 3. समय समय पर अधिकारियों को पुरुस्कृत करते रहना, जिससे वे प्रसन्न होकर गुप्त धन दे सकें।

नापीडीता नियोगिनो दुष्टव्रणा इवानतः सारमुद्धमंति।

अर्थात अधिकारी वर्ग दुष्ट व्रण (पका हुआ दूषित फोड़ा) सरीखे होते हैं, जो की बिना ताडन बंधन आदि किये गृह में रखा हुआ रिश्वत का धन नहीं बताते अर्थात जिस प्रकार पककर हुये दूषित फोड़े शस्त्रादि द्वारा छेदन भेदन किये बिना भीतर दोष (मवाद आदि) सहित रक्त नहीं निकालते उसी तरह अधिकारी गण भी कड़ी सजा पायें रिश्वत का धन नहीं बताते।

पुनः पुनरभियोगे नियोगिषु महीपतनीनामं वसुधारा।

राजनीय धन का अपहरण करने वाले अधिकारियों की बार बार भर्त्सना करते रहना चाहिये राजा के लिये धन प्राप्ति का स्त्रोत बन जाता हैं अथवा दूसरों अर्थ यह है कि रिश्वतखोर अधिकारियों के लिये बार बार ऊंचे पदों से पृथक्क करके साधारण में नियुक्त करने से राहों कौन

से रिश्वत का प्रचुर धन मिल जाता है, क्योंकि वे पदच्युत होने के भय से रिश्वत का धन दे देते हैं।

सकृनिष्पीड़ितं स्नानवस्त्रम किं जहाति साँद्रताम।

कभी एक बार धोकर निचोड़े हुये स्नान वस्त्र से क्या पूरा मैलजल निकल जाता है ? अर्थात-जिस प्रकार नहाने का कपड़ा बार बार पछाड़ कर धोने से स्वच्छ होता हैं उसी प्रकार घूसखोर अधिकारी बार बार दण्डित किये जाने से शुद्ध होता हैं अर्थात संचित हुआ रिश्वत का धन दे देता हैं।

पर कमलनाथ सरकार ने किस उद्देश्य से इतने अधिक स्थांतरण किये और किये जा रहे हैं इससे कोई भी अधिकारी जहाँ जाता हैं तो पहले यहभाव समायें रहता है कि मैं यहाँ कितने दिन हूँ और जब कुछ समझना चाहता है तब उसका ट्रांसफर हो जाता है। इससे क्या हुआ पहली बार सरकार का काम प्रभावित होता हैं, अधिक व्यय का भार पड़ता है और उसे अपनी योग्यता दिखने का अवसर नहीं मिलता हीन भावना से ग्रसित होता हैं और आप इन्हीं अधिकारियों को यहाँ से वहाँ ट्रांसफर कर रहे हो। कोई नया अधिकारी तो नहीं मिल रहे हैं इस तरह की गतिविधियों से सरकार की कार्य विधि पर प्रश्न चिन्ह लगते हैं यह जरूर हैं कि शासन किसी भी अधिकारी का स्थानांतरण कभी कभी कहीं भी कर सकता हैं पर इसका मतलब यह नहीं की हर दूसरे दिन, सप्ताह में पंद्रह दिन में महीना भर में इससे सरकार का अधिकारियों पर भरोसा नहीं होने से वे यदि असंतुष्ट हो जायेंगे तो आगे का भविष्य अंधारकरमय। चूँकि कर्मचारी अधिकारी अपनी आजीविका के प्रति आश्रित होता हैं अन्यथा बगावत की स्थिति बन सकती हैं। यानी पांच माह 15 दिन में 15000 हजार निचले स्तर के कर्मचारियों और अधिकारियों और 450 आई .ए एस और आई पी एस स्तर के अधिकारियों का स्थांतरण होना यह सरकार की किस मानसिकता का प्रतीक हैं ?

अधिक परखना भी एक प्रकार का अविश्वास करना होता है।

कविता

कोरोना का कैसा रोना

रचियता: एलक सिद्धांतसागर

सबकी आँखों में लाये जो रोना हाय राम ये कोरोना
अब तक न कोई है इसकी दवाई।
देखे तो पगले की कैसी दिठाई।
कहता कोई रोड़ पर निकलो ना
चीन ने इसकी क्यों पुड़िया बनाई
दुनिया में लाखों ने जान गंवाई
घर में रहो तो न होगा कोरोना
बस के थमे चाक रेलें रूकी सब
छुपो अपने घर में बस चारा यही अब
प्रभु को भजो जो होना सो होना

अंधेरी दुनिया का बिंदुओं से कम्प्यूटर तक सफर

✻ डॉ. अरविन्द जैन, भोपाल ✻

लुई ब्रेल ने ब्रेल लिपि का आविष्कार किया था उनका जन्म 4 जनवरी 1809 को हुआ था 4 जुलाई को उनकी याद में विश्व ब्रेल दिवस मनाया जाता है।

लुई ब्रेल ने एक दुर्घटना में अपनी दृष्टि खो दी थी,उन्होंने महज 15 साल की उम्र में इस लिपि का आविष्कार किया था।

दुनिया में नेत्रहीन दृष्टिहीन या आंशित रूप से नेत्रहीन लोगों की जिंदगी आसान करने और उन्हें अपने पैरों पर खड़ा करने में ब्रेल लिपि का बड़ा हाथ है।

ब्रेल कोई भाषा नहीं है, ये एक कोड है, ब्रेल लिपी में उभरे हुये बिंदुओं से कोड बनाया जाता है इनमें 6 बिंदुओं की तीन पंक्तियाँ होती है, जिनमें कोड निहित होते हैं।

लुई ब्रेल को ब्रेल लिपि का आइडिया नेपोलियन की सेना के एक कैप्टन चार्ल्स बार्बियर से आया था बार्बियर लुई के स्कूल आये हुये थे, उस दौरान उन्हों ने बच्चों के साथ नाइट राइटिंग की विधि शेयर की, जिसमें सैनिक दुश्मनों की पकड़ में न आने के लिये उभरे हुये बिंदुओं में छिपे संदेश का उपयोग करते थे।

अब ब्रेल लिपि कागजों से प्रगति कर कम्प्यूटर तक पहुंच गई है। दृष्टिहीन लोगों के इस्तेमाल के लिये इलेक्ट्रो-मैकेनिकल डिवाइस बनाई गई है, इसे रिफ्रेशेबल ब्रेल डिस्प्ले या ब्रेल टर्मिनल कहते हैं।

इस कम्प्यूटर में गोल-नुकीलें बिंदु उभरे होते हैं, जिनकी मदद से व्यक्ति इसे इस्तेमाल कर पाता है।

लुई ब्रेल (4 जनवरी 1809-6 जनवरी 1852) फ्रांस के शिक्षाविद तथा अन्वेषक थे जिन्होंने अंधों के लिये लिखने तथा पढ़ने की प्रणाली विकसित की। यह पद्धति ब्रेल नाम से जगप्रसिद्ध है। फ्रांस में जन्मे लुई ब्रेल अंधों के लिये ज्ञान के चक्षु बन गये। ब्रेल लिपि के निर्माण से नेत्रहीनों की पढ़ने की कठिनाई को मिटाने वाले लुई स्वयं भी नेत्रहीन थे।

लुई ब्रेल का जन्म 4जनवरी 1809 में फ्रांस के छोटे से ग्राम कुप्रे में एक मध्यमवर्गीय परिवार में हुआ था। इनके पिता साइमन रेले ब्रेल शाही घोड़ों के लिये काठी और जीन बनाने का कार्य किया करते थे। पारिवारिक आवश्यकताओं के अनुरुप पर्याप्त आर्थिक संसाधन नहीं होने के कारण साइमन का अतिरिक्त मेहनत करनी होती थी इसीलिये जब बालक लुइस मात्र तीन वर्ष के हुये तो उनके पिता ने उसे भी अपने साथ घोड़ों के लिये काठी ओर जीन बनाने के कार्य में लगा लिया। अपने स्वभाव के अनुरूप तीन वर्षीय बालक अपने आस पास उपलब्ध वस्तुओं से खेलने में अपना समय बिताया करता था इसलिये बालक लुइस के खेलने की वस्तुयें वही थी जो उसके पिता द्वारा अपने कार्य में उपयोग की जाती थीं जैसे कठोर लकड़ी, रस्सी, लोहे के टकुडे, घोडे की नाल, चाकू और काम आने वाले लोहे के औजार। किसी तीन वर्षीय बालक का अपने नजदीक उपलब्ध वस्तुओं के साथ खेलना और शरारतों में लिप्त रहना नितांत स्वाभाविक भी था।

एक दिन काठी के लिये लकड़ी को काटते मैं इस्तेमाल किया जाने वाली चाकू अचानक उछल कर इस नन्हें बालक की आंख में जा लगा और बालक की आँख से खून की धार वह निकली। रोता हुआ बालब अपनी आंख को हाथ से दबाकर सीधे घर आया और घर में साधारण जड़ी लगाकर उसकी आँख पर पट्टी कर दी गयी। शायद यह माना गया होगा कि छोटा बालक है सो शीघ्र ही चोट स्वतः ठीक हो जायेगी। बालक लुइस की आंख के ठीक होने की प्रतीक्षा की जाने लगी। कुछ दिन बाद बालक लुइस ने अपनी दूसरी आंख से भी कम दिखलायी देने की शिकायत की परन्तु यह उसके पिता साइमन की साधन हीनता रही होगी अथवा लापरवाही जिसके चलते बालक की आँख का समुचित इलाज नहीं कराया जा सका और धीरे धीरे वह नन्हों बालक आठ वर्ष का पूरा होने तक पूरी तरह दृष्टि हीन हो गया। रंग बिरंगे संसार के स्थान पर उस बालक के लिये सब कुछ गहन अंधकार में डूब गया। अपने पिता के चमड़े के उद्योग में उत्सुकता रखने वाले लुई ने अपनी आँखें एक दुर्घटना में गवां दी। यह दुर्घटना लुई के पिता की कार्यशाला में घटी। जहाँ तीन वर्ष की उम्र में एक लोहे का सूजा लुई की आँख में घुस गया।

यह बालक कोई साधारण बालक नहीं था। उसके मन में संसार में लड़ने की प्रबल इच्छा शक्ति थी। उसने हार नहीं मानी और फ्रांस के मशहूर पादरी वैलेन्टाइन की शरण में जा पहुंचा। पादरी वैलेन्टाइन के प्रयासों के चलते 1819 में इस दस वर्षीय बालक को रायल इस्टीट्यूट फार ब्लाइन्डस में दाखिला मिल गया। यह वर्ष 1821 था बालक लुइस अब तक बारह वर्ष का हो चुका था। इसी दौरान विद्यालय में बालक लुइस का पता चला कि शाही सेना के सेवानिवृत्त कैप्टेन चार्लस बार्बन ने सेना के लिये कूटलिपि का विकास किया है जिसकी सहायता से वे टटोलकर अंधेरे में भी संदेशों के पढ़ सकते थे। कैप्टेन चार्लस बार्बद का उद्देश्य युद्ध के दौरान सैनिकों को आने वाली परेशानियाँ को कम करना था। बालक लुइस का मस्तिष्क सैनिकों के द्वारा टटोलकर पढ़ी जा सकने वाली कूटलिपि में दृष्टिहीन व्यक्तियों के लिये पढ़ने से मुलाकात करना चाहता है। पादरी ने लुइस की कैप्टेन से मुलाकात की व्यवस्था करायी। अपनी मुलाकात के दौरान बालक ने कैप्टेन के द्वारा सुझायी गयी कूटलिपि में कुछ संशोधन प्रस्तावित किये। कैप्टेन चार्लस बार्बर उस अंधे बालक का आत्मविश्वास देखकर दंग रह गये। अतः पादरी बैलेन्टाइन के इस शिष्य के द्वारा बताये गये संशोधनों को उन्होंने स्वीकार किया।

कालान्तर में स्वयं लुइस ब्रेल ने आठ वर्षों के अथक परिश्रम से इस लिपि में अनेक संशोधनों किये और अंतः 1829 में छह बिन्दुओं पर आधारित ऐसी लिपि बनाने में सफल हुये। लुइस ब्रेल के आतविश्वास की अभी और परीक्षा होना बाकी था। इसलिये उनके द्वारा आविष्कृत लिपि को तत्कालीन शिक्षा शास्त्रियों द्वारा मान्यता नहीं दी गयी और उसका माखौल उड़ाया गया। सेना के सेवानिवृत्त कैप्टेन चार्लस बार्बर के नाम का साया लगातार इस लिपि पर मंडराता रहा और सेना के द्वारा उपयोग में लाये जाने के कारण इस लिपि को सेना की कूटलिपि ही समझा गया परन्तु लुइस ब्रेल ने हार नहीं मानी और पादरी बैलेन्टाइन के संवेदनात्मक आर्थिक एवं मानसिक सहयोग से इस शिष्य ने अपनी अविष्कृत लिपि को दृष्टि हीन व्यक्तियों के मध्य लगातार प्रचारित किया। उन्होंने सरकार से प्रार्थना की कि इसे दृष्टिहीनों की भाषा के रूप में मान्यता प्रदान की जाये। यह लुइस का दुर्भाग्य रहा कि उनके प्रयासों को सफलता नहीं मिल सकी और तत्कालीन शिक्षा

शास्त्रियों द्वारा इसे भाषा के रूप में मान्यता दिये जाने योग्य नहीं समझा गया। अपने प्रयासों को सामाजिक एवं संवैधानिक मान्यता दिलाने के लिये संघर्षरत लुइस 43 वर्ष की अवस्था में अंततः 1852 में जीवन की लड़ाई से हार गये परन्तु उनका हौसला उनकी मृत्यु के बाद भी नहीं।

उनका देहान्त 6 जनवरी 1852 को हुआ। लुइस ब्रेल द्वारा अविष्कृत छह बिन्दुओं पर लिपि उनकी मृत्यु के उपरानत दृष्टिहीनों के मध्य लगातार लोकप्रिय होती गयी। लुइस की मृत्यु की घटना के बाद शिक्षा शास्त्रियों द्वारा उनके लिये किये गये कार्य की गम्भीरता को समझा जाने लगा और दृष्टिहीनों के मध्य लगातार मान्यता पाती जा रही लिपि के प्रति अपने पूर्वाग्रहपूर्ण दकियानूसी विचारों से बाहर निकलते हुये इसे मान्यता प्रदान करने की दिशा में विचारित किया गया। अंततः लुइस की मृत्यु के पूरे एक सौ वर्षों के बाद फ्रांस में 20 जून 1952 का दिन उनके सम्मान का दिवस निर्धारित किया गया। इस दिन उनके ग्राम कुप्रे में सौ वर्ष दफनाये गये उनके पार्थिव शरीर के अवशेष पूरे राजकीय सम्मान के साथ बाहर निकाले गये। उस दिन जैसे लुइस ग्राम कुप्रे में उनका पुर्नजन्म हुआ। स्थानीय प्रशासन तथा सेना के आला अधिकारी जिनके पूर्वजों ने लुइस के जीवन काल उनका लगातार उपेक्षित किया दृष्टिहीनों के लिये उनकी लिपि को गम्भीरता से न लेकर उसका माखौल उडाया अपने पूर्वजों के द्वारा की गयी गलती की माफी मांगने के लिये उनकी समाधि के चारों और इकट्ठा हुये। लुइस के शरीर के अवशेष ससम्मान निकाले गये। सेना के द्वारा बजायी गयी शोक धुन के बीच राष्ट्रीय ध्वज में उन्हें पुनः लपेटा गया और अपनी ऐतिहासिक भूल के लिये उत्खनित नश्वर शरीर के अंश के सामने समूचे राष्ट्र ने उनसे माफी मांगी। राष्ट्रीय धुन बजायी गयी और इस सबके उपरान्त धर्माधिकारियों के द्वारा दिये गये निर्देशन के अनुरूप लुइस से ससम्मान चिर निद्रा में लीन होने प्रार्थना की गयी और इसके लिये बनाये गये स्थान में उन्हें राष्ट्रीय सम्मान के साथ पुनः दफनाया गया। सम्पूर्ण वातावरण ऐसा अनुभव दे रहा था जैसे पुनः जीवित हो उठे है।

इस प्रकार एक राष्ट्र के द्वारा अपनी ऐतिहासिक भूल का प्रायश्चित किया गया परन्तु लूइस द्वारा किय गये कार्य अकेले किसी राष्ट्र के लिये न होकर सम्पूर्ण विश्व की दृष्टिहीन मानव जाति के लिये उपयोगी थे अतः सिर्फ एक राष्ट्र के द्वारा सम्मान प्रदान किय जाने भर से उस मनीषी को सच्ची श्रद्धांजलि नहीं हो सकती थी। विगत वर्ष 2009 में 4 जनवरी को जब लुइस ब्रेल के जन्म को पूरे दो सौ वर्षों का समय पूरा हुआ तो लुई ब्रेल जन्म द्विशती के अवसर पर हमारे देश ने उन्हें पुनः पुनजीर्वित करने का प्रयास किया जब इस अवसर पर उनके सम्मान में डाक टिकट जारी किया गया।

यह शायद पहला अवसर नहीं है जब मानव जाति ने किसी मान आविष्कारक के कार्य को उसके जीवन काल में उपेक्षित किया और जब वह महान आविष्कारक नहीं हरे तो उनके कार्य का सही मूल्यांकन तथा उन्हें अपेक्षित सम्मान प्रदान करते हुये अपनी भूल का सुधार किया। ऐसी परिस्थितियां सम्पूर्ण विश्व के समक्ष अक्सर आती रहती हैं जब किसी महान आत्मा के कार्य को समय रहते ईमानदारी से मूल्यांकित नहीं किया जाता तथा उसकी मृत्यु के उपरानत उसके द्वारा किये गये कार्य का वास्तविक मूल्यांकन हो पाता है। ऐसी भूलों के लिये कदाचित परिस्थितियों को निरपेक्ष रूप से न देख पाने की हमारी अरोग्यता ही हो सकती है।

ऐसे अभूतपूर्व प्रतिभा के धनी जिन्हों ने अंधेरी दुनिया में सफर करने वालों को एक नयी ज्योति प्रदान की।

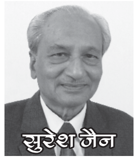

क्रमांक-8 वरिष्ठ नागरिक

दाम्पत्य जीवन तथा ढलती उम्र (आयु)

जिन्दगी की साँझ में.... पति अथवा पत्नी दोनों में से किसी एक का साथ अवश्य छूट जाता है। धन्य है वह दम्पत्ति जिन दोनों को लम्बी आयु मिली हे। आज ढलती उम्र में शादी शुदा जिन्दगी बिताना ही एक बहुत शानदान उपलब्धि हैं। इस उम्र में न सिर्फ खुश रहें बल्कि जिंदगी का पूरा लुत्फ लें। अपने मन में सदैव एक दूसरे के लिये पर्याप्त सम्मान की भावना रखें तथा अटूट प्यार के बन्धन के साथ पूर्ण संतुष्ट जीवन जीयों । अपने आप पर गर्व करें कि आज हम इस मुकाम पर पहुँचे हैं। अपने को दीनहीन भावना का शिकार न होने दें। जीवन में सदैव आशा, आस्था और साहस बनायें रखें। चिंता को त्याग कर जीवन में आगे बढ़ने के लिये सदैव सकारात्मक विचारों को ही स्थान दे ताकि जीवन जीने के महत्व को शक्ति एवं मानसिक बल प्रदान हो।

स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ दिमाग होता है, शरीर स्वस्थ और मन सुदृढ़ होगा तभी मनुष्य मनचाहा जीवन गुजार सकता है, अतः शारीरिक रूप से स्वस्थ होना बेहद जरूरी है। ढलती उम्र में इस चुनौती का स्वीकार कर अपना स्वास्थ्य ठीक बनाये रखने के लिये सदैव शरीर को मजबूत और मन को निर्भीक बनाने में जुटे रहो। छोटी-मोटी बीमारी तो अब सबके शरीर का हिस्सा बन चुकी है और इसके इलाज भी चल रहे हैं । सुबह उठकर कम से कम 40 मिनिट सैर अवश्य करें, सैर से ताजी हवा शरीर के अंग-अंग को तरोताजा रखती है। उसके बाद हल्का फुल्का व्यायाम Light Excercise व योग अवश्य करें ताकि शरीर के सब अंग चलते रहे।

अपने आप को कभी दूसरो से कम नहीं समझना चाहिये और आत्म विश्वास के साथ कदम आगे बढ़ाते रहे, जिससे रास्ते अपने आप खुलते जाते हैं। जीवन में यदि सकारात्मक नजरियें से बढ़ेगे तो न केवल भविष्य ज्यादा उज्जवल दिखेगा, बल्कि वर्तमान भी आनन्ददायक लगेगा। जिंदगी को मस्त और व्यस्त रखकर ही जीवन ही हर **चुनौतियों का सामना** हैं। **आज** ही सबसे बड़ा सच हैं ।

नारी और पुरुष पूरक हैं विरोधी नहीं। अभाव तनाव तथा विपदाओं के बावजूद आत्म शक्ति तथा दृढ़ निश्चय के रास्ते पर चलकर अपने जीवन को जीवंत और सहज बनाये। इस उम्र में पति-पत्नी किसी समस्या पर टकराव को आपसी सोच समझ ओर संयम से काम लेकर घर के वातावरण को ठीक रखे ताकि किसी बात का दुष्प्रभाव परिवार पर न पड़े। जीवन की गरिमा और खुशी के साथ जीने से मानसिक तनाव से राहत मिलती है। अपने छोटे-बड़े फैसले पति-पत्नी मिलकर करे ताकि जीवन में आपसी सौहार्द बना रहे कोशिश करें कि कोई गलत काम न हो जाये तथा एक दूसरे के प्रति समर्पित रहें कोई भी बिना वजह एक दूसरे से नाराज न हो, यदि नाराजगी हो जाये तो जल्द हल्के-फुल्के अंदाज में सॉरी बोलकर मुस्कुरा दो, तथा पावारिक सुख शांती को आपसी ताल मेल से बनाये रखें ।

इस उम्र में जीवन के प्रति मोह, अपने बच्चों, पोत्र-पोत्रीयों, दोहते-दोहतियों की किलकारियों और उनकी मीठी मुस्कानों से प्रसन्न रहे। यदि वह अपेक्षा करे तो जीवन की चाह और उमंग भरी की भरी रह जाती है। यह सोचे कि बच्चे इस वृद्ध अवस्था में हमारे साथ रहें। दुःख-सुख को समझे और आप की उचित भावनाओं का सम्मान करें। ताकि ढलती उम्र मे भी शान्त से कदम से कदम मिलाकर आगे बढ़ते जाये।

आम तौर पर स्त्रियाँ धार्मिक प्रवृत्ति की होती हैं, परन्तु उम्र की सांझ में पुरुष अधिक धार्मिक हो जाते हैं। सोने से पहले रात्री के समय परिवार को कहें कि कुछ पल के लिये इकट्ठे बैठकर सब मिलकर प्रभु भक्ति के कुछ गीत गायें -प्रार्थना व आरती करें। इससे परिवार को कुछ समय इकट्ठा बैठने का मौका मिल जायेगा व परिवार के बुजुर्गों को सारे परिवार को इकट्ठा देख कर अपार प्रसन्नता का अनुभव होगा, चाहे आरती करने के बहाने ही सही कम से कम हमारा परिवार इकट्ठा होकर तो बैठा है।

वैसे तो यह लेख वरिष्ठ पति-पत्नी के लिये लिखा है, परन्तु इस लेख के अधिकांश भाग का हर आयु के दाम्पत्य जीवन के लिये भी उतना ही महत्व रखता है जितना कि परिवार के बुजुर्गों के लिये महत्व रखता है।

कविता

व्यर्थ का सौदा

मोक्ष के साजन से मिलने चली, जानी पहचानी अमर वो गली
सद्दृष्टि ज्ञान चरण एकता, सुखद आत्मा ही है सुरभित कली
जिन्हें है भरोसा खुद पे सदा, कहते हैं हंसकर वो जग अलविदा
दुनिया को छोड़ा सब नाते रसम, समता धरे ममता को कर जुदा
छोड़ दे सारी जगत मय पर की चिन्ता को, मोड़ दे अपनी बाहरी पर की दृष्टि को
यहाँ नहीं कोई किसी का है, ये रिश्ते व्यर्थ का सौदे

कहानी

आगम दर्शन

लेखक: ऐलक श्री सिद्धांतसागर जी महाराज

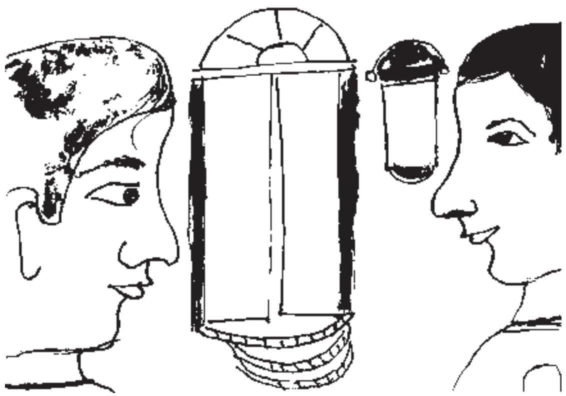

30 अप्रैल का दिन था। घड़ी में 12बज चुके थे। खुरई से लौटकर दर्शन और आगम आये थे स्कूल की बस से उतरे थे और दर्शन, आगम का हाथ पकड़े चला आ रहा था। खिड़की से आगम की माँ देख रही थी। कि दोनों चले आ रहे थे आगम का वही चेहरा जिस पर न कोई खुशी न कोई गम अपने में खोया हुआ आगम अपने घर की तरफ बढ़ता चला आ रहा था। बस्ते का बोझ आगम की पीठ पर था और हाथ में अंक सूची।

दर्शन के चेहरे पर खुशी थी, उत्साह था भीतर का अहम भी झलक रहा था। जैसे ही घर आकर दर्शन ने घर की घंटी बजाई और अपने डायनिंग रूम में जाकर बैठ गया। अपने जूते उतारे और जूते उतार कर किचिन की ओर जाने लगा तभी माँ ने अपने गीले हाथों को पोछकर कहा कि दर्शन मार्गशीट दिखाओ। दर्शन ने कहा कि माँ मुझे 97% अंक मिले है। हिन्दी में और अंग्रेजी में थोड़े कम अंक आये है, और बाकी सभी में ज्यादा आये है। माँ ने दर्शन को बढ़िया वाली मिठाई का डिब्बा उसके सामने सरका दिया और आगम की मार्गसीट देखकर कहा 33% नं क्या है ? आगम तुम पढ़ाई नहीं करते हो। बेटा तुम पढ़ लोगें तो कुछ बन जाओगे। आगम कुछ नहीं बोला और उतने दर्शन की मिठाई के डिब्बे से बर्फी खाना शुरु कर दिया उसे देखकर आगम की माँ मीरा बोली डिब्बा सिर्फ खाने का है आज तो मुझे खाने भी नहीं दूंगी क्या पढ़ता करता है बस 33% कुशल हैं कि तू पास हो गया बरना तू फैल हो गया होता एक साल तेरी बर्बाद हो जायेगी।

अच्छी पढ़ाई करेगा तो तुझे अच्छी साइकिल साइकिल दुलवा दूंगी नहीं करेगा तो इस घर में नहीं रहने दूंगी किसी बोडिंग में रख दूंगी।

जब मीरा अपना भाषण आगम को पिला रही थी तभी आगम के पापा रवि भी आ जाते हैं। रवि बोलते हैं क्या तुमने घर को सिर पर उठा लिया है कि इतने छोटे बच्चे को भाषण पिला रही हो। मुझे भी बताओं कि

क्या हो गया है।

मीरा ने रवि के हाथ में दोनों अंक सूचियाँ थमा दी आप ही देखो अपने लाडले बेटे की करतूत दर्शन को 97% और लाड़ले आगम को 33 % ऐसे कैसे काम चलेगा। खाने के लिये दर्शन की डिब्बे की बर्फी बिना दिये उठाकर खा रहा है। गलत व्यवहार है। रवि ने जेब से 500 - 500 के दो नोट निकाले एक दर्शन को दिया और एक आगम को दिया और कहा कि आगम तुम पास हो गये में खुश हूँ। हो सके तो अगली साल अच्छी मेहनत करना में तुम्हें भैया से भी ज्यादा पुरुस्कार दूंगा।

मीरा ने आगम के हाथ से 500 का नोट लिया और रवि से कहा कि तुम्हारा तरीका गलत है। आप आगम के लिये जिस तरह से प्रोत्साहन दे रहे हो तो इससे तो रह और बेफिक्र हो जायेगा।

अगली साल और बिल्कुल भी पढ़ाई नहीं करेगा रवि ने कहा कि किसी डफर (बौद्धिक) रूप से कमजोर बच्चे का उत्साह बढ़ाना सीखो अकेले अंक सूची में अंकों का प्रतिशत देखना गलत निर्णय हैं जो बच्चे प्रतिशत नहीं बना पाते हैं उनमें में भी प्रतिभा होती है। उस प्रतिभा में हमें खोजना होगा इसलिये ही प्रतियोगिता खोजों परीक्षा मध्यप्रदेश सरकार करवाती है।

इस वर्ष की तरह आगम मात्र उत्तीर्ण होता रहा और मीरा, दर्शन दोनों की झिड़कियाँ सहन करता रहा। एक दिन वह सागर में आयोजित चित्रकला मेले में गया और उसने अपने रंगों की प्रतिभा से चमत्कार करके दिखाया। आगम की बनाई पेटिंग पूरे जिले में प्रथम रही जिससे आगम का उत्साह बढ़ गया। लगातार वह चित्रकला प्रतियोगिता में भाग लेता और प्रथम स्थान बनाता रहा उधर दर्शन संघ लोकसेवा आयोग की प्रतियोगी परीक्षा के लिये तैयारी करता रहा परंतु आगम ने एक अखबार में पढ़ा कि नौकरी पाताल तक नहीं मिलती है इसलिये आगम ने अपना अलग ही रास्ता चुना। उसने अपने केन बॉक्स पर आयल कलर की पेंटिंग बनाना शुरु कर दिया और अपने अपने खुद की प्रदर्शिनी लगाना प्रारंभ कर दिया। पहली प्रदर्शनी अपने उसने मौसा जी के सुझाव पर अपने गांधी हॉल में लगाई। जिससे उसके लिये खूब प्रोत्साहन मिला उसकी पहली पेंटिग 62 हजार रूपये में बिक गई पहली पेंटिंग बिकने के उपरांत अब तो आगम को किसी से पैसे मांगने की जरूरत नही रही। जिन मित्रों से आगम ने पैस उधार लिया था। उन सबका पैसा भी चुका दिया और आगम ने इंदौर भोपाल में भटकने की अपेक्षा सीधा मुंबई का रास्ता चुना। मुंबई की अशोका होटल में अपनी केन बॉक्स की रंगारंग प्रदर्शनी लगाई जिसको देखने फिल्मी दुनियाँ के निर्देशक अमर कौशिक भी आये अमर कौशिक ने आगम के साथ बैठक की और कहा कि आगम भाई आप क्या दो काम कर लेते हैं। आगम ने कहा कि में पेटिंग बनाता हूँ। गाना गाता हूँ। पेटिंग के व्यवसायी करण को लेकर अमर कौशिक ने आगम को गंभीर मार्गदर्शन को गाइडलाइन

मान लिया और अमर कौशिक से अपना व्यवहार बना लिया। अमर कौशिक से अब आगम की लिंक अच्छी बन गई फिल्मी सूटिंग के सेट बनाने के लिये आगम को काम मिल गया । एक तरफ आगम की पेटिंग बिकती दूसरी तरफ आगम फिल्मी सूटिंग बनाने में पैसा कमाता । वह लाखों नहीं करोड़ों रूपये कमाने वाला बन गया।

रक्षा बंधन के अवसर पर आगम ने अपने घर पर दस्तक दी। और मीरा के हाथ में एक करोड़ की एफ डी रख दी। मीरा को विश्वास नहीं हो पाया कि डफर आगम इतना पैसा कैसे कमा लाया। परंतु दर्शन की स्थिति यह रही कि उसने संघ लोक सेवा आयोग परीक्षा में सफलता आयोजित नहीं कर पाई तथा जे.ई.ए परीक्षा में सफलता प्राप्त की।

दर्शन को कही संतुष्ट जनक नौकरी नहीं मिली बैकिंग की नौकरी जरूर मिल गई। किन्तु सैलरी दमदार नहीं थी। आखिर दमदार आगम ने दर्शन भैया को सलाह दी कि मेरी इच्छा है। एक प्लॉट हम बाम्बे में खरीद ले हम दोनों मिलकर अपना काम बढ़ाये और यदि आप मेरे ऑफिस देखने लगेंगे तो हम आगम दर्शन के नाम से एक कंपनी बना लेगें और इसके बाद दोनों मिलकर नौकरी का चक्कर छोड़कर एक कंपनी के मालिक बन जायेंगे। किस्मत ने साथ दिया तो हम लोग मिलकर अपने माँ पापा को बॉम्बे में ही सिफ्ट कर लेगें। मीरा ने आगम की बात का समर्थन तो किया पर कहा कि मैं तो जरूआखेड़ा में ही रहूंगी मुझे जितना अच्छा यहाँ लगता है उतना अच्छा कहीं नहीं लगा है।

आगम ने अपनी माँ मीरा को समझाने का बहुत प्रयास किया परंतु मीरा और रवि का एक ही निष्कर्ष निकला कि हम दोनों तो जरूआखेड़ा में रहेंगे क्योंकि हइमें यहाँ जो सामाजिकता और मेल मिलाप मिलेगा वो मुंबई में नही है। इसलिये तुम दोनों मिलकर कंपनी चलाओ और जो कुछ करना है वह करो। हम तुम्हें रोकेगें नहीं तुम कमा रहे हो तुम अपने हिसाब से खर्च करो।

आगम के पास कई शादी के प्रस्ताव आने लगे पर उसने उन प्रस्तावों को एक बात कहकर आगे बढ़ा लिया । पहले दर्शन भैया और मैं सेट हो जायें। धीरे-धीरे सब जगह बम्बई में भी दर्शन की पहचान आगम से आगे बढ़ रही थी। और कंपनी का नाम भी आगम दर्शन से आगे बढ़ा।

वैसे तो फिल्मी दुनियाँ में कई कंपनियाँ काम करती रहती है । उनका आना जाना लगा रहता है। परंतु आगम ने वह हुनर भी सीखा कि कंपनी को कैसे स्थायित्व प्रदान किया जाये । प्रतिस्पर्धी दुनियाँ में आगे बढ़ना तो सरल होता है। परंतु स्थायित्व रहना बड़ा कठिन काम होता है। आगम का विवाह सृष्टि के साथ और दर्शन का शादी दृष्टि के हो जाती है। दोनों की जिंदगी बहुत अच्छी चलने लगी। और आगम दर्शन फिल्म कंपनी ने सफलता का शिखर चूमना जारी रखा । और मुंबई के अंदर आगम दर्शन कंपनी ने एक ब्राण्ड बैनर सफलता के साथ ठहराया। फहाराया।

समझे बोरियत को

❋ डॉ. मुकेश जैन (विमल) वास्तुविज्ञ, दिल्ली ❋

जहाँ अरूची होती है वहाँ व्यक्ति बोर हो जाता है। हर काम करने में जब एक निश्चितता आ जाती है तो व्यक्ति बोर होने लगता है जिन्दगी में एक रास्ता होने पर बोरियत होना स्वाभाविक होता है यदि व्यक्ति के पास संगीत साहित्य और कलां में रूचि होती है तो व्यक्ति का मन भटकता नहीं है और वह आनन्द की जिन्दगी जीने लगता है लेकिन जहाँ कला से दूरी रखकर के व्यक्ति अकेलेपन में चला जाता है तो वह निश्चित तौर पर बोर होने लगता है यदि व्यक्ति अपने कार्यो में खुशी ढूढ़ने लगे तो बोरियत का कोई प्रश्न ही नहीं उठेगा मनपसन्द काम मिलने पर कोई भी व्यक्ति बोर नहीं होता है लेकिन यह भी समझदारी है कि व्यक्ति कार्य को पसन्द करने लगे।

खेल बच्चों का विकास करता है और बच्चों में खले के प्रति रूचि भी होती है घर में कैद रहकर बच्चे बोर हो जाते हैं सोशल मिडिया से चिपकने पर बोरियत तो खत्म हो जाती है लेकिन भटकाव भी होता है बच्चों ऑनलाईन क्लॉस बोझिल लगने लगती है ऑनलाईन क्लास और इंडोर गेम से ऊबे बच्चे नेट पर अनाश्वयक गेम खेलने लगते हैं और ऑनलाईन खेलों में बच्चों में चिड़चिड़ापन और हताशा पैदा होती है तथा वे शीघ्र ही हिंसक और क्रूर बन जाते हैं।

हर आदमी को नये कार्य यदि जाये या नया करने का अवसर प्राप्त हो तो बोरियत अपने आप समाप्त होती है नया करने के लिये मार्गदर्शक की कुशलता पर सब कुछ निर्भर करता है क्यों कि बच्चों की यह ऐसी अवस्था है कि जब उन्हें लगता है कि कुछ नया मिलना चाहिये अन्यथा वे वही स्कूल वही पढ़ाई वही टीचर, वहीं दोस्तों से बोर हो जाते हैं नये संचार माध्यम बोरियत की समस्या को दूर करने की जगह कुछ उलझन ही पैदा कर देते हैं। सोशल मिडिया आधुनिक संचार माध्यम बोरियत दूर करने के सटीक माध्यम नहीं है।

कभी-कभी बोरियत होना स्वाभाविक होता है लेकिन जब यह बोरियत मन पर स्थायी प्रभाव डालकर स्थिर हो जाती है तो चिंताजनक होती है बोरियत से चिडचिड़ापन नकारात्मक सोच बढ़ते है कार्यक्षमता घटती है और व्यक्ति डिपरेशन में भी जा सकता है। क्योंकि रिश्तों के प्रति बोरियत उदासीनता लाती है अकेलापन क्रोध दुख और चिंता लगातार बोर होने वाले व्यक्ति को जकड़ लेती है इस बोरियत के कारण दुर्गुण बढ़ने की आशंका होती है बीड़ी सिगरेट से जुड़ जाता है अथवा धूम्रपान करने लगता है तथा गुटखा तम्बाकू का सेवन भी करने लगता है बोरियत से मानसिक थकान भी पैदा होती है। बोर होने वाला व्यक्ति अनिवार्य काम को भी हाल देता है। जिससे काम का बोझ एकाएक बढ़ जाता है और नियमिततायें समाप्त हो जाती हैं।

बोरियत से बचने के लिये सबसे प्रथम व्यथक्त को अपने काम के प्रति संतोष रखना चाहिये जिसके जीवन में लक्ष्य होता है और लक्ष्य के प्रति समर्पण होता है तथा लक्ष्य को पाने के लिये भीतर से तड़फन होती है। वह व्यक्ति कभी बोर नहीं होता है किसी ने कहा है अगर तुम जिन्दगी से ऊब चुके है तो खुद को किसी ऐसे काम में झोंक दो जिस पर तुम विश्वास रखते हो लक्ष्य पाने के लिये जीने वाला व्यक्ति संघर्ष में विश्वास रखता है और वह हमेशा सक्रिय रहता है। आलसी आवारा लक्ष्यहीन व्यक्ति जल्दी ऊबते हैं जिसे ऊब आ रही हो उसे उस कार्य की पहचान करना चाहिये जो उसे अचछे लगते हों फुरसत के क्षणों में टीवी देखने की अपेक्षा काई अच्छी किताब पढ़ी जायें दोस्तों से बात की जायें या बागवानी की जायें अथवा चित्रकारी की जायें या फिर संगीत में मन लग जायें तो बोरियत से बचना सहज में संभव होता है। काम में रूचि जगाना ही बोरियत भगाने का मूल मंत्र हैं।

रावण के नाम और एक चिंतन

✻ ब्र. सुनीता जैन, कुंडलपुर ✻

रामायण का कथानक बहुत प्रसिद्ध है लेकिन यह कथानक और इसके पात्रों के नाम अलग अलग धर्मों ही नहीं लेखकों के अनुसार भी कुछ परिवर्तित हैं । जैन परम्परा में भी रामायण कई आचार्यो द्वारा लिखी गई है। राम यशोरसायन, जैन रामायण पउम चरिउ और पद्मपुराण आदि। इनमें पद्मपुराण अधिक प्रसिद्ध है। पद्म नाम रामचन्द्र जी का है इसलिये उनके पौराणिक कथानक को पद्मपुराण नाम दिया गया है। जैन साहित्य में श्रेष्ठ शलाका महापुरुषों के जीवन चरित्रों का वर्णन होता है। 24 तीर्थंकर, 12 चक्रवर्ती, 9 बलभद्र, 9 नारायण एवं 9 प्रतिनारायण ये सब मिलकर 63 हुये । जो त्रिषष्ठि शलाकापुरुष कहलाते हैं । पद्मपुराण के अनुसार राम आठवें बलभद्र थे लक्ष्मण आठवें नारायण और रावण आठवें प्रतिनारायण थे। प्रतिनारायण अत्यन्त बलशाली व बुद्धिमान विवेकी सम्राट होता है, वह अपने बल से तीन खण्ड पृथ्वी को जीतकर अर्द्धचक्रवर्ती सम्राट बनता है और बहुत लम्बे समय तक सुखों का भोग करता हुआ निराबाधा राज्य करता है। उसके 18 हजार रानियां होती हैं और 16 हजार मुकुटबद्ध राजा उसकी सेवा में तत्पर रहते हैं।

ऐसे प्रतिनारायण को अपने बड़े भाई बलभद्र के सहयोग से जीतकर नारायण अर्द्धचक्रवर्ती सम्राट बनता है । नारायण की भी प्रतिनारायण से अधिक विभूति होती है । यह सब डॉ. शुद्धात्मप्रभा ने अपनी पुस्तक राम कहानी में विस्तार में लिखा है।

जैन मान्यतानुसार रावण राक्षस वंशी था, उसके दश सिर नहीं थे, एक ही था। किन्तु उसका नाम दशानन था। इसका भी अलग प्रसंग है। रत्नश्रवा के यहां बालक के जन्म के समय कई विचित्र घटनायें हुई। बहुत पहले मेघवाहन के लिये राक्षसों के इन्द्र भीम ने जो हार दिया था, हजार नागकुमार जिसकी रक्षा करते थे, जो बहुत कांतिमान था और राक्षसों के भय से इसे किसी ने नहीं पहना था। ऐसे हार को उस बालक ने अनायास ही हाथ से खींच लिया। बालक को मुट्ठी में हार लिये देख माता घबड़ा गई, उसने बालक के पिता को बुलाया, पिता ने यह दृश्य देखकर कहा यह अवश्य ही कोई महापुरुष होगा। मात ने निर्भय होकर वह हार उस बालक को पहना दिया। उस हार में जो बड़े-बड़े स्वच्छ रत्न लगे हुये थे उनमें असली मुख के सिवाय नौ मुख और भी प्रतिबिम्बित हो रहे थे इसलिये उस बालक का नाम दशानन रखा गया।

जैन मान्यता के पद्मपुराण के अनुसार दशानन का रावण नाम कैलाश पर्वत उठाते समय की घटना के कारण पड़ा था। मान्यतानुसार दिग्विजय के समय रावण बाली से युद्ध के लिये तत्पर हो गया था, इस घटना से बाली ने दिगम्बरी दीक्षा ले ली। एक बार रावण नित्यलोक की रत्नावली कन्या से विवाह करके सपरिवार आकाशमार्ग से लौट रहा था। मार्ग में कैलाश पर्वत के ऊपर उसका विमान रूक गया। अपने मंत्री से कैलाश पर्वत पर बाली मुनि तपस्या कर रहे हैं यह सूचना पाकर क्रोधित हो दशानन ने अपने विद्याबल से बाली सहित कैशला पर्वत उखाड़कर समुद्र में फेकना चाहा। पर्वत उठाया ही था कि बाली मुनि ने सोचा ऐसे तो इस पर बने अनेक जिनालय नष्ट

हो जायेंगे और वन्दना करने वाले मनुष्य व अनेक प्राणी मर जायेंगे। उन्हेंने अपने पैर के अंगूठे से पर्वत के मस्तक को दवा दिया, इससे दशानन अत्यंत व्याकुल होकर चिल्लाने लगा क्योंकि उसका शरीर कैलाश पर्वत से दबने लगा था। करुण चीत्कार करके रोने से वह दशानन रोवण-रावण के नाम से जाना जाने लगा। रावण की पत्नी मन्दोदरी की अनुनय पर बाली मुनि ने अपना अंगूठा शिथिल किया। बाल्मीकि रामायण के अनुसार शिवजी ने अपना अंगूठा दवाया था। शेष घटना लगभग समान है।

रावण में अनेक गुण होते हुये भी वह सीता पर मोहित हो गया और सीता का हरण कर लिया किन्तु उसका यह नियम था कि जब तक कोई स्त्री स्वयं नहीं चाहेगी तब तक वह उसे छुएगा भी नहीं। इसलिये उसने सीता को अनेक प्रलोभन दिये, बहुत समझाया पर सीता ने तो अन्न-जल भी त्याग दिया था। उल्लेख आता है कि बाद में रावण के परिणाम बदल गये थे, उसने सीता को वापिस करना चाहा किन्तु उसका बलशाली होने का अभिमान आड़े आ गया था और उसने कहा मैं राम को जीतने के बाद ही उन्हें सीता वापिस करूँगा और वह युद्ध में राम के हाथों मारा गया। जैन ग्रंथानुसार नारायण के द्वारा ही प्रतिनारायण मारा जाता है। इस नियमानुसार राम के सहयोग से लक्ष्मण के द्वारा रावण मारा गया।

कविता

हिन्दी सबकी प्यारी भाषा

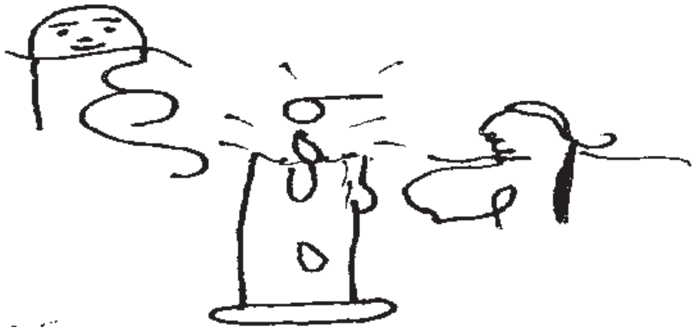

आत्मसम्मान की यह भाषा, स्वाभिमान की यह भाषा
उन्नति की यह सुंदर भाषा, संस्कार की यह परिभाषा
मौन तोड़ने खुशी मनाने,आगे उन्नति कदम बढ़ाने
विश्व मैत्री की यह भाषा, भटकन सारी रोके भाषा
सीधी सच्ची जीवन आशा, एक मात्र यह हिन्दी भाषा
अंग्रेजी से मोह तोड़ दो, माँ ममता से जोड़ा नाता
हिन्दी का कवि गीत ये गाता, हिन्दी देती सुख अरू साता
अंग्रेजी से शिक्षा पाना, खतरनाक रास्तों पर जाना
बच्चों पर यह भार बढ़ाती, संस्कार का साथ छुड़ाती
प्रेम और करूणा की भाषा, हिन्दी सबकी प्यारी भाषा

हमारे गौरव

महारानी माचिकब्बे

माचिकब्बे- महारानी की धर्मात्मा जननी माचिकब्बे दण्डाधीश नामवर्ग और उनकी भार्याचन्दिकब्बे के पुत्र प्रतापी दण्डनायक बलदेवी की पुत्री थी और उनकी जननी का नाम बाचिकब्बे था। पति मारासिंगय्य को छोड़कर माचिकब्बे का शेष समस्त परिवार परम जिन भक्त था। परिवार के सभी पुरुष कई पीडियों से प्रसिद्ध पराक्रमी वीर सेनानायक एवं सामन्त रहते आये थे। पुत्री शान्तलदेवी के निधन से माता माचिकब्बे को अत्यन्त दुख हुआ और वह संरगर से विरक्त हो गयी। अतः उन्हों ने श्रवणबेलगोल में जाकर अपने गुरुओं प्रभाचन्द्र, वर्धमान और रविचन्द्र की उपस्थिति में एक मास का अनशनू पूर्वक सल्लेखना व्रत लिया और समाधिमरण किया। उक्त मुनिराजों ने उस साहवी के तप-संयम एवं निष्ठा की भूरि-भूरि प्रशंसा की थी।

कविता

एकान्तवाद मिथ्या है

जिनवाणी के अभिप्रायों को,
जिनने तोड़ा खूब मरोड़ा
एकांतवाद छैनी से,
नित समाज के दिल को तोड़ा
काटा पिटा मन भर अपना,
चारित्र पथ को शून्य किया
क्रिया कांडी संत बताकर,
भोलों गुमराह किया
बन घुसपैठी दिगम्बर पथ में,
एकांतवाद का जाल बिछाया
छल फरेब धन का लालच दें, पंथवाद का ध्वज लहराया
अध्यात्म के चोले में, आये इक ठगिया बाबा
अपनी उनने सोनगढ़ में गढ़ी मड़ैसा भारत भर में मंत्र घुमाया
जादू चला न जब बाबा का भावी तीर्थंकर स्वांग रचाया
आत्मा आत्म गीत सुनाकर भोली जनता को भर माया॥

आचार्य विद्यासागर जी एवं युवा पीढ़ी

ब्र. सुनील भैया, जबलपुर

प्रायः कर देखा जाता है कि बालक, बालक से मित्रता करते हैं, वृद्ध वृद्ध की संगती करते हैं और युवा युवा का साथ पंसद करते हैं। परंतु इससे उलट आज लाखों युवा आचार्य श्री जी के दीवाने हैं अथवा यूँ कहें कि उनके लिये पागल हैं और क्यों न हों क्योंकि गुरुदेव भले ही 71 वर्ष के हो गये हों किन्तु वे कभी भी इतने बूढ़े नहीं होंगे की युवा न रह सकें।

गुरुजी के अंदर सौंदर्य देखने की अदभुत क्षमता है। जो विद्रूपताओं में भी खूबसूरती ढूंढ लेता हैं वो हमेशा खुश रहता है ऐसा शख्श कभी भी बूढ़ा नहीं हो सकता है। गुरुजी के समक्ष प्रातः से संध्या तक सैकड़ों शिकायतें और समस्यायें आती रहती हैं लेकिन वे कभी भी अपने तन को हताश नहीं होने देते हैं। कठिनाईयों और निराशा के घने तम के बीच भी वे अपना दिया जला ही लेते हैं। कहा भी है कि

माना कि घना अँधेरा हैं, मगर दिया जलना कहाँ मना है।

नवम्बर अंत 2004, तिलवारा की बात है ठण्ड बहुत तेजी से बद रही थी। गुरु जी जिस कक्ष में विराजमान थे उसमें 7-8 दरवाजे के आकार की खिड़कियां थी, सुबह के समय तो उस हॉल में ठण्ठ इतनी अधिक होती थी कि गर्मकपड़े पहनने वाले भी काँपने लग जाते थे। अनेक लोगों ने अपने स्तर से प्रयास किये पर वे असफल रहे। कई मुनिराजों ने गुरुजी से किसी अन्य कक्ष में शिफ्ट होने का निवेदन किया लेकिन सभी की अर्जी नामंजूर हो गई। एक दिन एक ब्रह्मचारी जी ने हंसी करते हुये कहा गुरु जी तिलवारा में एक भव्य विधान का आयोजन होना है, जिसमें बहुत सारे ब्रह्मचारी आने वाले हैं चूंकि यहाँ जगह की कमी है इसलिये ये हॉल आपको खाली करना पड़ेगा, तो गुरु जी कहते मैं भी तो एक ब्रह्मचारी हूँ क्या इस कक्ष के एक कोने में मुझे भी जगह नहीं मिल जायेगी। कोई और होता तो ब्रह्मचारी जी को इस टिप्पणी पर आंख दिखा सकता था, डांट सकता था लेकिन गुरुदेव माहौल खुशनुमा करना जानते हैं, कठिन शीत लहर के बीच भी वे **समओ सव्वथ सुदंरो लोए** को चरितार्थ कर लेते हैं।

सौंदर्य खोज लेने के इस हुनर में निपुण गुरुदेव की मनमोहक मुद्रा ही युवाओं में चुंबकीय आकर्षण पैदा करती है। एक बार आर्यिका श्री अंतरमति माताजी ने बतलाया था कि जब वे कॉलेज में अध्ययन कर रही थीं उसी दौर में गुरु जी का मढ़िया आगमन हुआ। उनके मन में आचार्य श्री जी के दर्शन का कौतुहल पैदा हुआ अतः सहेलियों के साथ गुरुजी के दर्शनार्थ वे मढ़िया पहुंची। प्रथम बार ही गुरुजी की भव्य अलौकिक मुद्रा के निष्काम अप्रतिम सौंदर्य को देखकर वे सदैव के लिये गुरु चरणों में समर्पित हो गयीं। ये कहानी मात्र एक साधक की ही नहीं है पूज्य समता सागर जी महाराज श्री सहित गुरु से जुड़े हर एक साधक का कमोवेश यही अनुभव रहा है।

गुरुजी के इस जादुई व्यक्तित्व से प्रभावित होकर आधुनिक भौतिक विलासवादी परिवेश में कामनाओं से बजबजाती जीवन शैली में युवा साधकों का इतना विशाल गुरुकुल बन गया। ये साधक अपना तो उत्थान कर ही रहे हैं साथ ही साथ देश के कोने कोने में पहुंचकर लाखों युवाओं

का पथ प्रशस्त कर रहे हैं।

पहले के युवा अपने से बड़ों की गुरुओं की बात सीधे सीधे स्वीकार कर लेते थे किन्तु आधुनिक माहौल में पले युवा किसी भी बात को बिना तर्क वितर्क के स्वीकार नहीं करते। आज के युवा वैज्ञानिक एवं व्यवहारिक बातों का जायदा महत्व देते हैं। गुरु जी भी किसी भी बात को कहने के पहले उसकी व्यवहारिकता पर विचार करते हैं। गुरुजी न केवल उसे तार्किक से हर एंगल से परखते हैं अपितु उसका प्रयोग भी करते हैं। गुरुजी प्रयोगधर्मिता के एक बहुत बड़े वैज्ञानिक हैं।

गुरुजी समर्पण को सफलता का मूल-मंत्र मानते हैं। किसी भी कार्य की सफलता के लिये पूर्ण समर्पण की जरूरत होती है। अनेक बुद्धिमान लोग समर्पण के बिना अपने कार्यक्षेत्र में असफल हो जाते हैं जबकि कुछ सामान्य बुद्धि वाले लोग समर्पण के कारण सफलता के क्षितिज को छू लेते हैं। गुरुजी ने पहले स्वयं इस मंत्र को अपने जीवन में अपनाया है।

गुरुजी से नेमावर में एक भाई ने पूछा आचार्य श्री जी आपने मात्र 4 वर्षों में इतना गहन अध्ययन कैसे किया। प्रश्न सुनते ही गुरुजी कहीं खो गये, शायद अपने गुरुजी की स्मृति में। गुरु जी से उस भाई ने बार बार निवेदन किया तो उन्होंने संकोच करते हुये बतलाया की 4 वर्ष में नही 2 वर्ष में, एक वर्ष तो भाषा के अध्ययन में लग गया और एक वर्ष गुरु जी की सल्लेखना के लिये समर्पित रहा। 2 वर्ष तो बड़ा लम्बा समय है ऐसा एवं इससे भी अच्छा अध्ययन 1 वर्ष में भी किया जा सकता है बशर्ते शिष्य और गुरु के बीच भगवान् भी न आये तो।

गुरु जी का यह उत्तर कितना जीवंत और व्यवहारिक है। उन्होंने ऐसे समर्पण का प्रयोग अपने जीवन में किया और अब इस युवा पीढ़ी को यह अमूल्य धरोहर सौंप रहे हैं। यही कारण है कि आई आई टी जैसे संस्थानों से शिक्षित, मल्टी नेशनल कंपनी में काम करने वाले एवं अमेरिका जैसे देश में सेवारत युवा भी आज चरखा चला रहे हैं। इतना ही नहीं अनेक सी.ए., वकील, डॉक्टर, इंजीनियर, भी आपके एक इशारे की प्रतीक्षा में खड़े हुये हैं।

आज का युवा सोचता है कि-

जिंदगी की असली उड़ान अभी बाकी है, जिंदगी के कई इम्तहान अभी बाकी है।
अभी तो नापी है मुट्ठी भर जमीं हमने, अभी तो सारा आसमान बाकी है।

उसे लगता है यदि एक रिक्शेवाले का बेटा आई.एस. बन सकता है एक चाय बेचने वाला प्रधान मंत्री बन सकता है और एक गरीब धीरू भाई अम्बानी जैसा बन सकता है तो मैं क्यों नहीं? अपने उद्देश्यों की पूर्ति के लिये वह लीक से हटकर सोचता है, वह रिस्क लेता है, चीजों और परिस्थितियों को आब्जर्व करने का उसका एक अलग तरीका होता है। युवा पीढ़ी के सोचने के इस ढंग से गुरुजी ने केवल परिचित हैं बल्कि उनके जीवन में भी ये सारे गुणधर्म विद्यमान हैं। इसलिये युवाओं के लिये उनका कहना है कि जब हौसला बना लिये ऊँची उड़ान का फिर देखना फिजूल है कद आसमान का।

आजकल एक इंटरव्यू का वीडिया वॉयरल हो रहा है। एक युवा नौकरी के लिये इंटरव्यू देने पहुँचता है, एच.आर कहता है राईट समथिंग, वह युवक जाँव लिख देता है। उसका

अकादमिक रिकॉर्ड बहुत अच्छा होता है लेकिन उसे एच.आर, रिजेक्ट कर देता है फिर दूसरा युवक आता है इसी प्रश्न के उत्तर में वह। आई.लव.माय कम्पनी लिखता है उसका भी चयन नहीं होता। ऐसे करते करते बहुत सारे युवकों को एच.आर मना करता जाता है तब एक और युवक आता है उससे भी वहीं प्रश्न की राईट समथिंग, वह युवा समथिंग ही लिख देता है। इस युवक ने 4 वर्ष की डिग्री 6 वर्ष में पूरी की थी लेकिन सहज जवाओं से एच.आर. खुश होकर उसे जॉब पर रख लेता है।

गुरुजी के शिष्यत्व स्वीकार करने के लिये भी ऐसे ही बड़ी-बड़ी साधना करने वाले चर्यावान और बुद्धिमान व्यक्ति आते हैं लेकिन उनके निरीक्षण की पद्धति बहुत अलग है। बुद्धिमान रह जाते हैं और भोले भाले लोग उनकी चरण छाँव में स्थान पा जाते हैं। एक दिगम्बर आचार्य द्वारा गौशालाओं के लिये प्रेरणा और आशीर्वाद देना साधुओं और विद्वानों को अटपटा लगता है किन्तु यह उनकी करुणा की अभिव्यक्ति का लीक से हटकर एक अलग तरीका है। श्रमण संस्कृति को संरक्षित और संवर्धित करने की पवित्र भावना के कारण वे अहिंसा बैंक, अस्पताल और मांस निर्यात विरोध आदि कार्यों के लिये जब युवाओं को प्रेरित करते हैं तो कितनी उँगलियाँ उनकी तरफ उठती हैं लेकिन गुरुजी का बिल पावर बहुत स्ट्राँग है। गुरुजी किसी की टीका टिप्पणी पर ध्यान नहीं देते, वे सोचते हैं कि

उम्र जाया कर दी लोगों ने, औरों के वजूद में नुक्स, निकलते निकलते
इतने खुदा को तराशा होता तो फरिस्ता बन जाते।

गुरुजी को कोई फरिस्ता कहते हैं कोई कलिकाल तीर्थंकर कहते हैं तो कोई चलते फिरते सिद्ध कहते हैं। ये भक्तों की गुरुजी के प्रति श्रद्धा है लेकिन सैद्धांतिक दृष्टिकोण से गुरुजी भगवान नहीं है। पर आश्चर्य तो ये है कि हमारे जैसा ही हीन संहनन, वैसा ही प्रतिकूल वातावरण एवं कलिकाल की नैतिक पतनाभिमुख भौतिक संस्कृति के होने पर भी जगत् को विस्मित कर देने वाली आपकी साधना की ऊँचाई स्तुत्य है, वंदनीय है। जगत पूज्य गुरुदेव अपने इन्हीं अनूठे गुणों के कारण से आज की युवा पीढ़ी के आकर्षण के क्रेन्द्र बने हुये हैं।

स्वामी विवेकानंद जी कहना है कि जो फूल बिलकुल ताजे हैं, जो मसले नहीं गये हैं और अभी सूंघे भी नहीं गये हैं, वही फूल भगवन के चरणों में अर्पित किये जाते हैं इसलिये युवाओं! तुम्हारे सुनहरे भविष्य को निश्चित करने का सही सही समय है। युवावस्था में नये जोश और उमंग के साथ काम कर अपने भाग्य का निर्माण करो तथा एक महान ध्येय को पाने के लिये अपने यौवन को अपने लिये समर्पित कर दो।

गुरुजी भी मानते होंगे कि बालकों के पास सोच नहीं होती और वृद्धों के पास उम्मीद नहीं होती इसलिये उन्होंने हमेशा युवाओं पर भरोसा जताया है। गुरुजी इस युवा पीढ़ी को प्रशासन के क्षेत्र में आने के लिये प्रेरित करते रहते हैं। गुरु जी की इस सोच के पीछे एक मजबूत कारण है कि भारत प्राकृतिक सम्पदा एवं नैतिक संस्कारों के दृष्टिकोण से समृद्धशाली देश है किन्तु आज विश्व समुदाय में आधुनिक विकास के मामले में बहुत पिछड़ा है, जिसका एक प्रमुख कारण भ्रष्टाचार है।

गुरु जी ने इस सत्य को पहनाकर प्रशासनिक क्षेत्र में जाने के लिये संस्कारी युवा पीढ़ी को दिशा निर्देश प्रदान किया। जिससे आज हमारों युवक युवतियां उच्च प्रशासनिक पद पर आसीन हो चुके हैं । गुरुदेव ने इन युवाओं के अंदर इतनी ऊर्जा भर दी है कि वे अपने उद्देश्यों से विचलित नहीं होते हैं तो अगले कुछ वर्षों में भारत की तस्वीर कुछ और ही होगी। ये अधिकारी भी अपने लक्ष्य के लिये दृढ़ संकल्पित हैं। चाहे कितनी भी प्रतिकूल परिस्थिति आ जाये पर हार नहीं मानते हैं।

इनके लिये श्री अटल बिजहारी वाजपयी जी ये पंक्तियाँ प्रासंगिक है कि

क्या हार में क्या जीत में, किंचित नहीं भयभीत में।
वरदान नहीं मांगूगा, हो कुछ भी पर हार नहीं मानूँगा।

आज हर माँ-बाप अपने बच्चे को अधिकारी, डॉक्टर, इंजीनियर आदि बनाना चाहता है कोई उन्हें अच्छा नागरिक बनने के लिये प्रेरित नहीं करता। गुरुजी एक बार बीना बारहा में बड़े गौर से डिक्शनरी देख रहे थे मैंने पूछा आचार्य श्री जी कुछ खास विषय है क्या ? गुरु जी ने कहा ग्रेजुएट का अर्थ देख रहा हूँ। ग्रेजूएट का मतलब क्रमिका इंजीनियरिंग, विज्ञान आदि की डिग्रियों में मात्र यांत्रिक ज्ञान होता है किन्तु इसमें युवाओं के व्यक्तित्व निखार के लिये कोई स्थान नहीं है। इसलिये आज इस युवा पीढ़ी के अनेक सदस्य कभी कभी आर्थिक मजबूरियों के कारण से अथवा कभी अपने अव्यवहारिक लक्ष्य में असफल होने के कारण से अनैतिक आचरण की ओर बढ जाते हैं ।

यह युवा पीढ़ी कभी गुमराह ही न हो इस हेतु गुरुजी ने शिक्षा के स्तर में सुधार की जरूरत पर महत्व दिया है। जिस तरह मैकाले ने शिक्षा पद्धति में परिवर्तन कर भारत को बहुत समय तक गुलाम बनाये रखा था, उसके विपरित भारतीय समाज एवं आने वाली पीढ़ी के उन्नयति के लिये गुरुजी ने शिक्षा समीचीनीकरण करते हुये प्रतिभास्थली विद्यालय इस राष्ट्र को समर्पित किया। प्रशिक्षित एवं सुसंस्कृत शिखकों के द्वारा स्थानीय भाषा में आवश्यक विषयों के साथ-साथ भारतीय संस्कृति के उच्च आदर्शों की शिक्षा दी जाये, उन्हें इस देश समाज, परिवार और अपने निजी जीवन का अर्थशास्त्र दिखाया जाये ,भारतीय विधि एवं न्यायिक व्यवस्था से परिचय कराया जाये तो इस युवा पीढ़ी की सोच में चमत्कारी परिवर्तन देखने को मिलेंगे।

यदि प्रतिभास्थली मॉडल को सम्पूर्ण भारतवर्ष के बालक-बालिकाओं के लिये लागू कर दिया जाये तो निःसंदेह अगले 15-20 वर्षों में न केवल अपराध, अलगावाद, आतंकवाद बेरोजगारी आदि की समस्याएं नियंत्रित हो जायेंगी बल्कि विश्व के मानव विकास मानदंड में भी ऊँची छलांग देखी जा सकेगी।

धर्म के के बारे में गुरु जी की सोच बहुत विस्तृत है। आप मात्र जैनियों के बारे में ही नहीं सोचते अपितु समूचे राष्ट्र के विकास के लिये सोचते हैं । सुना था कि प्रधानमंत्री श्री मोदी जी ने गुरुजी से मिलने के उपरांत कहा था- मैंने सोचा था कि ये बाबा भी किसी मंदिर या प्रोजेक्ट के लिये जमीन या कुछ सुविधाओं की मांग करेंगे लेकिन नहीं इन्होंने चर्चा की कि

1. देश के युवाओं को ज्यादा से ज्यादा रोजगार कैसे मिले ?
2. गरीबी का उन्मूलन कैसे हो ?
3. किसानों की आत्महत्यायें कैसे रूकें ?
4. जंगलों एवं पर्यावरण की सुरक्षा कैसे हो ?

इतना ही नहीं इन समस्याओं के कुछ बेहतरीन समाधान भी गुरु जी ने सुझाये थे।

1. श्री हुकुमचंद जी सावला के अनुसार गुरु जी ने कहा कि रेलवे कि पटरियों के दोनों तरफ खाली पड़ी लाखों हेक्टयेर जमीन को यदि कृषि कार्यों के उपयोग में लाया जाए तो लाखों कृषकों को आमदनी का अच्छा साधन मिल जायेगा।

2. गुरु जी का दूसरा सुझाव था कि यदि कुटीर उद्योगों में हतकरघा जैसे उपक्रम को प्रोत्साहन दिया जाये तो इससे करोड़ों युवाओं को जीविका का न्यूनतम साधन प्राप्त हो जायेगा।

इस तरह युवा पीढ़ी और सम्पूर्ण भारतवर्ष के प्रति गुरुजी की करुणा के बारे में जितना भी कहा जाये बहुत काम है। गुरुदेव ने इस पीढ़ी को वो सब दिया जो किसी देश का मुखिया भी नहीं दे सकता है। अब समय है गुरुजी के संकेतों को समझ कर उसे क्रियान्वित करने का। गुरुजी के अवदानों से उपकृत यह सृष्टि सदैव उनकी ऋणी रहेगी।

इतना सब कुछ देने के उपरांत भी गुरु जी कर्तव्य भाव से बहुत दूर हैं । वो हम सब के बीच में रहते जरूर हैं पर वे जगत् से अजनबी बने हुये हैं।

निदा फाजली का एक शेर गुरुजी पर प्रासंगिक है।

बदलें न अपने आप को जो थे वही रहें, मिलते रहे सभी से मगर अजनबी रहें।

संयम साधना के 50 वर्षों में साधना की पराकाष्ठा को छूने वाले हैं गुरुदेव इतनी अनुकम्पा करना कि मेरा हृदय कभी भी आपके चरण कमलों की सन्निधि से दूर न रहे। मेरी आत्मा के एक एक प्रदेश पर आपकी ही छवि अंकित रहे।

ज्ञानदान कर पुण्यार्जित करने का सौभाग्य प्राप्त करें

जैन न्याय के पितामह और जैन दर्शन के अद्वितीय आचार्य तथा जैन धर्म की ध्वजा को विश्वव्यापी बनाने वाले आचार्य अकलंक देव के समग्र साहित्य को स्थाई रूप से सुरक्षित करने के लिये ताम्रपत्र पर अंकित करने की योजना समग्र जैन समाज के सहयोग से बहुत कुछ सफलता की ओर बढ़ चुकी है 2000 पृष्ठों की अकलंक भारती के कुछ ही पृष्ठ शेष हैं आइये 501 रूपयो प्रति पृष्ठ दान करके आप भी जिनवाणी सुरक्षा का लाभ अर्जित कर सकते हैं ।

ज्ञानदान कर पुण्यार्जित करने का सौभाग्य प्राप्त करें

इस योग के महान आचार्य श्री 108 विद्यासागर जीमहाराज का 50वाँ आचार्य पदारोहण दिवस बस कुछ ही महीनों में आ रहा है उसे चिरस्थाई बनाने के लिये संस्कार सागर ने 50 ग्रंथों के प्रकाशन की एक महत्वाकांक्षी योजना तैयार की है जिसमें आचार्य श्री के संस्मरण एवं समग्र प्रवचनों का संकलन होगा तथा वाचनाओं का साक्षात्कार होगा तथा पूर्ववर्ती महान आचार्यों की रचनायें भी प्रकाशित की जायेंगी और एक ग्रंथ प्रकाशित करने की राशि 2 लाख 51 हजार होगी आप भी एक ग्रंथ प्रकाशित करके आचार्य पदारोहण वर्ष को अपने परिवार के लिये चिरस्मरणीय बना सकते हैं ।

सम्पर्क : ब्र. जिनेश मलैया, प्रधान संपादक संस्कार सागर, फोन पे नम्बर-8989505108

हृदय रोग भागे, जब महिलायें जागे

❊ जिनेन्द्र कुमार जैन (इन्दौर) मो. 9977051810 ❊

पुराने समय में हृदय रोगों की संभावना 60-65 उम्र के व्यक्तियों में होती थी किन्तु आज देश में हृदय रोगियों का प्रतिशत बढ़ रहा है जिसमें युवा वर्ग भी इस दौड़ में पीछे नहीं है। पहिले तो पुरुष में हृदय रोग का प्रतिशत काफी ज्यादा था किन्तु महिलाओं में आधुनिकता और दोड़ भाग बदली जीवनशैली ने पुरुषों से आगे पहुँचा दिया है। जीवन की डोर उसके हृदय से बंधी है, जब तक यह स्वस्थ रहता है तो जीवन निरामय चलता रहता है। हृदय रोगी बनते ही अनेक दूसरी बीमारियाँ अपना स्थाई घर बना लेती है। हृदय रोगों के प्रति जागरुकता बढ़ाने के लिये हर वर्ष 24 सितम्बर को विश्व हृदय दिवस मनाया जाता है।

हृदय बंद मुट्ठी के आकार का होता है जो शरीर के वक्ष के मध्य कुछ बायीं और स्तन की अस्थि के नीचे होता है। जो हीरे सा कठोर व कांच के समान नरम भी होता है। हृदय का औसतन भार महिलाओं में 250 से 300 ग्राम और पुरुषों में 300 से 350 ग्राम तक होता है। हृदय, हृदयपेशी Cardiac Muscles से बना होता हे जो अनैच्छिक पेशी उत्तक हैं जिसमें विशेष शक्ति स्वचलित लयबद्ध सकुंचन की होती है व नर्वस सिस्टम से पूर्ण स्वाधीन होती है। इस कार्य को मायोजनिक कहा जाता है। हृदय तीन तरह की पेशियों के अस्तर से ढंका रहता है। (1) पेरीकार्डियम यह बाह्य आवरण (2) मायोकार्डियम मध्य पेशीतह (3) एण्डोकार्डियम या भीतरी तह। बाह्य व मध्य तह के बीच में फ्लूड (द्रव्य) भरा रहता है जो हृदय को चिकनापन व मांसपेशियों की मरम्मत व पोषण का कार्य करता है।

हृदय हमारे शरीर का इंजन होता है जो एक विशाल पम्पिंग अंग तरह कार्य करते हुये पूरे शरीर में शुद्ध रक्त प्रवाह का प्रबंध करता है। धमनियाँ द्वारा रक्त व ऑक्सीजन की पूर्ति होती है जिससे शरीर का हर अंग कार्य करता है व शिरायें शरीर से दूषित रक्त एकत्रित करके शुद्ध करने के लिये हृदय में लाती है। 1. हमारे शरीर में रक्त हर दिन 1,92,000 किमी. का सफर करता है। 2. एक स्वस्थ शरीर में औसतन 5 से 6 लीटर रक्त होता है जो हर 20 सैकन्ड में एक बार पूरे शरीर में चक्कर काट लेता है। 3. एक स्वस्थ मनुष्य का हृदय हर दिन 1,00,000 बार धड़कता है एक मिनिट में 72-80 बार धड़कता है। एवं 1800 गैलम रक्त पम्प करता है। 4. हृदय का इलेक्ट्रिक सिस्टम से विद्युत पैदा होती है जिससे 250 वॉट का बल्ब 10 मिनिट तक जल सकता है।

हृदय तनाव, भावनात्मक संवेदनाओं, सुख दुख के क्षणों में मस्तिष्क के साथ संतुलन बनाकर शरीर की गतिविधियों की आवश्यकतानुसार उम्र भर शरीर में रोगों में भी निर्वाध कार्य करके जीवनभर गुणवत्ता पूर्वक कार्य करने की क्षमता रखता है, यदि हृदय की सेहत का ध्यान रखा जाये।

हृदय की धड़कन अनियंत्रित होने से शरीर की क्षमता, ऊर्जा कमजोर होने लगती है जिससे शरीर संतुलन पर असन पड़ने लगता हे जिससे हृदय रोगों की संभावना होने लगती है जिसका प्रमुख कारण मोटापा, शारीरिक गतिविधियों की कभी, तनाव, असंतुलित खानपान,

अनियमित जीवन शैली, भावनात्मक वेदना महिलाओं में मेनोपॉज के बाद हार्मोन असंतुलन, शराब व धूम्रपान, केलोस्ट्राल बढ़ना सुगर, सांस रोग, अधिक व कम रक्तचाप, दिल बैठना, नाड़ी की गति में परिर्वतन, कब्ज व गैस बनना, मोबाईल का अधिक उपयोग करना

95% व्यक्तियों में हृदय रोग खराब जीवन शैली से होती है यदि 30 वर्ष की उम्र से कुछ नियमों का पालन व सावधानियाँ रखने से खतरे को कम कर सकते हैं। इन चार बातों को ध्यान रखना बहुत ही जरूरी हैं। **MEAD- 1. एम- (मेंटल रिलेक्सन)**- हंसना, प्राणायाम और प्रार्थना के जरिये मन को शांत रखना, गुस्सा कम करना। **2.ई (एक्सरसाईज)**- नियमित रुप से 30-45 मिनिट स्वयं के लिये निकाले जिसमें सैर करना, व्यायाम, योग, साइकिल चलाना, सीढिया चढ़ना उतरना, डांसिंग करना। **3. ए (अवाइडएक्सिन)**- किसी तरह के नसे से दूर रहना जैसे धूम्रपान, अल्कोहल चाय काफी आदि। **4. डी (डाइट)**- भोजन में नमक कम से कम आधा चम्मच दिन भर में उपयोग करें व सेंधा नमक का उपयोग करना। शक्कर का 20 ग्राम उपयोग करना, ऊपर से शक्कर व नमक नहीं मिलावें क्योंकि किड़नी को अधिक कार्य करना पड़ता है जिससे हृदय पर दबाव पड़ता है। हरी सब्जियाँ, मौसमी फल, चौकोर युक्त गेहूँ का आटा, मलाई रहित दूध व छाछ का उपयोग नियंत्रित संतुलित भोजन करना, सोने के 3-4 घंटे पूर्व भोजन कर लेना चाहिये बादाम, अखरोट का नियमित सेवन। भोजन में प्रतिदिन 15 मिलीलीटर से अधिक तेल का उपयोग नहीं करना। कढाई आदि के तले हुये तेल का पुनः उपयोग न करें व सब्जी आदि में उपयोग नहीं करें, पुनः तेल गरम करने से ट्रांसफेट बढ़ता है जो हृदय रोग का कारण अवश्य ही बनता है।

इसके अतिरिक्त वजन नियंत्रण रखना व जिन परिवारों में ब्लड प्रेशर, हृदय रोग केलोस्ट्राल, किडनी रोग आदि ठाई रिस्क श्रेणी में आते हैं उन्हें वर्ष में एक बार जांच करना चाहिये।

अधिकांश महिलाओं में भ्रम रहता है कि दिन भर खूब काम करते हैं इसलिये उन्हें नियमित सैर करना, व्यायाम रोग की जरूरत नहीं है, लेकिन यह सच नहीं है। रोजमर्रा के कामों इसे सम्मिलित करने स्वस्थ रहने के लिये समय अवश्य निकालना चाहिये। घर से निकलना असंभव हो तो फिट रहने के लिये घर से बाहर के कार्य जैसे सामान खरीदी, बच्चो को स्कूल ले जाना आदि, सब्जी आदि छोटे दो कार्य पैदल चलकर करें, घर के बगीचे में कम, छत पर कसरत के उपकरणों का उपयोग, टी.वी शो मोबाईल के समय में कटोती करके दृढ़ इच्छा शक्ति विकसित करके समय निकालना चाहिये।

एक अध्ययन अनुसार 73% महिलायें स्वास्थ्य के प्रति लापरवाह रहती हैं, जिनमें 27% डॉक्टर के पास जाने से बहाना बनाती रहती है, 20% जाने से व जांच कराने में कोई बीमारी न निकल जावे, 17% घरेलू इलाज व नुक्से अपनाने लगती हैं, 9% डॉक्टर के पास जाकर भी झिझकती है। डॉक्टरों के अनुसार वर्तमान में कोविड 19 के कारण 25-40% तक हृदय रोगों का खतरा बढ़ गया है। महिलायें अपने में आत्म विश्वास जगाते हुये स्वयं के लिये, परिवार के लिये, देश की उन्नति के लिये स्वस्थ होना आज की नितांत आवश्यकता है। आपके जीवन में सुख शांति समृद्धि मिलती रहेगी आपका स्वस्थ हृदय हमेशा साथ देता रहेगा।

हास्य तरंग

1. पति-चिल्लाते हुये आज फिर बैंगन की सब्जी, जानती हो बैंगन खाने से व्यक्ति अगले जन्म में गधा बनता है। पत्नी- मेरी इसमें गलती क्या है ? यह बात तो तुम्हें पिछले जन्म में सोचना चाहिये थी।

2. एक महिला अपने पति को लेकर मानसिक चिकित्सक के पास पहुंची और बोली पता नहीं इन्हें क्या शंका हो गई है कि ये वजन तौलने की मशीन हैं। चिकित्सक ने महिला के पति से कुछ प्रश्न किये पर कोई उत्तर नही दिया, उन्होंने महिला से पूंछा ये बोलते भी नहीं है ? महिला कैसे पहिले इनके मुँह में पांच रूपये का सिक्का तो डालिये ?

3. पति पत्नी में झगड़ा हो जाने से आपस में बोलचाल बंद थी। क्षमावाणी पर्व पर दोनों को अपनी गलती का अहसास हुआ तो दोनों ने मंदिर में जाकर पश्चाताप किया। पति ने क्षमा मांगते हुये मैं तुमसे कभी झगड़ा नहीं करूंगा यदि किया तो मुझे मौत आ जायें, तभी पत्नी ने क्षमा मांगते हुये कहा यदि मैंने झगता किया तो सबसे पहिले मैं विधवा हो जाऊँ।

4. गणेश भगवान अपने भक्त की कोरोना काल में भी अत्याधिक भक्ति से प्रसन्न होकर कहते हैं भक्त मांग लो वर। भक्त नहीं-नहीं प्रभु आप भी कन्फ्यूज हैं मुझे तो वधु चाहिये।

5. भावित स्कूल खुलते ही खूब मार पिटाई करके घर आया। उसकी मम्मी ने कहा खरोचों से भरा चेहरा कर गुस्से में बोली तुमने दूसरे लड़के से लड़ाई की, मैंने तुम्हें कितनी बार समझाया था, जब कभी लड़ाई झगड़े की स्थिति बने तो कुछ करने से पहिले पचास तक गिनती गिना करो। मालूम है, लेकिन दूसरे लड़के की मम्मी ने उसे सिर्फ बीस तक गिनती गिनने के लिये कहा था।

संकलनः जिनेन्द्र कुमार जैन, गौरीनगर इंदौर

संस्कार खेल

शरीर विकास के कुछ खेल

✻ धर्मशाला

खिलाड़ियों की संख्या- 15-20

खेल वर्ग- मंडल का खेल

खेल विधि- एक मंडल में 15-20 खिलाड़ी रहेंगे। सीटी बजने पर सब एक-दूसरे को किसी भी प्रकार बाहर धकेलने का प्रयास करेंगे। जो सबसे अन्त में बचेगा वह विजयी होगा। अर्थात् धर्मशाला के एकमात्र कमरे में रहने का अधिकारी होगा।

✻ चील झपट्टा

खिलाड़ियों की संख्या- 10-30

खेल वर्ग- मंडल का खेल

खेल विधि- 1. एक गोले के बीचो-बीच रुमाल रखें गे। 2. खिलाड़ी घूमना शुरु करेंगे। 3. शुरु/रेडी कहने पर कोई भी एक खिलाड़ी रुमाल उठायेगा और अपने स्थान पर जाने की कोशिश करेगा। 4. यदि दूसरा खिलाड़ी पहले को छूने को कोशिश करेगा।

जीत-हार- यदि पहले खिलाड़ी को दूसरा खिलाड़ी छू लेगा तो पहला खिलाड़ी हारा हुआ माना जायेगा।

लाभ- इस खेल से सूझबूझ बहुत बड़ी उपलब्धि होती हे।

✻ जय जिनेन्द्र

खिलाड़ियों की संख्या- 15-20

खेल वर्ग- मंडल का खेल

खेल विधि- एक स्वयंसेवक **अ** मंडल के बाहर दोड़ते हुये किसी **ब** की पीठ को स्पर्श करेगा। इस पर **ब** तेजी से विपरीत दिशा में दौड़ेगा जहाँ ये दोनों मिलेगें वहाँ हाथ जोड़कर जय जिनेन्द्र जी करेंगे तथा फिर दौड़ने लगेंगे। **ब** के स्थान पर दोनों में से जो पहले पहुँचेगा। वह विजयी होगा। पराजित खिलाड़ी अब खेल शुरु करेगा।

बाल कहानी

इंसानियत का क्या मोल

दोपहर के 12 बज रहे थे। ब्रिटेन में सूरज स्कॉटलैण्ड की जमीन पर अपना प्रभाव दिखा रहा था। लेकिन प्रभाव इतना अधिक नहीं था कि लोग अपनी ठंड मिटा सके या किसान धूप में अपने शरीर की सिकाई कर सकें। गुनगुनी धूप में एक फ्लेमिंग नाम का किसान भी अपने खेत में काम कर रहा था। हथियारों को लेकर मिट्टी को उपजाऊ बनाने के लिये एवं अधिक पानी को खेत से बाहर निकाल रहा था, उसी समय कहीं से चीखने की आवाज आयी उसने सोचा कोई न कोई विपत्ति में फंस गया है। फ्लेमिंग ने अपना काम छोड़ा, हथियार जमीन पर रखे और जहाँ से चीखने की आवाज आ रही थी उस तरफ दौड़ पड़ा। फ्लेमिंग ने देखा एक बच्चा दलदल में कमर तक धस चुका है। वह निकलने का प्रयास कर रहा है। फ्लेमिंग ने एक झाड़ की डाली का सहारा लिया और वह दलदल में फंसे बच्चे तक पहुँच गया। फ्लेमिंग किसान ने बच्चे को बहुत प्रयास करने के बाद सुरक्षित वाहर निकाल दिया बच्चे के बाहर निकलते ही फ्लेमिंग ने उसे नहा धोकर साफ सुथरा कर घर भिजवा दिया।

दुसरे दिन एक चमचमाती कार फ्लेमिंग की झोपड़ी के सामने खड़ी हो गयी। उसमें से एक सज्जन उतरे जिन्होंने फ्लेमिंग से कहा कि तुमने मेरे बेटे की जान बचायी हैं। और उसे कल दलदल से बाहर निकालकर साफ सुथरा करके मेरे घर तक भिजवाया है। इससे खुश होकर में तुम्हें कुछ इनाम देना चाहता हूँ, किसान फ्लेमिंग ने कहा कि मैंने कोई ईनाम के लिये नहीं अपितु इंसानियत के लिये अपना कर्तव्य निभाया है। तब रिचर्ड चर्चे ने फ्लेमिंग के लड़के को देखा और कहा कि मैं तुम्हारे इस बेटे को पड़ाने लिखाने का पूरा खर्च उठाऊंगा और इसे पड़ा लिखा कर योग्य बनाऊंगा रिचर्ड चर्च ने फ्लेमिंग के बेटे का पढ़ाने का पूरा वादा निभाया और यही फ्लेमिंग का बेटा पेनीसिलिन का आविष्कारक महान वैज्ञानिक बना महान वैज्ञानिक अलकजेंडर फ्लेमिंग ने दुनिया में नाम माया तथा दलदल में फंसा बेटा विस्टन चर्चेल 2 बार ब्रिटेन का प्रधानमंत्री बना।

संस्कार गीत

मोबाईल से दूर ही रखना

मम्मी पापा तुम हो मेरे सच्चे भाग्य विधाता
मोबाईल से दूर ही रखना ओ जीवन निर्माता

1.

मोबाईल के खेल हमें तो हिंसक क्रूर बनाते
करूणा प्रेम से दूर करके रिस्तों को विसरासे
नन्हें हाथों में मत देना मोबाईल हो ! दाता

2.

मैदानी जो खेल सदा तन मन विकसित करते
मन की कुंठा दूर मिटाकर सद्भावों से भरत
भारत की संस्कृति पहचाने मानवता समझाता

3.

प्रतिस्पर्धा के प्रवाह में मुझको बहा न देना
न्याय और संवेदन पथ से मुझको हाय न देना
राष्ट्र प्रेम की भरो भावना बन जा जीजा माता

बाल कविता

सुख का मंत्र

विद्यासागर का गुरु मंत्र
सब धर्म अहिंसा सुख का मंत्र
गौशाला में सेवा करना
दया धर्म का पालन करना
सत्य अहिंसा साख बढ़ाई
हथकरघा से करो कमाई
प्रतिभा स्थली ज्ञान का मंदिर
महिला शिक्षा साधन सुन्दर
युगदृष्टा गुरुवर की भाषा
हिन्दी से उत्थान की आशा
गुरुवर के सब है अमोघ मंत्र
धर्म अहिंसा सुख का मंत्र

समाचार

दीक्षायें

ईडर- गणिनि आर्यिका शुभमति माताजी के करकमलों से ब्रह्मचारिणी पुष्पा बहन पोपटलाल को आर्यिका दीक्षा 7 सितम्बर 2021 को दी गई । जिनका नाम आर्यिका श्री सम्मेदमति माताजी रखा गया।

कचनेर (महाराष्ट्र)- आचार्य श्री मयंकसागर महाराजजी के करकमलों से श्री साहू जी अम्बड़ महाराष्ट्र को मुनि दीक्षा 31 अगस्त 2021 को गाढीवाट कचनेर महाराष्ट्र में दी गई जिनका नाम मुनि श्री लब्धिसागर जी रखा गया।

समाधिमरण

ईडर- आर्यिका श्री शुभमति माताजी के ससंघ सान्निध्य में क्षुल्लिका श्री सुज्ञानमति माताजी का समाधिमरण 7 सितम्बर 2021 को ईडर गुजरात में हुआ।

ईडर- आर्यिका श्री शुभमति माताजी के ससंघ सान्निध्य में आर्यिका श्री सम्मेदमति माताजी का समाधिमरण 8 सितम्बर 2021 को ईडर गुजरात में हुआ।

महेशवाडी कर्नाटक- आचार्य सुबल सागर जी के शिष्य आचार्य देवसेन महाराज का समाधिमरण 24 सितम्बर 2021 को दोप. 2.45 बजे महेशवाड़ी कर्नाटक महाराष्ट्र में मुनि श्री सुपार्श्वसेन महाराज के ससंघ सान्निध्य में हुआ।

कचनेर (महाराष्ट्र)- आचार्य श्री मयंकसागर महाराज जी के ससंघ सान्निध्य में उनके ही शिष्य मुनि श्री लब्धिसागर महाराज जी का समाधिमरण 31 अगस्त 2021 को गाढीवाट कचनेर महाराष्ट्र में हुआ।

फर्दापुर (महाराष्ट्र)- आचार्य श्री कल्पवृक्षनंदी महाराज का समाधिमरण कलशोदय तीर्थ फर्दापुर महाराष्ट्र में 25 सितम्बर 2021 को मुनि श्री बाहुबली सागर महाराज जी के ससंघ सान्निध्य में हुई।

दशलक्षण महामंडल विधान एवं विश्वशांति महायज्ञ सम्पन्न

इंदौर- श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मंदिर विद्यासागर नगर इंदौर में दिनांक 10 से 19 सितम्बर 2021 तक दशलक्षण महामंडल विधान एवं विश्वशांति महायज्ञ सम्पन्न हुआ । जिसमें **मुख्य कलश स्थापितकर्ता-** वीरेन्द्र सुनीता जैन, डी.के. माला जैन (डी.एस.पी), अर्पण निकीता जैन, अरविन्द रश्मि जैन, राजेन्द्र जैन जैसीनगर, सुधीर बांझल, राजेन्द्र कंठाली, विनोद मंजु जैन, नीरज गरिमा जैन, श्रीमती शीला जैन, श्रीमती सारिका संजय जैन, श्रीमती शोभा सिंघई **अखंड दीप स्थापितकर्ता-** अनिल मीना पांडया, प्रियदर्शी कल्पना जैन, आशीष निधि जैन, **महायज्ञ नायक-** नरेन्द्र कमलेश जैन जयपुर, **सौधमेन्द्र-** धर्मेन्द्र नेहा जैन मंडावरा, **कुबेर इन्द्र-** गौरव शचि जैन, **यज्ञनायक-** विजयश्री मनीष जैन बीना वाले, विमल मीना गंगवाल, **ध्वजा रोहणकर्ता-** भरत रितु जैन, **ईशानेन्द्र-** मनोज सुनीता जैन, **सनत कुमारेन्द्र-** ज्ञानचंद-चंदादेवी जैन, **माहेन्द्र-** सुरेश अनिता जैन, **ब्रह्मेन्द्र-** सुभाष ज्योति गोधा, **ब्रह्म प्रत्येन्द्र-** दीपक मीना जैन, **लांतवेन्द्र-**

अभिषेक पूजा जैन गढ़ाकोटा, **लान्तव प्रत्येन्द्र-** राजकुमार समता जैन, **शुकेन्द्र-** जितेन्द्र संगीता जैन, **शुकप्रत्येन्द्र-** अभय सपना जैन, **शतारेन्द्र-** विवेक आकांशा जैन, **शतार प्रत्येन्द्र-** एम.सी कमलेश चौधरी, **आनतेन्द्र-** नरेन्द्र लक्ष्मी जैन, **प्राणतेन्द्र-** आनंद ममता जैन, **आरनेन्द्र-** सुभाष सुधा जैन जबलपुर, **अच्युतेन्द्र-** प्रणय आरती पाटोदी आदि ने सौभाग्य प्राप्त किया।

1008 श्री शान्तिनाथ महामंडल विधान सम्पन्न

इन्दौर- श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मंदिर विद्यासागर नगर इन्दौर में दिनांक 06 सितम्बर से 21 सितम्बर 2021 तक श्री 1008 शांन्तिनाथ महामंडल विधान एवं विश्वशांति महायज्ञ पण्डित श्री रतनलाल जी के निर्देशन में तथा प्रतिष्ठाचार्य ब्र. जिनेश मलैया के प्रतिष्ठाचार्यत्व में सम्पन्न हुआ। **ध्वजारोहण** करने का सौभाग्य आर.के. मैना जैन, कलश स्थापित एवं विधानकर्ता- मनोज कल्पना बाकलीवाल, राजीव कविता सेठी, आजाद मणि मोदी, धमेन्द्र शिखा जैन (सी.ए), हर्ष तृप्ती जैन (कॉटन), भरत रितु जैन निशांत परिधी जैन, दिनेश अर्पिता बम्बई, एम.सी. प्रभा जैन को प्राप्त हुआ। **विधान के मुख्य पात्र-** वीरेन्द्र सुनीता जैन, धमेन्द्र संध्या जैन सागर, डॉ. प्रेमचंद कमला कुमारी, अक्षय लीना कासलीवाल, मनोज सुनीता जैन, प्रदीप प्रगति जैन टड़ा वाले, पीयूष दीपिका जैन, अशोक जैन जयपुर, अजित पाटनी, स्वदेशीलाल जैन बीना, अवधेश अनिता जैन, प्रवीण अभिलाषा जैन, इंजी अजित मीना जैन, विनोद मंजू जैन पथरिया वाले, सुरेश अनीता जैन, विमल मीना गंगवाल, सूरजमतल पदमा जैन, अनुराग रूचि जैन सागर, निलेश नीलु जैन, कमलेश सीमा जैन, प्रफुल्ल, डॉ. संदीप अनिता जैन आदि को सौभाग्य प्राप्त हुआ।

धूपदशमी पर सचित्र झाँकी भक्ति का प्रभाव कोरोना एक अभिशाप

इन्दौर- श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मंदिर विद्यासागर नगर इन्दौर में दिनांक 06 सितम्बर 2021 धूपदशमी गुरुवार को **भक्ति का प्रभाव कोरोना एक अभिशाप, कोरोना, होटल की रसोई घर, घर की रसोई , चिकित्सालय, भक्ति का प्रभाव, श्मशान घाट** आदि के सचित्र दृश्य प्रस्तुत किये गये । पण्डित श्री रतनलाल जी के निर्देशन में जिसकी **अध्यक्षता-** विश्व हिन्दु परिषद के अंतराष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री हुकुमचन्द्र जी सांवला तथा **मुख्य अतिथि-** शंकर लालवानी, श्री रमेश मेंदोला (विधायक क्षेत्र क्र.2), महेश जैन (पुलिस अधीक्षक इंदौर), अजय जैन (उ.प्र. पुलिस अधीक्षक इंदौर), श्रीमती सरोज चौहान (पार्षद) । **सहयोगी एवं उद्घाटनकर्ता-** गजेन्द्र जैन (गिन्नी ग्रुप), मनोज बाकलीवाल, राजीव सेठी, भरत जैन (शांति निकेल), धमेन्द्र जैन मंडावरा, धमेन्द्र जैन (सी.ए. जयपुर), आजाद मोदी (मोदी प्रिंटर्स), डी.के. जैन (पूर्व डी.एस.पी), धमेन्द्र जैन (सागर), अक्षय कासलीवाल, वीरेन्द्र जैन, डॉ. अरविन्द जैन, पण्डित प्रदीप जैन (टड़ा), गौरव जैन रहे।

जैन विद्या संस्कृति प्रश्न मंच-2021

गुलेल, मुमुक्षू, अभिषेक, गुलगुला महाराज, सत्यमेव जयते,साक्षी, नये जूते, जय जिनेन्द्र, भारती, क्षमा, शरद पूर्णिमा कहानी संग्रह (ऐलक सिद्धांतसागरजी द्वारा रचित) से पुस्तकों से लिये गये हैं।

01. सवाल दो लाख का, कहानी का मुख्य पात्र कौन है ?
02. कहानी सवा दो लाख की कहानी में मुख्य पात्र अरविन्द से दो लाख रूपये किसने ठगे ?
03. नटकन्या किस कहानी संग्रह की कहानी है ?
04. नटकन्या कहानी का पात्र श्रेष्ठी अर्हतदास किस नगर का निवासी था ?
05. अर्हतदास के पुत्र का क्या नाम था ?
06. नटकन्या कहानी में जिनदत्त ने वैराग्य क्यों धारण किया ?
07. अंजना का पावन कहानी किस शहर की है ?
08. अंजना का पवन कहानी में वह कौन सा पात्र हैं जिसने पवन को रूपये देने से मना कर दिया ?
09. अंजना के पवन कहानी में अंजना के दो पुत्र कौन-कौन से थे ?
10. भारती कहानी में भारती की बात सुनकर किसने अपनी गलती स्वीकार की ?
11. भारती कहानी से क्या शिक्षा मिलती है ?
12. अफसोस कहानी में नायक का नाम क्या है ?
13. अफसोस कहानी की नायिका कौन है ?
14. अफसोस कहानी में ऐलक श्री ने सुगंध दोषी को कहां जाने की प्रेरणा दी ?
15. मुरारी की मुराद कहानी में मनोहरलाल के बड़े भाई का क्या नाम था ?
16. मन्नु का घोड़ा कहानी का मुख्य पात्र कौन है ?
17. मन्नु का घोड़ा कहानी से कौन से व्यसन त्याग ने की प्रेरणा मिलती है ?
18. वंशीलाल ने घोड़ा वापिस करने के कितने रूपये मांगे ?
19. स्मृति कहानी के केन्द्र में कौन सा विश्वास है ?
20. स्मृति कहानी में स्मृति के पिता का नाम क्या था ?
21. स्मृति कहानी में स्मृति के पिता की मृत्यु किस प्राणी के दंश से हुई ?
22. अभागा छगन ने कहानी का मुख्य पात्र छगनलाल की हत्या किसने की ?
23. अमित सोनी ने छगनलाल की हत्या किस उद्देश्य से ही ?
24. अमित सोनी ने ओझा की सलाह से किस का खून पिया ?
25. हाथी कहानी में महन्त का नाम क्या था ?
26. हाथी कहानी में गठाधीश का नाम क्या था ?
27. हाथी कहानी में पैसे के लालच में किसने षडयंत्र रचा ?
28. बिलखती गंगा कहानी में गंगा किस प्रथा से पीड़ित हुई ?
29. बिलखती गंगा कहानी में मोतीलाल ने समाज से कौन सी प्रथाबन्द करायी ?
30. बिलखती गंगा कहानी में हरिप्रसाद ने मृत्यु भोज का समर्थन क्यों किया ?
31. ये रूप न बदला जाये कहानी में ब्रह्मगुलाल ने किस पशु का रूप धारण किया था ?
32. ये रूप न बदला जाये कहानी में ब्रह्मगुलाल ने कौन सा रूप नहीं बदला ?

33. गजल कहानी धार जिले के किस गाव की है ?
34. गजल कहानी में नायिका का नाम क्या है ?
35. गजल कहानी में किसकी कहानी सुनकर महेश दीवाना हो गया था ?
36. चन्दा की चन्द्रिका कहानी में क्षुल्लक जी का क्या नाम था ?
37. चन्दा की चन्द्रिका कहानी कौन से तीर्थ से जुड़ी हुई हैं ?
38. चन्दा की चन्द्रिका कहानी में क्षुल्लक जी ने कौन सा विश्वास मिटाने की कोशिश की ?
39. कहानी चन्दा मामा कहानी में चन्दा मामा किसका साला था ?
40. चन्दा मामा कहानी का मुख्य पात्र कौन है ?
41. चन्दा मामा कहानी किस प्रथा के विरोध में लिखी गई ?
42. फटा पजामा कहानी का मुख्य पात्र कौन है ?
43. फटा पजामा कहानी में कैलाश बजाज किसका लड़का था ?
44. फटा पजामा कहानी में कैलाश ने पजामा छोड़कर क्या नहीं पहना ?
45. धन्नों की भूमिका कहानी में भूमिका की सांस का नाम क्या था ?
46. धन्नों की भूमिका कहानी में भूमिका के ससुर का नाम क्या था ?
47. अभिषेक कहानी में किस आचार्य की भूमिका मुख्य मानी गई है ?
48. अभिषेक कहानी में किस पंडित का षडयंत्र रहा ?
49. अभिषेक कहानी में कौन से अभिषेक नहीं करने का नवयुवकों ने नारा लगाया।
50. अभिषेक कहानी तीर्थ पर केन्द्रित है ?
51. मृत्युयोग कहानी की नायिका कोन है ?
52. मृत्युयोग कहानी में प्राचार्य आर.के. त्रिवेदी जी ने किस विश्वास से बचने की शिक्षा दी ?
53. अलका कहानी कौन से कस्बे की है ?
54. नीलम ने पिन्टू से अलका दीदी को छुआने के लिये दिया ?
55. दूध के पैसे कहानी में कुशल का जन्मदिन कौन सी जुलाई को आता है ?
56. दूध के पैसे कहानी में कुशल की माँ का नाम क्या है ?
57. श्रीनाथ कहानी में श्रीनाथ को किस नदी किनारे बाबा लोग ले गये ?
58. श्रीनाथ कहानी में बाबा लोग श्रीनाथ के पास कौन से पर्व पर आये ?
59. निश्छल विनोद कहानी में विनोद की पत्नी का क्या नाम था ?
60. श्रीनाथ कहानी में किस देवता के पूजन का ढोंग रचा गया ?
61. श्रीनाथ कहानी में श्रीनाथ की पत्नी का क्या नाम है ?
62. मझले भैया कहानी में मुख्य पात्र का नाम क्या है ?
63. किसकी चाहत में शकुन राजकुमार को लेकर घूम रही थी ?
64. मझले भैया कहानी में राजकुमार को किसने सही दिशा दी ?
65. मझले भैया कहानी में किन तीर्थकर का नाम आया है ?
66. दादा आते हैं कहानी किस शहर की घटना है ?
67. दादा आते हैं कहानी में मुलायम ने किस विश्वास को मिटाने की कोशिश की ?
68. फकीर की फिक्र कहानी में जागीदार नबाब का क्या नाम था ?

69. फकीर की फिक्र कहानी में अज्दुल्ला किस रियासत का नबाब था ?
70. फकीर की फिक्र कहानी में अज्दुल्ला कासिम ने जश्न क्यों मनाया ?
71. घड़ी कहानी की घटना जून के कौन सी तारीख की है ?
72. कमल ने बाबा को घड़ी देने से मना क्यों किया ?
73. घड़ी कहानी में कमल ने किसको अपनी बीती घटना सुनाई ?
74. माँ की चूड़ी कहानी में नरेन्द्र की माँ का नाम क्या था ?
75. माँ की चूड़ी कहानी में नरेन्द्र ने सोने की कौन सी चीज वापिस मांगी थी ?
76. माँ की चूड़ी कहानी में ओझा पंडा का नाम क्या था ?
77. हरिचरण ने सोने की चूड़ी कहानी में क्या मारने की धमकी दी थी ?
78. गुलगुला महाराज कहानी संग्रह का सम्पादन किसने किया ?
79. क्रिकेट का जुनून कहानी में आशीष जैसवाल ने देवी को क्या चढ़ाया ?
80. क्रिकेट के जुनून कहानी में भ्रमित दो युवकों के नाम क्या है ?
81. क्रिकेट के जुनून कहानी में कौन से अखबार में संपादकीय टिप्पणी छपी थी ?
82. क्या टाईम हुआ कहानी का मुख्य पात्र कौन है ?
83. क्या टाईम हुआ कहानी में सुमन कौन सी कम्पनी का मेनेजर बताया गया है ?
84. अवतार बदल गया कहानी में पूरनसींग के बेटे का नाम क्या था ?
85. अवतार बदल गया कहानी में लल्लू को किसने बिगाड़ा था ?
86. टोंक की बेगम कहानी में इफ्तखार ने किसको उल्लू बनाया था ?
87. टोंक की बेगम कहानी में नुसरत के पिता का नाम क्या था ?
88. चूक कहानी नर्मदा नदी के किनारे का वर्णन किया गया है ?
89. चूक कहानी नर्मदा नदी के किस शहर के घाट की है ?
90. चूक कहानी में महेन्द्र किस लत के कारण मृत्यु को प्राप्त हुआ ?
91. पारस दादा की नसेनी कहानी की घटना किस जिले की है ?
92. पारस दादा की नसेनी कहानी में पारस दादा के मित्र का नाम क्या था ?
93. राबड़ी की रबड़ी कहानी दिसम्बर के कौन सी तारीख की है ?
94. राबड़ी की रबड़ी कहानी में सुरेन्द्र की पत्नी का नाम क्या था ?
95. राम-राम का राज कहानी में घटना किस गांव की है ?
96. राम-राम का राज कहानी में किसकी अकलमन्दी की चर्चा होती थी ?
97. दिवाली बिगड़ गई कहानी में साइकिल लेकर घर से कोन निकला था ?
98. दिवाली बिगड़ गई कहानी में वीरेन्द्र की शादी किसके साथ हुई ?
99. गुलगुला महाराज कहानी में सुनील के बेटे का नाम क्या था ?
100. मुरारी की मुराद कहानी किस नदी के तट की है ?

इन प्रश्नों के उत्तर आप प्लेन कागज पर लिखकर दिनांक हर माह 29 तारीख तक डाक द्वारा अथवा व्हाट्सअप नम्बर 6232967108 पर भेज सकते है। यह प्रश्न प्रत्येक माह 100-100 रहेंगें जिसका समापन दिसम्बर माह में किया जायेंगा।

जिसमें प्रथम पुरुस्कार 1 लाख रुपये, द्वितीय पुरुस्कार 51000/- रुपये, तृतीय पुरुस्कार 31000/- रुपये तथा सभी को सांत्वना पुरुस्कार दिया जावेगा। अत: आप भी उत्तर भरकर ज्ञानार्जक कर पुण्य लाभ लें।

वर्ग पहेली 264

1	2		3	■	4	5		6
7		■	8	9			■	
	■	10			■	11	12	■
13	14	■	■	15	16	■	17	18
19		20	■	■		■	21	
	■		■	■	22	23		■
■	24	■	25		■	26	■	27
28				■	29		30	
31		■	32			■	33	

बाये से दाये

1. प.पू.आचार्य विद्यासागर जी की जन्मस्थली -4
4. दीपों का पर्व -4
7. शरीर में होने वाला का दाग अथवा बाबासीर का फोड़ा -2
8. ग्राम पंचायतों का समूह बताने वाला नगर -4
10. लज्जा, लाज -3
11. परन्तु, पंख -2
13. सादगी का भाव, प्रदर्शन से रहित -2
15. मादक पदार्थ की लत -2
17. पक्षी -2
19. वह पात्र जिसमें फूल या वृक्ष लगाये जाते हो -3
21. एक पक्षी जिसका प्रयोग युद्ध में किया जाता है -2
22. लक्ष्मी का एक नाम -3
25. हृदय, दिल -2
28. मुखिया, डाकुओं का मुखिया -4
29. रसना, या मीठा पेय -4
31. मुसलमानों की एक यात्रा -2
32. गौरव, महिमा -3
33. थोड़ा, न्यून -2

ऊपर से नीचे

1. आचार्य विद्यासागर जी के लघुभ्राता मुनि शिष्य -6
2. स्थिति, आलाद -2
3. एक लाल रंग की सब्जी जिसमें ए विटामिन हो -3
4. दीपक -2
5. वनस्पति, वृक्ष -3
6. बालों में होने वाला कीड़ा -2
9. नमस्कार करने का भाव, या झुकने का भाव -3
12. रक्षा करने वाला, रक्षक -4
14. कीमत, मूल्य -2
16. बकरी का बच्चा -3
18. हाथी या छत्तीस इंच का नाप -2
20. फायदा, धन प्राप्ति -2
23. घड़ियाल, मगर -3
24. सूर्य, अरूण, दिवाकर -3
25. सर्प, नाग का नाम -3
26. हस्त या हाथ -2
27. इंद्रभूति गणधर का वंश, महावीर भगवान के प्रमुख गणधर -3
28. साथ, युगपत -2
30. बगुला -2

वर्ग पहेली 263 का हल

1 क्ष	2 मा	■	3 मा	र्द	4 व	■	5 तप	6
7 त्र	स	■	घ	■	न	■	8 प	र
■	■	9 त्या	■	10 चौ	■	11 म	न	वा
12 मा	13 र	ग	■	14 रा	15 क	■	■	ना
16 न	स	■	17 म	हा	वी	18 र	■	■
■	19 ना	20 र	द	■	■	21 त	न	22 य
23 आ	■	क्षा	■	24 सा	ज	न	■	म
र्ज	■	■	25 दा	म	■	26 गि	द्ध	■
27 व	र	दा	न	■	28 ह	रि	■	29 नः

....सदस्यता क्र. ....

पता : ....

....

समस्या पूर्ति प्रतियोगिता

चाँद का नजारा

नियम

१. आपको चार से छः पंक्तियों की एक छंदबद्ध या छंदमुक्त तुकांत कविता लिखनी है, जिसके अंत में उपरोक्त शब्द आने चाहिये।
२. समस्या पूर्ति पोस्टकार्ड पर ही लिखकर भेजें।
३. पुरस्कार राशि : प्रथम पुरस्कार १५१ रु., द्वितीय ५१ रु., तृतीय २५ रु.
४. पोस्टकार्ड भेजने की अंतिम तिथि माह की १५ तारीख है।

पंचकल्याणक विधिविधान एवं अन्य धार्मिक कार्यक्रमों हेतु सम्पर्क करें

जैन विद्या संस्कृति प्रश्न मंच-इसे संभालकर रखें दिसम्बर माह में एक साथ चिपकाकर भेजना रहेंगे

कूपन नं-8

श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मंदिर, विद्यासागर नगर इन्दौर

सम्पर्क करें - 0731-4003506, 8989505108, 8989121008

पंचकल्याण विधि-विधान सामग्री एवं हाथी स्वर्ण रथ आदि एक ही स्थान पर उपलब्ध

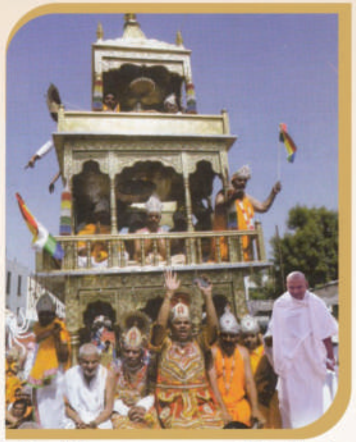

श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मंदिर में गिफ्ट आयटम उपलब्ध हैं जिनमें घड़ी, शील्ड, पेन, बैग, बेंच, आदि सामग्री तथा पंचकल्याणक, पूजन, विधान, शिलान्यास, गृह प्रवेश, गृह शुद्धि, शिविर आदि की सम्पूर्ण सामग्री एक साथ उपलब्ध रहती है। जैसे स्वर्ण शिला, रजत, ताम्रशिला, कील, कलश, पंचरत्न, स्वस्तिक, हार, मुकुट, कंठी, स्वागत पट्टे, पचरंगी झंडे, अष्ट मंगल द्रव्य, अष्ट प्रातिहार्य, पंचमेरू, पांडुक शिला, कलश, मंगल कलश, शिखर कलश, ध्वज दंड, दीपक बाक्स, दीपक चंदोवा, पलासना, छत्र, चमर, भामंडल, सिंहासन, वंदनवार, धोती-दुपट्टा, सभी विधानों के मांडने धातु में एवं फ्लेक्स में उपलब्ध है।

विभिन्न आकर्षक डिजाइनों में स्वर्ण कलश, रजत कलश (ओरिजनल चाँदी), रत्न कलश आदि जो एक्रेलिक बॉक्स स्टैण्ड के साथ उपलब्ध हैं। जो काले नहीं पड़ेंगे एवं तीन का सेट होने के बावजूद बिखरेंगे नहीं। चातुर्मास कलश का समय पर आर्डर करने पर बॉक्स के नीचे साधु के नाम, कौन सा चातुर्मास, स्थान, आयोजक आदि का नाम भी लिखवाया जा सकता है। तथा इन्दौर से सभी जगह के लिए बस सुविधा उपलब्ध है। जिसके द्वारा आप अपना आर्डर मंगवा सकते हैं।

संस्कार सागर पढ़िए सिर्फ एक Click पर www.sanskarsagar.org

सम्पर्क करें - 0731-4003506, 8989505108, 8989121008

प्रिंटिंग दिनांक 30/09/2021, पोस्टिंग दिनांक : 03/10/2021